MY CHURCH AND OTHERS

BY MUELLER

मेरी कलीसिया और दूसरों की कलीसियाएँ

लेखक मुल्लर

'MERY KALISIYA OAR DUSRANKI KALISIYAEN'

(Hindi)

Copy right © 1926 by **John Theodore Mueller, USA**

First Hindi Edition 2006

1,000 Copies

This edition is issued by

Rev. David Koenig, **CLC (USA)**
Missionary to India

All rights reserved

Published by

BELC

Translated by

Rev. Deepak Immanuel, **(B.Th., M. Div.)**

For and on behalf of BELC

(Printed in India)

मेरी कलीसिया और दूसरों की कलीसियाएँ

(इस पुस्तक में दूसरों कलीसियाओं की शिक्षाओं से इवानजेलिकल लूथरन चर्च की शिक्षाओं का तुलना किया गया है।)

अंग्रेज़ी भाषा से हिन्दी भाषा में अनुवादित

अनुवादक :
रेभ. दीपक ईम्मानुएल, (बि.टिएच्., एम.डिभ्.)

My Church and Others

A SUMMARY OF THE
TEACHINGS OF THE

Evangelical Lutheran Church

AS DISTINGUISHED
FROM THOSE OF

Other Denominations

By John Mueller

रोमियों 16 : 17, अब हे भाइयों मैं तुमसे बिनती करता हूँ कि उस शिक्षा के विपरीत जो तुमने पाई है, उसमें जो लोग फूट और रुकावट डालते हैं, उन्हें ताड़ लिया करो और उनसे दूर रहो।

Now I beseech you, brethren, mark them which cause divisions and offences contrary to the doctrine which ye have learned : and avoid them. — Rom. 16 : 17.

विषय सूची

अ. सं.			पृष्ठ सं.
	भूमिका (Introduction)	....	5
	सिद्धान्तों और शिक्षाएँ (Doctrine)	....	7
I.	पवित्रशास्त्र के बारे में (Of the Holy Scriptures)	....	7
II.	परमेश्वर के प्रति स्वाभाविक ज्ञान के बारे में (Of the Natural Knowledge of God)	....	10
III.	परमेश्वर के बारे में (Of God)	....	11
IV.	स्वर्गदूतों के बारे में (Of the Angels)	....	13
V.	सृष्टि के बारे में (Of Creation)	....	14
VI.	मनुष्य के बारे में, जो परमेश्वर के स्वरूप है (Of Man and the Image of God)	....	15
VII.	पाप के बारे में (Of Sin)	....	17
VIII.	अनुग्रहमय चुनाव अर्थात् पहले से ठहराया जाने के बारे में (Of the Election of Grace or Predestination)	....	21
IX.	मसीह, परमेश्वर के पुत्र के बारे में (Of Christ the son of God)	....	24
X.	यीशु मसीह की पदवी और उनकी सेवकाई (Of Christ's Work and Office)	....	27
XI.	बचाया जाने के बारे में (Of Conversion)	....	32
XII.	प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास के बारे में (Of Faith in Christ)	....	35
XIII.	धर्मी ठहराया जाने के बारे में (Of Justification)	....	36

अ. सं.		पृष्ठ सं.
XIV.	मन फिराब के बारे में (Of Repentance)	 39
XV.	पवित्रीकरण और भले कामों के बारे में (Of Sanctification and Good Works)	 41
XVI.	प्रार्थना के बारे में (Of Prayer)	 43
XVII.	अनुग्रह की आधार के बारे में (Of means of grace)	 45
XVIII.	व्यवस्था और सुसमाचार के बारे में (Of the Law & Gospel)	 47
XIX.	पवित्र संस्कारों के बारे में (Of the Sacraments)	 49
XX.	पवित्र बपतिस्मा के बारे में (Of Holy Baptism)	 51
XXI.	पवित्र प्रभु भोज की संस्कारों के बारे में (Of the Sacrament of the Altar or the Lord's Supper)	 54
XXII.	कलीसिया के बारे में (Of the Church)	 58
XXIII.	सेवकाई के बारे में (Of the Ministry)	 63
XXIV.	मसीह बिरोधी के बारे में (Of the Antichrist)	 67
XXV.	कलीसिया तथा राष्ट्र के बारे में (Of the Church and State)	70
XXVI.	विवाह के बारे में (Of Marriage)	 72
XXVII.	मृतोंकों की पुनरुत्थान के बारे में (Of the Resurrection of the Dead)	 76
XXVIII.	न्याय के बारे में (Of the Judgement)	 77
XXIX.	अनन्त जीवन और अनन्त विनाश के बारे में (Of Eternal life and Eternal damnation)	 79

~~~~~~~
~~~~~~~

भूमिका

सच्चा और जीवित परमेश्वर से तथा उनके शक्तिशाली एवं सामर्थी वचन पवित्र बाइबल से प्रेम करनेवालों मेरे प्रीय पाठकों, आप सभी को हमारे उद्धारकर्त्ता प्रभु यीशु मसीह के नाम में हार्धिक अभिननंदन और शुभ कामनाएँ देता हूँ। **भजन संहिता 1 : 3**, *क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो दुष्टों की सम्मति पर नहीं चलता, न पापियों के मार्ग में खड़ा होता और न ठठ्ठा करने वालों की बैठक में बैठता है। परन्तु वह तो यहोवा की व्यवस्था से आनन्दित होता और उसकी व्यवस्था पर रात-दिन मनन करता रहता है। वह उस वृक्ष के समान है जो जल-धाराओं के किनारे लगाया गया है, और अपनी ऋतु में फलता है, और जिसके पत्ते कभी मुर्झाते नहीं; इसलिए जो कुछ वह मनुष्य करता है वह उसमें सफल होता है।*

प्रीय मित्रों, इस वचन के अनुसार आप धन्य है। क्योंकि आप परमेश्वर की व्यवस्था से प्रसन्न रहते हैं। हमारे परमेश्वर चाहता है कि हर मनुष्य उनकी व्यवस्था से प्रसन्न रहे एवं उनके व्यवस्था पर दिन और रात ध्यान करें, फल स्वरूप सामर्थी वचन के द्वारा सच्चा और जीवित परमेश्वर पर तथा उनकी एकलौता पुत्र हमारे मुक्ति दात्ता प्रभु यीशु पर विश्वास करके अनन्त छुट्कारा प्राप्त करे तथा नित्य जीवन का अधिकारी हो सके। **यूहन्ना 8 : 32**, *और तुम सत्य को जानोगे और सत्य तुमको स्वतंत्र करेगा।* **यूहन्ना 3 : 16**, *क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, कि जो कोई उस पर विश्वास करें वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।*

अन्य पक्ष में, शैतान परमेश्वर और उनकी वचन के खिलाप एवं विपरीत चाहता है। वह चाहता है कि हर एक मनुष्य परमेश्वर और उनकी वचन की सचाई से दूर रहे तथा हमेशा के लिए उसका का झुठी और गलत चालों में फस कर उसका वंधन में रहे और अन्त में अनन्त जीवन के बदले अनन्त मृत्यु का भागि हो जाए। इस अभिप्राय में शैतान शुरू से मनुष्य को अपनी गलत और झुठी चालों में फसा कर अनन्त बिनाश कि ओर ले चले जाता है। आइए पवित्र शास्त्र बाइबल शैतान का चलों के बारे में क्या बताती है देखेंगे– (A) शैतान झुठा है और झुठ का पिता है। (**यूहन्ना 8 : 44**) (B) शैतान अपनी झुठी और गलत शिक्षाओं के द्वारा आक्रमण करता है और मनुष्य को अपनी माया जाल में फसाकर अनंत बिनाश जो नरक कहलाता है; उसकी और खिच ले जाता है। (**1 पतरस 5 : 8, इफिसियों 6 : 11**) (C) शैतान लोगों की आंखों को अंधी कर रखा है ता कि मसीह के तेजोमय सुसमाचार का प्रकाश उनपर न चम के (**2 कुरिन्थियों 4 : 4, यशायाह 42 : 18-20**) (D) शैतान पहला मनुष्य आदम और हव्वा को अपनी गलत और झुठी चाल रुपी जाल में फसाकर परमेश्वर के विरुध पाप करवाया। (उत्पत्ति अध्याय तीन) (E) शैतान परमेश्वर के जन इस्राएल लोगों को अपनी गलत शिक्षा में

फसाकर एवं बेहकाकर रखा था। इसलिए वे परमेशवर का आज्ञाकारी बन नहीं सके। **(यशायाह 1 : 2-3, 29 : 13; 42 : 18-20)** (F) परमेश्वर की सेवकों को भी शैतान अंधा कर रखा है। **(यशायाह 42 : 18-20)** (G) प्रभु यीशु मसीह के साथ रहनेवाले उनकी शिष्यों ने भी शैतान का गलत शिक्षा में ग्रस्थ थे। **(यूहन्ना 20 : 9, लूका 24 : 11, 24 : 16)** (H) नया नियम के प्रारम्भिक कलीसिया भी शैतान का फान्द रुपि गलत शिक्षा में फस गयी थी। **(गलतियों 1 : 6-9; 2 कुरिन्थियों 2 : 17, 4 : 2; 1 पतरस 2 : 3; 2 पतरस 2 : 1 और 1 तीमुथियुस 2 : 2)** (I) यहूदियों, शास्त्रियों, फरीसियों और महायाजक ने भी शैतान का गलत शिक्षाओं से धोका खाकर अपने उद्धार कर्ता प्रभु यीशु मसीह को क्रूस पर चढ़ाकर, अभी तक उनके राह देखते हैं की वह उनको छुड़ाने कब आयेगा। वे अंधे हैं ओर शैतान की वंधन में है। (J) हमारे प्रभु यीशु मसीह ने आनेवाले दिनों में शैतान का गलत शिक्षाओं के बारे में भविष्यवाणी कहा है। **(मत्ती : 24 : 4-5, 24 : 11)**

आजकल की मानव समाज, शैतान का वंधन में है। अनेक कलीसियाएँ शैतान का गलत और झुठी शिक्षाओं से ग्रसथ हो कर अनन्त विनाश कि ओर चले जाते हैं। प्रिय मित्र, आप धन्य है। परमेश्वर आप से प्रेम करता है। आपका हात में "मेरी कलीसिया और दूसरों की कलीसियाएँ नामक अध्ययन-निर्धेशक पुस्तक (Study guide) अचानक नहीं आया है। यह परमेश्वर की इच्छा है कि आप इस पुस्तक के द्वारा परमेश्वर के वचन का सत्य को प्राप्त कर सके एवं अनन्त जीवन का अधिकारी बन सकें। कृपया प्रार्थना के साथ इस पुस्तक को पढ़िए। पढ़ते समय बाइबल साथ में रखें ता कि आप वचनों का अध्ययन ध्यान से कर सकेंगे। यह पुस्तक अंग्रेजी में (My Church and others) पुस्तक का हिन्दी में अनुवाद है। मैं प्रभु का सेवक (John Theodore Mueller) के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ। जिस ने इस पुस्तक को लिखा है। वे अमेरिका (Concordia Theological Seminary, St. Luis, Missouri) के (Professor of Systematic Theology) रह चुके हैं। वे परमेश्वर की वचन से प्रेम रखने वाले एक प्रसिद्ध और लोकप्रिय लेखक थे। इस पुस्तक का प्रकाशन 1926 में हुआ था। लोगों ने बहुत ही अग्रह के साथ इसे ग्रहण किया। इसके पश्चात् लगातर छेः संस्करण प्रकाश हो चुके हैं। फिर भी इस पुस्तक का आदर और चहत लोगों के बीच पढ़ती जाती है। इसे हिन्दी भाषा में अनुवाद करने को प्रभु ने मुझे मौका दिया है। इस कार्य के लिए में प्रभु में गर्भ करता हूँ ओर परमेश्वर का लाखों धन्यवाद करता हूँ। मेरे देश के निवासी और जो कोई भी हिन्दी पढ़नेवाले दुनिया के कहाँ भी हो इसे पढ़कर मेरे परमेश्वर पर विश्वास करें ओर अनन्त जीवन का अधिकारी बन जाये। इस उद्देश्य से प्रार्थना के साथ मुझे बचानेवाले मेरे उद्धारकर्त्ता प्रभु यीशु मसीह के चरणों में इस पुस्तक को समर्पण करता हूँ। परमेश्वर आपको आशिष दे। मसीह की सेवा में ..... अनुवादक 17.11.2006

✞

सिद्धान्तों और शिक्षाएँ
(DOCTRINE)

I. पवित्रशास्त्र के बारे में
[OF THE HOLY SCRIPTURES]

हम निम्नलिखत शिक्षाओं का विश्वास करते है जो पवित्र शास्त्र के अनुसार है।

(A) दुनिया की दूसरों शास्त्रों की तुलना में पवित्रशास्त्र संपूर्ण अलग है। क्योंकि यह शास्त्र परमेश्वर के वचन है। कारण इसके लेखकों ने न तो अपने इच्छा से न अपने विचार से, परन्तु पवित्र आत्मा की प्रेरणा से लिखे थे। (B) पवित्रशास्त्र बाइबल परमेश्वर के वचन होने के कारण इसमें कोई भी भूल या त्रृटि नहीं है। बरन् पवित्रशास्त्र के हर एक कथन संपूर्ण रूप से सत्य है। (C) पवित्र बाइबल समस्त शिक्षाओं का मूल धारा ओर श्रोत है, इसलिए सारे कलीसियाँ की शिक्षाओं का इस शास्त्र से ही लिया जाना चाहिए। हमें बाइबल की आदर तथा हमेशा इसका अध्ययन करना चाहिए। पवित्रशास्त्र बाइबल विश्वास और जीवन के लिए एक मात्र मार्ग दर्शक है। बाइबल हमें वह सारे बातें बताही है जो हमारे अनन्त उद्धार के लिए जरूरी है।

*(a) **2 तीमुथियुस 3 : 16-17**, सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचना गया है और शिक्षा, ताड़ना, सुधार और धार्मिकता की शिक्षा के लिए उपयोगी है, जिससे कि परमेश्वर का भक्त प्रत्येक भले कार्य के लिए कुशल और तत्पर हो जाए। **2 पतरस 1 : 21**, क्योंकि कोई भी भविष्यद्वाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई, परन्तु लोग पवित्र आत्मा की प्रेरणा द्वारा परमेश्वर की ओर से बोलते थे। **यूहन्ना 17 : 8**, क्योंकि वे वचन जो तू ने मुझे दिए, मैंने उन तक पहुँचा दिए हैं। **1 कुरिन्थियों 2 : 13**, उन्हीं को हम मनुष्यों के ज्ञान के सिखाए हुए शब्दों में नहीं, परन्तु आत्मा के द्वारा सिखाए हुए शब्दों में, अर्थात् आत्मिक विचारों को आत्मिक शब्दों से मिलाकर व्यक्त करते हैं।*

*(b) **यूहन्ना 10 : 35**, और पवित्रशास्त्र का खण्डन नहीं किया जा सकता। **यूहन्ना 17 : 17**, सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर-तेरा वचन सत्य है।*

(c) ***इफिसियों 2 : 20****, और प्रेरितों तथा भविष्यद्वक्ताओं की नींव पर, जिसके कोने का पत्थर मसीह यीशु स्वयं है, बनाए गए हो।* ***1 पतरस 4 : 11****, जो भी उपदेश दे, वह ऐसे दे मानो परमेश्वर ही का वचन देता हो।* ***यूहन्ना 5 : 39****, तुम पवित्रशास्त्रों में ढूँढ़ते हो क्योंकि तुम सोचते हो कि उनमें अनन्त जीवन मिलता है, और ये वे ही हैं जो मेरे विषय में साक्षी देते हैं।*

हम निम्नलिखित गलत शिक्षाओं का इनकार और खण्डन करते हैं जो पवित्र शास्त्र के अनुसार नहीं है।

(**ध्यान दें**– आजकल बडेसे बड़े कलीसिया के लोग भी पवित्रशास्त्र की शिक्षाओंका आदर नहीं करते, वे क्या विश्वास करते उसे समझ ना भी मुसकील है।) क्योंकि उनका विश्वास पवित्रशास्त्र के उपर आधारित नहीं है।

1. **रोमन कत्तोलिक चर्च** (Roman Catholic Church) तथा **ईस्टर्न आर्तोडक्स चर्च** (Eastern Orthodox Church) के लोगों का विश्वास पवित्रशास्त्र के उपर आधारित नहीं है, परन्तु पूर्वजों की परंपराएँ तथा रित्ति रिवाज पर आधारित है। व्यवस्थाविवरण 4 : 2; लूका 16 : 27; यूहन्ना 8 : 31-32; मरकुस 7 : 13; कुलुस्सियों 2 : 8.

2. कुछ कलीसियाएँ और ऐसे भी है जीनका विश्वास पवित्र शास्त्र पर नहीं है, परन्तु नया दिव्य प्रकाशन (new revelation) पर है। मार्डन सेक्टेरियन चर्चस (Modern Sectarian Churches), सालेवेशन आर्मी (Salvation Army), मर्मन्स (Mormons), क्वाकर्स (Quakers), सेकर्स (Shakers), चर्चस आप द न्यू जेरुशलम (Churches of the new Jerusalem), क्रिस्टियन साईन्टिस्टस (Christian Scientists), क्रिस्टियन केत. (Christian Cath.), चर्च इन जैयान (Church in Zion) इत्यादि कलीसियाएँ इस श्रेणी के हैं जो नया दिव्य प्रकाशन पर ही विश्वास करते हैं। इब्रानियों 1 : 1-2; गलातियों 1 : 8; मत्ती 28 : 19-20; 2 तीमुथियुस 3 : 15-17; लूका 16 : 31.

3. कुछ कलीसियाएँ है जीनका विश्वास पवित्रशास्त्र पर तो है, परन्तु वे साथ-साथ कुछ कारण और समय के अनुसार विश्वास करते हैं। यूनिटेरियन्स (Unitarians), यूनिवर्सलिस्ट (Universalists), रेश्नलिस्टस (Rationalists), मार्डनिस्ट (Modernists) इत्यादि उस प्रकार के कलोसियाएँ है। 1 कुरिन्थियों 1 :

21; कुलुस्सियों 2 : 8; 2 कुरिन्थियों 10 : 5; 1 कुरिन्थियों 2 : 4-5, 14; 1 तीमुथियुस 6 : 20-21.

4. यूनिटेरियन्स (Unitarians), रेश्नलिस्टस (Rationalists), क्वेकर्स (Quakers), मार्डन सेक्टेरियन चर्चस (Modern Sectarian Churches) इन कलोसियाएँ विश्वास करते है कि पवित्रशास्त्र खुद तो परमेश्वर का वचन नहीं है परन्तु वे परमेश्वर का वचन को घारण करते है। मत्ती 5 : 18-19; 1 कुरिन्थियों 15 : 54.

5. यूनिटेरियन्स (Unitarians), रेश्नलिस्टस (Rationalists), स्प्रिटिस्टिस (Spiritists), चर्चस आप द न्यू जेरुशलम (Churches of the New Jerusalem) एवं मार्डन सेक्टेरियन चर्चस (Modern Sectarian Churches) विश्वास करते है कि पवित्रशास्त्र तो पवित्र आत्मा के प्रेरणा से क्या गया है, लेकिन लेखकों में त्रूटि हो सकता है। इब्रानियों 4 : 12; यूहन्न 12 : 48; गलातियों 6 : 16; नीतिवचन 30 : 6; मत्ती 4 : 4; 2 पतरस 1 : 16.

6. **रोमन कत्तोलिक चर्च** (Roman Catholic Church), **ईस्टर्न आर्तोडक्स चर्च** Eastern Orthodox Church), शेक्स (Shakes) तथा मर्मन्स (Mormons) विश्वास करते हैं कि पवित्रशास्त्र संपूर्ण नहीं है। भजन संहिता 119 : 105, 130; 2 कुरिन्थियों 4 : 3-4; यूहन्ना 5 : 39; इफिसियों 3 : 3-4; भजन संहिता 19 : 8.

7. क्वाकर्स (Quakers), केलविनिष्टिक चर्चस (Calvinistic Churches), कंग्रिगेश्नलिष्टस (Congregationalists), प्रसबैटेरियन्स (Presbyterians), मेथोडिस्टिस (Methodists), केम्पबिलिटस (Campbellites) तथा माडर्निस्टिस (Modernists) कहते है कि पवित्रशास्त्र का पापी मनुष्य को सुधार ने के लिए स्वयं की सामर्थ नहीं है। यूहन्न 6 : 63; रोमियों 1 : 16; याकूब 1 : 21; यूहन्ना 17 : 20.

8. रोमन कत्तोलिक चर्च (Roman Catholic Church) तथा ईस्टर्न आर्थोडोक्स चर्च (Eastern Orthodox Church) कहते है कि साधारण लोगों के द्वारा पवित्रशास्त्र पढा जाना नहीं चाहिएः– मत्ती 23 : 13; 1 थिस्सलुनीकियों 5 : 27; यूहन्न 5 : 39; 2 तीमुथियुस 3 : 15.

II. परमेश्वर के प्रति स्वाभाविक ज्ञान के बारे में
[OF THE NATURAL KNOWLEDGE OF GOD]

हम निम्नलिखत शिक्षाओं का विश्वास करते है जो पवित्र शास्त्र के अनुसार है।

(A) हम विश्वास करते है कि प्रत्येक मनुष्य स्वभाविक रूप से परमेश्वर को जान सकता है। क्योंकि प्रत्येक मनुष्य को परमेश्वर के प्रति स्वभाविक ज्ञान है, (B) न केवल परमेश्वर ने बनाया सृष्टि को देखकर मनुष्य परमेश्वर के प्रति स्वाभाविक ज्ञान प्राप्त करता, परन्तु परमेश्वर मनुष्य का दिमाक और दिल में भी इस ज्ञान को लिख दिया है। (C) लेकिन इस स्वाभाविक ज्ञान पापी मनुष्य का उद्धार के लिए काफी नहीं है।

*(a) **रोमियों 1 : 18-20**, परमेश्वर से सम्बन्धित ज्ञान मनुष्यों पर प्रकट है, क्योंकि परमेश्वर ने उन पर प्रकट किया है। इसलिए परमेश्वर का प्रकोप मनुष्यों की समस्त अभक्ति और अधार्मिकता पर स्वर्ग से प्रकट होता है, क्योंकि वे सत्य को अधर्म से दबाए रखते हैं। क्योंकि जगत की सृष्टि से ही परमेश्वर के अदृश्य गुण, अनन्त सामर्थ्य और परमेश्वरत्व उसकी रचना के द्वारा समझे जाकर स्पष्ट दिखाई देते हैं, इसलिए उनके पास कोई बहाना नहीं।*

*(b) **रोमियों 2 : 14-15**, फिर जब ग़ैरयहूदी जिनके पास व्यवस्था नहीं, स्वभाव ही से व्यवस्था की बातों का पालन करते हैं, तो व्यवस्था उनके पास न होने पर भी उस दिन वे अपने लिए आप ही व्यवस्था हैं– इस प्रकार वे व्यवस्था के कार्य अपने अपने हृदय में लिखा हुआ दर्शाते हैं, और उनके विवेक भी साक्षी देते हैं, और उनके विचार कभी उन्हें दोषी या कभी निर्दोष ठहराते हैं–*

*(c) **रोमियों 10 : 17**, अतः विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन के द्वारा होता है। **यूहन्ना 17 : 3**, और अनन्त जीवन यह है कि वे तुझे जो एकमात्र सच्चा परमेश्वर है और यीशु मसीह को जानें जिसे तू ने भेजा है। **प्रेरितों के काम 4 : 12**, किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं, क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया है जिसके द्वारा हम उद्धार पाएँ। इफिसियों 2 : 11-12; रोमियों 16 : 25; 1 कुरिन्थियों 1 : 18-30.*

हम निम्नलिखित गलत शिक्षाओं का इनकार और खण्डन करते हैं जो पवित्र शास्त्र के अनुसार नहीं है।

1. यूनिटेरियन्स (Unitarians) और मर्मन्स (Mormons) कहते हैं कि मनुष्य को परमेश्वर के प्रति स्वाभाविक ज्ञान नहीं है। *प्रेरितों के काम 17 : 27; भजन संहिता 94 : 9, भजन संहिता 10 : 1-3.*

2. क्वाकर्स (Quakers), आर्मीनियन्स (Arminians), यूनिटेरियन्स (Unitarians), यूनिवर्शलिष्टस (Universalists), चर्चस आप द न्यू जेरुसलेम (Churches of the New Jerusalem), सालवेशन आर्मि (Salvation Army), केल्विनिष्टिक चर्चस (Calvinistic Churches) और मार्डनिष्टस (Modernists) कहते है कि मनुष्य स्वाभाविक ज्ञान के बिना केवल सुसमाचार के प्रकाशित ज्ञान के द्वारा छुट्कारा पा सकता है। यूहन्ना 1 : 18; यूहन्ना 17 : 3.

III. परमेश्वर के बारे में [OF GOD]

हम निम्नलिखत शिक्षाओं का विश्वास करते है जो पवित्र शास्त्र के अनुसार है।

हम विश्वास करते हैं कि (A) सच्चा और जीवित परमेश्वर एक ही है। यह परमेश्वर अदृश्य, पवित्र तथा अनन्त है और अपरिमित शक्ति और बुद्धि का स्वामी है। परमेश्वर त्रिएक है, अर्थात् परमेश्वर एक होते हुए भी आपने आपको तीन व्यक्तियों में प्रकट करता है। पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा। तीन व्यक्ति, परमेश्वर में एक ही सार है और शक्ति, महिमा और हर एक गुण में एक समान है। उनमें से किसी एक व्यक्ति का इंकार या उपेक्षा करना उन सबका इंकार करना है। यह विश्वास योग्य सत्य है। (B) जितने कलीसियाएँ इस त्रिएक परमेश्वर की शिक्षा का अस्विकार करते है, वे सब के सब सच्चा मसीह कलीसियाओं में से बाहर है और उनको उद्धार पाने का कोई आशा नहीं है।

*(a) **1 कुरिन्थियों 8 : 45**, और एक को छोड़ कोई परमेश्वर नहीं। **मत्ती 28 : 19**, इसलिए जाओ और सब जातियों के लोगों को चेले बनाओ तथा उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। **यूहन्ना 10 : 30**, यीशु ने कहा मैं और पिता एक है।*

*(b) **1 यूहन्ना 2 : 23**, जो पुत्र का इनकार करता है, उसके पास पिता नहीं; जो पुत्र को मान लेता है, उसके पास पिता भी है।*

हम निम्नलिखित गलत शिक्षाओं का इनकार और खण्डन करते हैं जो पवित्र शास्त्र के अनुसार नहीं है।

1. मर्मन्स और सेवन्त डे अडवन्टिस्टिस कहते है कि परमेश्वर आत्मा नहीं परन्तु एक शक्ति है। *यूहन्ना 4 : 24; यशायाह 57 : 15.*

2. यूनिटेरियन्स एवं मर्मन्स कहते है कि परमेश्वर ही एक अनन्त व्यक्ति नहीं बरन उनके साथ साथ और भी अनेक अनन्त व्यक्तियों है। *भजन संहिता 90 : 2; रोमियों 11 : 36; यूहन्न 1 : 1–3.*

3. यूनिटेरियन्स कहते है कि आनेवाले घटनाओं के बारे में परमेश्वर को कुछ भी मालूम नहीं है। *इब्रानियों 4 : 13; भजनसंहिता 139 : 1–4.*

4. यूनिटेरियन्स, आर्मीनियन्स, मर्मनस एवं सेवन्त डे अडवन्टिस्टिस कहते है कि परमेश्वर सर्वव्यापी नहीं है। अर्थात् परमेश्वर एक समय पर हर जागे पर नहीं हो सकते है।

5. यूनिटेरियन्स, यूनिवर्शलिष्टस, चर्चस आप द न्यू जेरुशलम, क्रिस्टियन केत., क्वाकर्स, मर्मन्स, सेकर्स, सेवन्त डे अडवन्टिस्टिस, स्प्रिटिस्टस, क्रिस्टियन साईन्टिस्टस और मार्डनिष्टस विश्वास नहीं करते है कि परमेश्वर त्रिएक है। *यूहन्ना 3 : 36; यूहन्ना 5 : 23; 1 यूहन्न 5 : 12.*

6. आर्मीनियन्स, यूनिटेरियन्स, यूनिवर्शलिष्टस, चर्चस आप द न्यू जेरुसलेम, क्वाकर्स, मर्मन्स, सेकर्स, सेवन्त डे अडवन्टिस्टिस, स्प्रिटिस्टस, रसल्लिटस, क्रिस्टियन साईन्टिस्टस, मार्डनिष्टस और लाडजरी कहते है कि पुत्र परमेश्वर जो यीशु मसीह है सचमुछ परमेश्वर नहीं है। क्योंकि पिता परमेश्वर और पवित्र आत्मा परमेश्वर के जैसा यीशु मसीह में परमेश्वरत्व नहीं है। *यूहन्ना 10 : 30; यूहन्ना 14 : 9; यूहन्ना 20 : 28; रोमियों 9 : 5; 1 यूहन्ना 5 : 20; यूहन्ना 5 : 23; 1 यूहन्ना 2 : 23.*

7. आर्मीनियन्स, यूनिटेरियन्स, यूनिवर्शलिष्टस, चर्चस आप द न्यू जेरुसलेम, केम्पबेल्लिट्टस, क्वाकर्स, मर्मन्स, सेकर्स, सेवन्त डे अडवन्टिस्टिस, स्प्रिटिस्टस, क्रिस्टियन साईन्टिस्टस तथा मार्डनिष्टस कहते और मानते है कि पवित्र आत्मा परमेश्वर वास्तविक परमेशवर नहीं है। क्योंकि पवित्र आत्मा में पिता परमेश्वर एंव पुत्र परमेश्वर यीशू मसीह जैसे परमेश्वरत्व (Divine Power) नहीं है। *प्रेरितों के काम 5 : 3–4; 1 कुरिन्थियों 3 : 16; 2 कुरिन्थियों 13 : 13.*

8. ईस्टर्न आर्थोडाक्स चर्च, इर्विनजिट्टस, पूराना कत्तोलिक्स एवं मोरावियन ब्रीत्रन कहना है कि पवित्र आत्मा पिता परमेश्वर और पुत्र परमेश्वर से आया नहीं है। *यूहन्ना 15 : 26; गलातियों 4 : 6; यूहन्ना 16 : 14-15.*

IV. स्वर्ग दूतों के बारे में [OF THE ANGELS]

हम निम्नलिखत शिक्षाओं का विश्वास करते है जो पवित्र शास्त्र के अनुसार है।

(A) परमेश्वर ने दिखाई देनेवाले और न दिखाई देनेवाले सारे चीजें तथा प्राणियों को बनाई। जो दिखाई न देनेवाली जीव परमेश्वर ने बनाई, उन्हें उसने स्वर्ग दूत नाम दिया। स्वर्ग दूतों परमेश्वर के द्वारा सर्वप्रथम बनाई गये। (B) भले स्वर्ग दूतों पवित्र आत्माएँ है। परमेश्वर की सेवा और प्रसंशा करने के लिए बनाया गये है। परमेश्वर का आज्ञापालन करते हैं तथा मनुष्यों का सेवा भी करते रहते है। (C) बूरे स्वर्ग दूतों गिरे हुए दूष्ट आत्माएँ है। अनादी काल से परमेश्वर के द्वारा ताड़ लगाया हुआ दुष्ट आत्माएँ है। वे आरम्भ से परमेश्वर और मनुष्यों का दुसमन है। और हमेसा परमेश्वर का काम को बिगाड़ ना चाहते है।

*(a) **भजन संहिता 103 : 20–21**, हे यहोवा के दूतो, तुम जो बड़े पराक्रमी हो, और उसके वचन की फुकार को सुनते हो, तुम जो उसके वचन का पालन करते हो, उसको धन्य कहो। हे यहोवा की सारी सेनाओ, हे उसके सेवको, तुम जो उसकी इच्छा पूरी करते हो, उसको धन्य कहो।*

*(b) **इब्रानियों 1 : 14**, क्या वे सब, उद्धार पाने वालों की सेवा करने के लिए भेजी गई आत्माएँ नहीं? **मत्ती 25 : 31**, पर जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आएगा और सब स्वर्गदूत उसके साथ आएँगे, तो वह अपने महिमामय सिंहासन पर विराज मान होगा। **भजन संहिता 91 : 11-12**, क्योंकि वह अपने दूतों को तेरे विषय में आज्ञा देगा, कि वे तेरे सब मार्गों में तेरी रक्षा करें। वे तुझे हाथों-हाथ उठा लेंगे, ऐसा न हो कि तेरे पैर में पत्थर से ठेस लगे।*

*(c) **यहूदा 6**, और जिन स्वर्गदूतों ने अपने पद को स्थिर न रखकर अपने निज निवास को छोड़ दिया, उसने उनको अनन्त बन्धनों में जकड़ कर उस भीषण दिन के न्याय के लिए अन्धकार में रखा है। **इफिसियों 6 : 12**, हमारा संघर्ष तो*

*मांस और लहू से नहीं वरन् प्रधानों, अधिकारियों, अन्धकार की सांसारिक शक्तियों तथा दुष्टता की उन आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं। **1 पतरस 5 : 8**, संयमी और सचेत रहो। तुम्हारा शत्रु शैतान गर्जने वाले सिंह की भांति इस ताक में रहता है कि किसको फाड खाए।*

हम निम्नलिखित गलत शिक्षाओं का इनकार और खण्डन करते हैं जो पवित्र शास्त्र के अनुसार नहीं है।

1. चर्चस आप द न्यू जेरुसलेम और स्प्रिटिस्टस कहते है कि स्वर्गदूतों मरनेवालों का आत्माएँ है। *यूहन्ना 8 : 44; मत्ती 22 : 30.*

2. मर्मन्स तथा स्प्रिटिस्टस कहना है कि अच्छे स्वर्गदूतों जो अच्छा मृतोंको की आत्माएँ है जो भले से भले काम के लिए परन्तु दुष्ट आत्माएँ बुरे मृतोंकों की आत्मा है जो बुरे है। *मत्ती 25 : 41; 1 पतरस 5 : 8; यूहदा 6; 2 पतरस 2 : 4; प्रकाशित वाक्य 12 : 7-9.*

3. सेकर्स और मर्मन्स कहते हैं कि स्वर्ग दूतों का लिंग होते है। *मत्ती 22 : 30.*

4. क्रिस्टियन साईन्टिस्टस कहते है, की स्वर्ग दूतों करके कोई जीव नहीं है, परन्तु परमेश्वर मनुष्य से मिलने का एक माध्यम है।

5. क्रिस्टियन साईन्टिस्टस, स्प्रिटिस्टस, यूनिटेरियन्स, चर्चस आप द न्यू जेरुसलेम एवं यूनिवर्शलिष्टस कहते हैं, शैतान करके कोई जीव है ही नहीं।

V. सृष्टि के बारे में
[OF CREATION]

हम निम्नलिखत शिक्षाओं का विश्वास करते है जो पवित्र शास्त्र के अनुसार है।

(A) बाइबल का वर्णन के अनुसार हो परमेश्वर आकाश और पृथ्वी की रचना की। विशेष करके, उसने यह कार्य अपने सर्वसामर्थी वचन के द्वारा छेः प्राकृतिक दिनों में पूर्ण किया। तब परमेश्वर सब कुछ जो उसने बनाया था देखा की वह बहुत अच्छा है। इन सब विषय है हम परमेश्वर के वचन बाइबल से पढ़ते है। परमेश्वर अपनी वचन के माध्यम से हम से कहता है।

*(a) **उत्पत्ति 1 : 1**, आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की। **उत्पत्ति 1 : 31**, में छठवां दिन करके पढ़ते है। **निर्गमन 20 : 11**, में पढ़ते है 'छः दिन में' सब कुछ बनाया करके पढ़ते है। **इब्रानियों 11 : 3**, विश्वास ही से हम जानते हैं कि परमेश्वर के वचन के द्वारा समस्त सृष्टि की रचना ऐसी की गई कि जो कुछ देखने में आता है, वह दिखाई देने वाली वस्तुओं से नहीं बनाया गया था। **भजन संहिता 115 : 3**, परन्तु हमारा परमेश्वर तो स्वर्ग में है; जो कुछ वह चाहता है, करता है। **कुलुसीयों 1 : 16**, क्योंकि उसी में सब वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की अथवा पृथ्वी की, दृश्य अथवा अदृश्य, सिंहासन अथवा साम्राज्य, शासन अथवा अधिकार-समस्त वस्तुएँ उसी के द्वारा और उसी के लिए सृजी गई हैं।*

[**2 पतरस 1 : 16**, जब हमने तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह के सामर्थ्य और आगमन का समाचार दिया, तो हमने चतुराई से गढ़ी हुई कहानियों का सहारा नहीं लिया, क्योंकि हम उसके माहात्म्य के आंखों देखे गवाह थे।]

इस हम सब प्रकार कि गलत शिक्षाओं का खण्डन और इनकार करते है। जो बाइबल के अनुसार नहीं है। Evolutionists कहते हैं कि पृथ्वी अपने आप है और समय के अनुसार बदले जाता है। *भजन संहिता 33 : 6, यूहन्ना 1 : 1-3; भजन संहिता 148 : 5.*

VI. मनुष्य के बारे में, जो परमेश्वर के स्वरूप है।
[OF MAN AND THE IMAGE OF GOD]

हम निम्नलिखत शिक्षाओं का विश्वास करते है जो पवित्र शास्त्र के अनुसार है।

परमेश्वर ने हमारे आदी पिता और माता आदम और हव्वा को अन्य जीव-जन्तुओं के जैसे अथवा अन्य वस्तुओं के जैसे नहीं परन्तु एक अतभुत रीति से, अपनी स्वरूप में और समानता में बनाया। वे परमेश्वर के स्वरूप में रचे गए थे इसलिए वे घर्मी और पवित्र थे तथा परमेश्वर के बारे में संपूर्ण ज्ञान रखते थे।

*__उत्पत्ति 1 : 26-27__, फिर परमेश्वर ने कहा, "हम मनुष्य को अपने स्वरूप में, अपनी समानता के अनुसार बनाएँ। और परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में सृजा। उसने नर और नारी करके उनकी सृष्टि की। **इफिसियों 4 : 24**,*

और नए मनुष्यत्व को पहिन लो जो परमेश्वर के अनुरूप सत्य की धार्मिकता और पवित्रता में सृजा गया है। ***कुलुस्सियों 3 : 10,*** *और नए मनुष्यत्व को पहिन लिया है जो अपने सृष्टिकर्ता के स्वरूप के अनुसार सत्य ज्ञान प्राप्त करने के लिए नया बनता जाता है।*

हम निम्नलिखित गलत शिक्षाओं का इनकार और खण्डन करते हैं जो पवित्र शास्त्र के अनुसार नहीं है।

1. रोमन कत्तोलिक चर्च के लोगों के कहना है कि परमेश्वर के स्वरूप का मतलब है कि मनुष्य के पास आत्मा है और वह अपनी स्वयं की इच्छा से और अपना अधिकार से जीता है। मनुष्य का पवित्रता परमेश्वर के स्वरूप का हिंसा नहीं परन्तु परमेश्वर की एक अनुग्रह दान के रूप में मनुष्य को दिया गया है। *इफिसियों 4 : 24; कुलुस्सियों 3 : 10.*

2. रोमन कत्तोलिक चर्च, यूनिटेरियन्स, आर्मीनियन्स और रेश्नलिस्टस कहते है कि परमेश्वर के स्वरूप का अर्थ मनुष्य का पास सृष्टि से जो पवित्रता है। वह नहीं है परन्तु मनुष्य के पास सब प्राणीयों उपर राज करने का अधिकार को परमेश्वर स्वरूप कहा जाता है।

3. चर्चस आप द न्यू जेरुसलेम कहते है कि परमेश्वर का स्वरूप, मनुष्य को परमेश्वर ने बनाते समय नहीं था, परन्तु मनुष्य का वृधि हुई तो उसके अन्दर परमेश्वर का स्वरूप का भी विकाश हुआ।

4. अडवन्टिस्टस नामक कलीसिया के लोगों का मानना है कि आदम आरम्भ से निष्पाप था परन्तु पवित्र नहीं। *उत्पत्ती 1 : 26-27.*

5. रसल्लिटस, हेवोलूसनिस्ट तथा मार्डनिष्टस कहते है कि मनुष्य परमेश्वर के स्वरूप में बनाया नहीं गया है। इसलिये अन्य प्राणिओं में से मनुष्य किसी प्रकार से अलग नहीं है।

6. रोमन कत्तोलिक चर्च कहते है कि मनुष्य का शरीर सुरू से अमर नहीं था, परन्तु परमेश्वर के अद्भुत अनुग्रह दान के द्वारा ऐसा हुआ है। (*उत्पत्ति 2:27*)

7. यूनिटेरियन्स तथा आर्मीनियन्स कहते हैं कि मनुष्य का शरीर मरणशिल कि रूप में बनाया गया है। *रोमियों 5 : 12; रोमियों 6 : 23.*

8. सेवन्त डे अडवन्टिस्टिस कहते है कि "मनुष्य का न केवल शरीर परन्तु उसका प्राण भी मरणशिल के रूप में परमेश्वर ने बनाया हैं। *उत्पत्ति 2 : 17; रोमियों 6 : 23; मत्ती 10 : 28.*

9. क्रिस्टियन साईन्टिस्टस मानते है कि मनुष्य पाप में गिरने के बाद भी अमर है। (सूचना : परमेश्वर का स्वरूप का अर्थ उनका ज्ञान, पवित्रता और धार्मीकता है।)

VII. पाप के बारे में
[OF SIN]

हम निम्नलिखत शिक्षाओं का विश्वास करते है जो पवित्र शास्त्र के अनुसार है।

(A) हमारे आदि पिता-माता आदम और हव्वा के पाप में पतन के कारण दुनिया में पाप का प्रवेश हुआ। (B) पाप में गिरने के बाद न तो आदम और हव्वा ही की पतन हुआ वरन् संपूर्ण मनुष्य समाज का भी पतन हुआ और सब के सब अपनी पवित्रता को खो दिये। (C) फल स्वरूप सब लोग पाप के द्वारा मर गए और परमेश्वर के निकट क्रोध के सन्तान बन गए। (D) मनुष्य अपनी कोई भी भले काम के द्वारा परमेश्वर की क्रोध से नहीं बच सकेगा और पाप से छुट्कारा पा सकेगा। (E) सिर्फ परमेश्वर के अनुग्रह से प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा मनुष्य को छुट्कारा मिल सकता है।

*(a) **उत्पत्ति 3 : 1-7**, यहोवा परमेश्वर ने जितने बनैले पशु बनाएं थे उन सब में सर्प धूर्थ था। और उसने स्त्री से कहा, "क्या परमेश्वर ने सचमुच कहा है कि तुम इस वाटिका के किसी भी वृक्ष में से न खाना?" स्त्री ने सर्प से कहा, "वाटिका के वृक्षों के फल तो हम खा सकते हैं, परन्तु उस वृक्ष के फल में से जो वाटिका के बीचों-बीच है, परमेश्वर ने कहा है कि न तो उस में से खाना और न उसे छूना, नहीं तो मर जाओगे।" तब सर्प ने स्त्री से कहा, "तुम निश्चय न मरोगे! परमेश्वर तो जानता है कि जिस दिन तुम उसमें से खाओगे, तुम्हारी आखें खुल जाएगी और तुम भले और बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के समान हो जाओगे।" जब स्त्री ने देखा कि उस वृक्ष का फल खाने के लिए अच्छा, आंखों के लिए लुभावना, तथा बुद्धिमान बनने के लिए चाहनेयोग्य है*

तो उसने उसका फल तोड़कर खाया, और साथ ही साथ अपने पति को भी दिया और उसने भी खाया। तब उन दोनों की आंखें खुल गईं और उन्हें मालूम हुआ कि हम तो नंगे हैं। और उन्होंने अंजीर के पत्ते जोड़-जोड़ कर अपने लिए लंगोट बना लिया। ***यूहन्ना 3 : 8,*** *जो पाप करता है वह शैतान से है, क्योंकि शैतान आरम्भ से ही पाप करता आया है। परमेश्वर का पुत्र इस अभिप्राय से प्रकट हुआ कि वह शैतान के कार्य को नष्ट करे।* ***याकूब 1 : 13-14,*** *कोई भी व्यक्ति परीक्षा के समय यह न कहे कि मेरी परीक्षा परमेश्वर की ओर से है। क्योंकि बुरी बातों से न तो परमेश्वर की परीक्षा की जा सकती है और न वह स्वयं किसी की परीक्षा करता है। परन्तु प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषा द्वारा खिचकर व फंसकर परीक्षा में पड़ता है। (रोमियों 5 : 12 – एक मनुष्य के द्वारा पाप ने जगत में प्रवेश किया।)*

(b & c) ***इफिसियों 2 : 1-3,*** *तुम तो उन अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे, जिनमें तुम पहिले इस संसार की रीति और आकाश में शासन करने वाले अधिकारी अर्थात् उस आत्मा के अनुसार चलते थे जो अब भी आज्ञा न मानने वालों में क्रियाशील है। उन्हीं में हम सब भी पहिले अपने शरीर की लालसाओं में दिन बिताते थे, शारीरिक तथा मानसिक इच्छाओं को पूरा करते थे, और अन्य लोगों के समान स्वभाव ही से क्रोध की सन्तान थे।* ***उत्पत्ति 6 : 5,*** *तब यहोवा ने देखा कि पृथ्वी पर मनुष्य की दुष्टता बहुत बढ़ गई है, और उसके मन का प्रत्येक विचार निरन्तर बुरा ही होता है।* ***यूहन्ना 3 : 5-7,*** *यीशु ने उत्तर दिया, "मैं तुझ से सच सच कहता हूँ कि जब तक कोई जल और आत्मा से न जन्मे, वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। जो शरीर से जन्मा है वह शरीर है, और जो आत्मा से जन्मा है वह आत्मा है। आश्चर्य न कर कि मैंने तुझ से कहा, 'अवश्य है कि तू नया जन्म ले।'* ***रोमियों 7 : 18,*** *इसलिए मैं जानता हूँ कि मुझ में अर्थात् मेरे शरीर में कुछ भी भला वास नहीं करता। इच्छा तो मुझ में हैं, परन्तु मुझ से भला कार्य बन नहीं पड़ता।* ***याकूब 2 : 10,*** *क्योंकि जो कोई सम्पूर्ण व्यवस्था का पालन करता हो और फिर भी किसी एक बात में चूक जाए तो वह सारी व्यवस्था का दोषी ठहरता है।* ***2 कुरिन्थियों 3 : 5,*** *यह नहीं कि हम अपने आप में इस योग्य समझें कि स्वयं कुछ कर सकते हैं, पर हमारी योग्यता तो परमेश्वर की ओर से है।* ***भजन संहिता 130 : 3,*** *हे याह, यदि तू अधर्मों का लेखा लेता, तो हे प्रभु, कौन टिक पाता?*

*(d) **रोमियों 3 : 28**, इसलिए हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि मनुष्य व्यवस्था के कामों से नहीं, वरन विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराया जाता है। **रोमियों 8 : 1**, अतः अब उन पर जो मसीह यीशु में हैं, दण्ड की आज्ञा नहीं। जो शरीर की इच्छाओं से नहीं वरन आत्मा के अनुसार चाहते है। **रोमियों 5 : 16-18**, यह दान उसके समान नहीं जो एक मनुष्य के पाप करने के द्वारा आया, क्योंकि एक ओर तो एक ही अपराध के कारण न्याय आरम्भ हुआ जिसका प्रतिफल दण्ड हुआ; परन्तु दूसरी ओर अनेक अपराथों के कारण ऐसा वरदान उत्पन्न हुआ। जिसका प्रतिफल धार्मिकता हुआ। जब एक ही मनुष्य के अपराध के कारण, मृत्यु ने उस एक ही के द्वारा शासन किया, इस से बढ़कर वे जो अनुग्रह और धार्मिकता के दान को प्रचुरता से पाते हैं, उस एक ही यीशु मसीह के द्वारा जीवन में राज्य करेंगे। अतः जिस प्रकार एक ही अपराध का प्रतिफल सब मनुष्यों के लिए दण्ड की आज्ञा हुआ, उसी प्रकार धार्मिकता के एक ही कार्य का प्रतिफल सब मनुष्यों के लिए धर्मी ठहराया जाना हुआ।*

हम निम्नलिखित गलत शिक्षाओं का इनकार और खण्डन करते हैं जो पवित्र शास्त्र के अनुसार नहीं है।

1. कालविनिष्टिक चर्चस कहते है कि परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया कि वह पाप करें अर्थात् परमेश्वर ने मनुष्य को स्वतंत्रता दी थी। *भजन संहिता 5 : 5, यूहन्ना 3 : 16; 1 यहून्न 2 : 16; व्यवस्था विवरण 32 : 4; उत्पति 1 : 26-27; उत्पत्ति 5 : 1-3.*

2. सेकर्स तथा क्रिस्टियन इसरेलिटस कहते है कि हमारा पूर्वजों ने अर्थात् आदम और हव्वा ने जो पाप किया वह आज्ञा उलंघन का नहीं था, परन्तु उनको पवित्र बनाने के लिए यह परमेश्वर का परिक्षा था। *उत्पत्ति 3 : 6.*

3. चर्चस आप द न्यू जेरुसलेम तथा मार्डनिष्टस का मानना है कि पवित्रशास्त्र में लिखी गयी मनुष्य के पाप में पतन संमन्धीय विषय वास्तविक तथा ऐतिहासिक घटना नहीं है, परन्तु एक अनुमानिक काथा है। *रोमियो 5 : 12; 1 कुरिन्थियों 15 : 21-22; 1 कुरिन्थियों 11 : 13.*

4. रोमन कत्तोलिक चर्च एवं ईस्टर्न आर्थोडाक्स चर्च कहते हैं कि जन्म और स्वाभविक पाप मनुष्य का पूरा स्वभाव के उपर असर नहीं कर सकता लेकिन उसका अपनी स्वयं का इच्छा को कमजोर करके मनुष्य को परमेश्वर के अनुग्रह से वंचित करता है। *यूहन्ना 3 : 5-6; इफिस्थियों 2 : 1; रोमियों 3 : 23.*

5. यूनिटेरियन्स, आर्मीनियन्स, चर्चस आप द न्यू जेरुसलेम, केम्पबेल्लिट्टस, अडवन्टिस्टस तथा मार्डनिष्टस कहते हैं कि जन्म पाप करके कुछ भी नहीं है और मनुष्य समाज उस पाप के द्वारा नहीं प्रभावित हुआ है न तो भृष्ट हुआ है न कहकिंत हुआ है। *रोमियों 7 : 18; उत्पत्ति 8 : 21; रोमियों 5 : 12; भजन संहिता 14 : 1; मत्ती 7 : 17-18; इफिसियों 4 : 22.*

6. क्रिस्टियन साईन्टिस्टस नामक संप्रदाय के लोग कहते हैं कि परमेश्वर के वचन के अनुसार वास्तविक पाप करके कुछ भी नहीं है।

7. रोमन कत्तोलिक चर्च कहते है कि समस्त अशुध कार्य और बुरे विचार और शरीरिक अभिलाषाएँ समाज में और पारंपरिक रूप में पाप नहीं कहा जाता है। *रोमियों 7 : 7; गलातियों 5 : 17; याकूब 1 : 15.*

8. रोमन कत्तोलिक चर्च कहते है कि मेरी सुरू से पवित्र है। वह न तो पाप में माँ की कर्भ में थी न तो पाप में जन्म ली है। *यूहन्ना 3 : 6; अय्यूब 14 : 4; लूका 1 : 46-47.*

9. यूनिटेरियन्स, आर्मीनियन्स, मेन्नोनिटस, क्वाकर्स, सेकर्स, मर्मन्स, सेवन्त डे अडवन्टिस्टिस, यूनिवर्शलिष्टस, चर्चस आप द न्यू जेरुसलेम तथा मार्डनिष्टस कहते है कि मनुष्य समाज के विनाश के कारण और मनुष्य संतान के उपर परमेश्वर के क्रोध का कारण आदम का पाप में पत्तन नहीं है। *इफिसियों 2 : 3; उत्पत्ति 2 : 17; रोमियों 5 : 12.*

10. रोमन कत्तोलिक चर्च, ईस्टर्न आर्थोडाक्स चर्च, सोनियन्स तथा आर्मीनियन्स कहते हैं कि पापों में से कुछ जो है मृत्यु को उत्पन्न करता है और कुछ पाप है जिसका परिणाम मृत्यु नहीं है। *याकूब 2 : 10; गलतियों 3 : 10; मत्ती 5 : 18-19; यहेजकेल 18 : 20.*

11. यूनिटेरियन्स, केम्पबेल्लिट्टस, मर्मन्स, अडवन्टिस्टस, फ्री विल बेपटिस्टस, आर्मीनियन्स, मेन्नोनिटस और मार्डनिष्टस विश्वास है कि छोटे बच्चों में पाप नहीं होता। *उत्पत्ति 6 : 5; भजन संहिता 58 : 3; भजन संहिता 51 : 5; यशायाह 48 : 8.*

12. रोमन कत्तोलिक चर्च कहना है कि कुछ पापों का सजा कुछ दिनों के लिए होता है, अनादी काल के लिए नहीं है। *व्यवस्था विवरण 27 : 26; गलातियों 3 : 10; मत्ती 12 : 26.*

13. रोमन कत्तोलिक चर्च, ईस्टर्न आर्थोडाक्स चर्च, आर्मीनियन्स, मेत्तोडिस्टस, ईवान्जलिकल कांग्रिगेशनल, मोरावियन्स, केम्पबेल्लिट्टस, प्रेसबैटेरियन्स, मेन्नोनिटस, फ्री विल बेपटिस्टस, यूनिटेरियन्स, चर्चस आप द न्यू जेरुसलेम, स्प्रिटिस्टस, क्वाकर्स, सेकर्स, मर्मन्स एवं सेवन्त डे अडवन्टिस्टिस कहते हैं कि मनुष्य पाप में गिरने के बाद भी उसके पास अपना स्वयं की इच्छा और कुछ सामर्थ है जो अच्छा और भले काम कर सकता है। *2 कुरिन्थियों 3 : 5; इफिसियों 2 : 1; रोमियों 3 : 11-12 और रोमियों 7 : 18.*

VIII. अनुग्रहमय चुनाव अर्थात् पहले से ठहराया जाने के बारे में [OF THE ELECTION OF GRACE OR PREDESTINATION]

हम निम्नलिखत शिक्षाओं का विश्वास करते है जो पवित्र शास्त्र के अनुसार है।

(A) हम विश्वास के द्वारा अनुग्रह से ही उद्धार पाते है। (B) क्रोध और दण्ड का इंकार करते है। (C) हम उन सब शिक्षाओं का खण्डन और इंकार करते है जिसमें कहा गया है कि मनुष्य अपनी अच्छे और भले कमों के द्वारा उद्धार पाता है। हम विश्वास करते है कि हमारे परमेश्वर प्रमी है और वह नहीं चाहता है कि कोई भी मनुष्य नाश हो; परन्तु उनका प्रेम जो है सर्वजानीक है। इसलिए उनका इच्छा है कि सब लोग मसोह में विश्वास के द्वारा अनुग्रह से छुट्कारा पाए।

*(a) **रोमियों 11 : 5-6**, ठीक उसी तरह वर्तमान समय में भी परमेश्वर के अनुग्रहमय चुनाव के अनुसार कुछ लोग शोष हैं। यदि यह अनुग्रह से हुआ, तो फिर कर्मों के आधार पर कदापि नहीं, अन्यथा अनुग्रह, अनुग्रह ही न रहा। **रोमियों 8 : 28-30**, और हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं उनके लिए वह सब बातों के द्वारा भलाई को उत्पन्न करता है, अर्थात् उन्हीं के लिए जो उसके अभिप्राय के अनुसार बुलाए गए हैं। क्योंकि जिन के विषय में उसे पूर्वज्ञान था, उसने उन्हें पहिले से ठहराया भी कि वे उसके पुत्र के स्वरूप में हो जाएँ, जिससे कि वह बहुत-से भाइयों में पहिलौठा ठहरे; फिर जिन्हें उसने पहिले से ठहराया है, उन्हें बुलाया भी; और जिन्हें बुलाया, उन्हें धर्मी भी ठहराया; और जिन्हें धर्मी ठहराया, उन्हें महिमा भी दी है। 2 पतरस 3 : 9; यूहन्ना 3 : 16.*

*(c) **रोमियों 9 : 11-12, 16** यद्यपि अब तक न तो जुड़वाँ जन्मे थे और न कुछ भला या बुरा किया था, इस अभिप्राय से कि परमेश्वर द्वारा चुनने का उद्देश्य कर्म के कारण नहीं वरन् बुलाने वाले के कारम स्थिर रहे, उस से यह कहा गया था, "ज्येष्ठ पुत्र छोटे की सेवा करेगा।" ...अतः यह न तो चाहने वाले पर और न दौड़-धूप करने वाले पर निर्भर है, परन्तु परमेश्वर पर जो दया करता है। **2 तिमुथियुस 1 : 9,** जिसने हमारा उद्धार किया, और पवित्र बुलाहट से बुलाया, हमारे कामों के अनुसार नहीं, परन्तु अपने ही उद्देश्य और अनुग्रह के अनुसार जो मसीह यीशु में अनन्तकाल से हम पर हुआ। रोमियों 8 : 29-30; इफिसियों 1 : 3-5*

*(d) **यूहन्ना 3 : 16-17,** क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, कि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। क्योंकि परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिए नहीं भेजा कि जगत को दोषी ठहराए, परन्तु इसलिए कि जगत उसके उद्धार पाए। **मत्ती 23 : 37,** "हे यरूशलेम, हे यरूशलेम! तू नबियों को मार डालता है और जो तेरे पास भेजे जाते हैं, उनका पथराव करता है। मैंने कितनी बार चाहा कि जैसे मुर्गी बच्चों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठा करती है, वैसे ही मैं भी तेरे बच्चों को इकट्ठा करूं, परन्तु तुम ने न चाहा। 1 तिमुथियुस 2 : 4-6; प्रेरितों के काम 13 : 46; प्रेरितों के काम 7 : 51.*

हम निम्नलिखित गलत शिक्षाओं का इनकार और खण्डन करते हैं जो पवित्र शास्त्र के अनुसार नहीं है।

1. केलविनिस्टिक बेपटिस्टस तथा केलविनिस्टिक मेत्तोडिस्टस कहते हैं कि परमेश्वर के छुट्कारा देनेवाली अनुग्रह सब के लिए नहीं है। परन्तु कुछ चुने हुए लोगों के लिए ही है। *रोमियों 11 : 32 और रोमियों 3 : 19.*

2. ईस्टर्न आर्थोडाक्स चर्च, केम्पबेल्लिट्टस, फ्री विल बेपटिस्टस, सिनर्जिस्टस, आर्मीनियन्स तथा सेक्टेरियन चर्चस कहते हैं कि परवेश्वर के अनुग्रह के चुनाव मनुष्यों के भले कामों के अनुसार होता है। *रोमियो 11 : 5, 6; इफिसियों 1 : 3-6; 2 तिमुथियूस 1, 9; रोमियों 9 : 1.*

3. आर्मीनियन्स, मेत्तोडिस्टस, कम्बरलेण्ड प्रसबैटेरियन्स, यूनिटेरियन्स, शेकस तथा सालवेशन आर्मि के लोग विश्वास करते है कि परमेश्वर की अनुग्रह

अनन्तकाल के लिए नहीं है, परन्तु समय के अनुसार होता है। *2 तीमुथियुस 1 : 9; रोमियों 9 : 11; इफिसियों 1 : 3, 5.*

4. चर्चस आप द न्यू जेरुसलेम, यूनिटेरियन्स, मर्मन्स, मार्डनिष्टस तथा आर्मीनियन्स कहते हैं कि वास्तविक परमेश्वर का अनुग्रह के चुनाव करके कुछ नहीं है, परन्तु मनुष्य अपने आप चुनाव करता है और अपने कामों से ही छुटकारा पाता है। *इफिसियों 1 : 3-6; 2 थिस्सलुनीकियों 2 : 13; यूहन्ना 15 : 16.*

5. प्रेसबैटेरियन्स, कांग्रिगेश्नल क्रिस्टियन्स, केलविनिस्टिक बेपटिस्टस, तथा केलविनिस्टिक मेत्तोडिस्टस कहते हैं कि परमेश्वर के अनुग्रह के चुनाव, सर्वशक्तिमान परमेश्वर के काम है और प्रभु यीशु मसीह जगत के लिए किया काम से (मसीह ने जगत की उद्धार के लिए क्रूस पर बलि हुआ) इसका कोई मेल नहीं है। *इफिसियों 1 : 3-6; 2 तीमुथियुस 1 : 9.*

6. प्रेसबैटेरियन्स, कांग्रिगेश्नल क्रिस्टियन्स, केलविनिस्टिक बेपटिस्टस एवं केलविनिस्टिक मेत्तोडिस्टस कहते हैं चुने हुए लोग परमेश्वर के अनुग्रह से अलग किया नहीं जा सकते, वे बड़े से बड़े पाप करने के बाद भी, उस अनुग्रह उनके लिए ऐसे ही रहता है। *भजन संहिता 51 : 10-13; मत्ती 26 : 69; 2 शमूएल 12 : 1-13; भजन संहिता 37 : 24; यूहन्ना 20 : 25, 29.*

7. रोमन कत्तोलिक चर्च के लोग कहते है कि चुने हुए लोगों तो यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं फिर भी वे उनके उद्धार के बारे में निश्चित नहीं है। *1 रोमियों 8 : 38, 39; 2 तीमुथियुस 1 : 12; फिलिप्पियों 1 : 6; लूका 10 : 21; 1 थिस्सलुनिकियों 1 : 4; 1 पतरस 5 : 12; 2 पतरस 1 : 10.*

8. केलविनिस्टिक चर्चस, रिफार्मडु प्रेसबैटेरियन्स, केलविनिस्टिक मेत्तोडिस्टस तथा कांग्रिगेश्नल क्रिस्टियन्स कहते कि दुष्ट लोग न तो अपनी पाप और अविश्वास के कारण नाश किये जाते हैं वरन् परमेश्वर के कठिन विचार के कारण, वह उनके उपर से अपना दया और अनुग्रह दूर कर देता है। *होशे 13 : 9; मत्ती 23 : 37; प्रेरितों के काम 7 : 15; प्रेरितों के काम 13 : 46; यूहन्ना 3 : 19; 1 थिस्सलुनिकियों 5 : 9; लूका 14 : 16-24; गलातियों 5 : 4; यहेजकेल 18 : 26; 1 तिमुथियस 1 : 19.*

9. अंत में हम उन सब गलत शिक्षाओं का खण्डन करते जिस में बताया गया है की अनुग्रह से उद्धार पाना सब लोगों के लिए नहीं है और सिर्फ विश्वास

के द्वारा ही नहीं परन्तु भले कामों के द्वारा उद्धार पाया जाता है। पवित्रशास्त्र के अनुसार सिर्फ विश्वास के द्वारा अनुग्रह से उद्धार पाया जाता है। इस शिक्षा के विपरीत कोई भी शिक्षाओं का हम इन्कार और खण्डन करते है। *1 तीमुथियुस 2 : 4; 2 पतरस 3 : 9; रोमियों 3 : 20-28.*

IX. मसीह, परमेश्वर के पुत्र के बारे में [OF CHRIST THE SON OF GOD]

हम निम्नलिखत शिक्षाओं का विश्वास करते है जो पवित्र शास्त्र के अनुसार है।

(A) परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह अनुग्रह की पात्री कुंवारी मरियम के गर्भ में से जन्म होकर वह मानवीय स्वभाव का भागी था इसलिए उनका दो स्वभाव थे, दिव्य स्वभाव और मानवीय स्वभाव। इन दो स्वाभावों एक ही व्यक्ति के अन्दर अद्‌भुत रीति से एक साथ थे। इन दो स्वभावों को कोई भी अलग नहीं कर सकता यीशु मसीह जो कि सच्चा परमेश्वर है वह एक सच्चा मानव भी था। वह कुंवरी मरियम के गर्भ में से और पवित्र आत्मा के द्वारा जन्मा था।

रोमियों 9 : 5, पूर्वज उन्हीं के हैं और मसीह भी शरीर के अनुसार उन्हीं में से हुआ, जो सब के ऊपर युगानुयुग धन्य परमेश्वर है। **1 तीमुथियुस 2 : 5-6,** क्योंकि परमेश्वर एक ही है और परमेश्वर तथा मनुष्यों के बीच एक ही मध्यस्थ भी है, अर्थात् मसीह यीशु, जो मनुष्य है। जिसने अपने आपको सब की फिरौती के दाम में दे दिया और इसकी साक्षी उचित समय पर दी गई। **1 यूहन्न 5 : 20,** हम जानते हैं कि परमेश्वर का पुत्र आ चुका है, और उसने हमें समझ दी है, कि हम उसे जो सत्य है जान सकें, और हम उसमें हैं जो सत्य है, अर्थात् उसके पुत्र यीशु मसीह में। यही सच्चा परमेश्वर औरअनन्त जीवन है। *यिर्मयाह 23 : 6; यूहन्ना 5 : 23; मत्ती 1 : 21; 1 तीमुथियुस 3 : 16; 1 कुरिन्थियों 15 : 47.*

हम निम्नलिखित गलत शिक्षाओं का इनकार और खण्डन करते हैं जो पवित्र शास्त्र के अनुसार नहीं है।

1. यूनिटेरियन्स, चर्चस आप द न्यू जेरुसलेम, क्वाकर्स, सेवन्त डे अडवन्टिस्टिस, मर्मन्स, स्प्रिटिस्टस, रसल्लिटस, क्रिस्टियन साईन्टिस्टस तथा रेश्नलिस्टस का विश्वास है कि अनन्त परमेश्वर के पुत्र जो त्रिएक परमेश्वर का

दूसरा व्यक्ति है, उनका अवतार (Incarnation) नहीं हुआ है। *ईब्रानियों 2 : 14, 4 : 15; गलातियों 4 : 4, 5 :1; तीमुथियुस 2 : 5; यूहन्न 1 : 14; मत्ती 16 : 13.*

2. मेन्नोनिटस एवं स्वेन्कफेल्डियन्स कहते है कि प्रभु यीशु मसीह मरीयम के गर्भ से मानवीय स्वभाव को नहीं ग्रहण किया था, परन्तु उसका मानवीय स्वभाव पिता परमेश्वर से ही आया था। *1. ईब्रनियों 2 : 16-17, रोमियों 1 : 3; इफिसियों 5 : 30; लूका 1 : 42.*

3. सेवन्त डे अडवन्टिस्टिस के लोगों का विश्वास है कि यीशु मसीह का केवल एक ही स्वाभाव था, वह है दिव्य स्वभाव अर्थात् वह परमेश्वर के एकलौता पुत्र था। *यूहन्ना 1 : 14; 1 यूहन्ना 4 : 2, 3 : 1; तीमुथियुस 3 : 16.*

4. यूनिटेरियन्स, रसल्लिटस, यूनिवर्शलिष्टस, सेकर्स तथा मार्डनिष्टस कहते है कि प्रमु यीशु मसीह का केवल एक ही स्वभाव था, वह मानवीय स्वभाव अर्थात् प्रभु यीशु मसीह एक संपूर्ण मनुष्य था। *1 तीमुथियुस 3 : 16; यूहन्ना 1 : 14.*

5. मर्मन्स तथा मार्डनिष्टस लोगों का मानना है कि मसीह में दो स्वभाव नहीं था अर्थात् उन में दिव्य स्वभाव और मानवीय स्वभाव का बिच कोई अन्तर नहीं था। *यूहन्ना 1 : 14; तीमुथियुस 3 : 16; कुलुस्सियों 2 : 9.*

6. स्वेन्कफेल्डियन्स कहते है कि मसीह में दिव्य स्वभाव और मानवीय स्वभाग मिलकर एक ही स्वभाव के रूप में था। *मत्ती 16 : 13, 16; 1 तीमुथियुस 2 : 5-6.*

7. केलविनिस्टिक चर्चस कहते है कि मसीह मानव के रूप धारण करने के बाद दिव्य स्वभाव केवल उनके अन्दर ही नहीं बलिक बाहर अर्थात् उनके शरीर में भी था। *यूहन्ना 1 : 14; 1 कुरिन्थियों 8 : 6; 1 तीमुथियुस 3 : 16; कुलिस्सियों 2 : 9; 2 कुरिन्थियों 5 : 19; यूहन्ना 3 : 13; मत्ती 28 : 20.*

8. केलविनिस्टिक चर्चस कहते है कि मसीह की दिव्य स्वभाव और मानवीय स्वभाव का मिलन के बात सत्य और वास्तविक नहीं है; परमेश्वर मनुष्य है। (God is man) और मनुष्य परमेश्वर है Man is God ये कहाबत एक पारमपरिक कथा है। *लूका 1 : 35; 1 कुरिन्थियों 15 : 47; मत्ती 16 : 16; रोमियों 9 : 5.*

9. केलविनिस्टिक चर्चस कहते है कि मसीह में इन दो सभावों का सम्मिलन एक वास्तव नहीं है, परन्तु एक कल्पित कहानी है। *1 पतरस 3 : 18, 22; प्रेरितों का काम 20 : 28; रोमियों 8 : 32.*

10. केलविनिस्टिक चर्चस, ईवान्जलिकल कांग्रिगेशनलिस्ट, स्वेन्कफेल्डियन्स, क्रिस्टियन इसरेलिटस, मर्मन्स, सोनियन्स, यूनिटेरियन्स, सेकर्स, यूनिवर्शलिष्टस तथा आर्मीनियन्स कहते हैं कि मसीह मनुष्य के रूप में जब था तब उनके पास दिव्य स्वभाव नहीं था। परन्तु उनके पास दिव्य सामर्थ और खुदरती वरदानों थे। *यूहन्ना 1 : 14; यूहन्ना 2 : 11; मत्ती 28 : 18; भजन संहिता 2 : 8; कुलुस्सियों 2 : 3; इफिसियों 4 : 10; फिलेमोन 2 : 9; यूहन्ना 5 : 26-27.*

11. ईवान्जलिकल कांग्रिगेशनल, केलविनिस्टिक चर्चस तथा स्वेन्कफेल्डियन्स कहते हैं कि प्रभु यीशु मसीह का मानवीय स्वभाव साधारण था। लेखिन वह उनका जब उपर उठाया जाना हुआ तब उनका मानवीय स्वाभ महिमा और सामर्थ से भर गया। *यूहन्ना 1 : 14.*

12. मर्मन्स कहते है कि मानव यीशु जब बपतिस्मा लिया तब दिव्य शक्ति से भर गया। *यूहन्ना 1 : 14; कुलिस्सियों 2 : 9; 1 यूहन्ना 4 : 2, 3.*

13. यूनिटेरियन्स, सेकर्स, यूनिवर्शलिष्टस तथा मार्डनिष्टस कहते हैं कि यीशु मसीह में दिव्य स्वभाव था ही नहीं अर्थात् वह परमेश्वर का पुत्र नहीं है, वह केवल एक साधारण मनुष्य हैं। इसलिए उनका परमेश्वर के रूप में आराधना करना उचित नहीं है। *यूहन्ना 5 : 33; रोमियों 14 : 10-11.*

14. आर्मीनियन्स तथा मार्डनिष्टस कहते हैं कि यीशु मसीह जो कि उद्धार कर्ता एवं मध्यस्ती है वह पिता की महीमा और पराक्रम तथा सामर्थ से है। *यूहन्ना 5 : 23.*

15. केलविनिस्टिक चर्चस कहते हैं कि मसीह का इन दो स्वभाव का कोई मिलन नहीं है। (दिव्य और मानवीय संभाव) हर एक स्वभाव एक दूसरे से अलग है और अलग-अलग काम करते है। *1 तिमुथियुस 2 : 5; 1 यूहन्ना 3 : 8; 1 कुरिन्थियों 15 : 3; गलातियों 1 : 4; इफिस्सियों 5 : 2, 25.*

16. इर्विनजिट्टस कहते हैं कि यीशु मसीह एक मनुष्य के रूप में ही था और अपना काम किया करता था।

17. मोरावियन ब्रीत्रन तथा इर्विनजिट्टस कहते हैं कि प्रभु यीशु मसीह मानव के रूप में ही हमारा मध्यस्थ था। *1 तीमुथियुस 2 : 5; तितुस 2 : 13; 1 तीमुथियुस 3 : 16.*

X. यीशु मसीह की पदवी और उनकी सेवकाई के बारे में [OF CHRIST'S WORK AND OFFICE]

हम निम्नलिखत शिक्षाओं का विश्वास करते है जो पवित्र शास्त्र के अनुसार है।

(A) हम विश्वास करते है कि हमारा प्रभु यीशु मसीह सच्चा परमेश्वर और साथ में एक संपूर्ण मनुष्य भी था, वह वास्तविक सताए गया, क्रूस में चढाया जाकर मारा गया, गाडा गया ताकि मानव जाति को पिता से मिला सके। संपूर्ण मानव जाति की पापों के प्रायश्चित के लिए वह बलि बनके चड़ाया गया और अपना प्राण दिया। (B) वह पाताल में प्रवेश कर के बंदी आत्माओं को सुसमायार सुनाया और वचन के अनुसार तीसरा दिन मृतंकों में से जी उठा। (C) उसके पश्चात वह स्वर्ग में उठा लिया गया और पिता के दक्षिण पास में बैठा है। वह सदाकाल के लिए राज्य करेगा, हर एक प्राणी उसके अधिकार में होंगे। वह सारे संसार की विशेष करके कलिसीया की एकत्रिकरण, उसकी पालन और इस दुनिया में उसकी रक्षा करता है, वह अंत में फिर से आकर जीवितों और मृतकों का न्याय करनेवाला है।

*(a) **गलातियों 4 : 4-5,** परन्तु जब समय पूरा हुआ तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा जो स्त्री से उत्पन्न हुआ और व्यवस्था के अधीन उत्पन्न हुआ, कि जो लोग व्यवस्था के अधीन हैं उन्हें मूल्य चुकाकर छुड़ा ले, और हम को लेपालक पुत्र होने का अधिकार प्राप्त हो। **यशायाह 53 : 4-5,** निश्चय उसने हमारी पीड़ाओं को आप सह लिया और हमारे दुखों को उठा लिया। फिर भी हमने उसे परमेश्वर का मारा-कूटा और दर्दशा में पड़ा हुआ समझा। परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण बेधा गया; हमारी ही शान्ति के लिए उस पर ताड़ना पड़ी, उसके कोड़े खाने से हम चंगे हुए। **1 पतरस 2 : 24,** उसने स्वयं अपनी ही देह में क्रूस पर हमारे पापों को उठा लिया, जिस से हम पाप के लिए मरें और धार्मिकता के लिए जीवन व्यतीत करें, क्योंकि उसके घावों से तुम स्वस्थ हुए हो।*

*(b) **1 पतरस 3 : 18-19;** मसीह भी सब के पापों के लिए एक ही बार मर गया, अर्थात् अधर्मियों के लिए धर्मी जिस से वह हमें परमेश्वर के समीप ले आए। शरीर के भाव से तो वह मारा गया, परन्तु आत्मा के भाव से जिलाया गया। उसी में उसने जाकर उन बन्दी आत्माओं को सन्देश सुनाया। **कुलुस्सियों 2 : 5;** जब उसने प्रधानों और अधिकारियों को उसके द्वारा निरस्त्र कर दिया, तब उन पर विजय प्राप्त करके उनका खुल्लम-खुल्ला तमाशा बनाया। **इफिसियों 4 : 9-10;** अब इस कथन का कि वह ऊँचे पर चढ़ा, क्या अर्थ है? केवल यही कि वह पृथ्वी के निचले स्थानों में भी उतरा था। और वह जो उतरा था, स्वयं वही है जो सब आकाशों से भी ऊपर चढ़ गया कि सब कुछ परिपूर्ण करे। 1 कुरिन्थियों 15 : 17-18; रोमियों 4 : 25.*

*(c) **प्रेरितों के काम 1 : 9,** इतना कहने के पश्चात् वह उनके देखते-देखते ऊपर उठा लिया गया और बादल ने उसे उनकी आंखों से ओझल कर दिया। **भजन संहिता 68 : 18,** तू ऊँचे पर चढ़ा, तू बन्दियों को बंधुवाई में ले गया। तू ने लोगों से वरन् हठीले लोगों से भी भेंटें लीं, कि याह परमेश्वर वहाँ वास करे। **भजन संहिता 110 : 1,** यहोवा ने मेरे प्रभु से कहा, "मेरे दाहिने बैठ, जब तक कि मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की चौकी न बना दूँ।" इफिसियों 1 : 20-22, यूहन्ना 14 : 16-17; 1 कुरिन्थियों 6 : 11.*

*(d) **प्रेरितों के काम 17 : 31,** क्योंकि उसने एक दिन निश्चित किया है जिसमें, एक मनुष्य के द्वारा जिसको उसने नियुक्त किया है, वह धार्मिकता से संसार का न्याय करेगा; और उसने मृतकों में से उसे जिलाकर इस बात को सब मनुष्यों पर प्रमाणित कर दिया है। **2 कुरिन्थियों 5 : 10,** क्योंकि हम सब को मसीह के न्याय-आसन के समक्ष उपस्थित होना अवश्य है कि प्रत्येक को अपने भले या बुरे कामों का बदला मिले जो उसने देह के द्वारा किए। **1 थिस्सलुनीकियों 4 : 16,** क्योंकि प्रभु स्वयं ललकार और प्रधान स्वर्गदूत की पुकार और परमेश्वर की तुरही की आवाज़ के साथ स्वर्ग से उतरेगा, और जो मसीह में मर गए हैं, वे पहिले जी उठेंगे। मत्ती 25 : 31-46; 2 पतरस 3 : 10.*

हम निम्नलिखित गलत शिक्षाओं का इनकार और खण्डन करते हैं जो पवित्र शास्त्र के अनुसार नहीं है।

1. आर्मीनियन्स, मोराावियन्स, मेत्तोडिस्टस, यूनिटेरियन्स, चर्चस आप द

न्यू जेरुसलेम, मर्मन्स, फ्री प्रोटेस्टन्टस, क्रिस्टियन इसरेलिटस तथा मार्डनिष्टस कहते हैं कि यीशु मसीह हमारे लिए व्यवस्था का पूरा नहीं किया है। *रोमियों 5 : 19; फिलिप्पियों 2 : 7-8; गलातियों 4 : 4-5.*

2. केलविनिस्टिक चर्चस, प्रेसबैटेरियन्स, कांग्रिगेश्नल क्रिस्टियन्स, केलविनिस्टिक बेपटिस्टस एवं केलविनिस्टिक मेत्तोडिस्टस कहते हैं कि प्रभु यीशु मसीह व्यवस्था का पुरा किया तो है परन्तु केवल चुने हुए लोगों के लिए। *2 कुरिन्थियों 5 : 15-19; यूहन्ना 1 : 29; 1 तीमुथियुस 4 : 10; 2 पतरस 2 : 1; तीतुस 2 : 11.*

3. रोमन कत्तोलिक चर्चस, यूनिटेरियन्स, आर्मीनियन्स, मेत्तोडिस्टस, मेन्नोनिटस तथा केम्पबेल्लिट्टस कहते हैं कि यीशु मसीह व्यवस्था देने और धार्मिकता के नया व्यवस्थायों का प्रचार करने आया था। *गलातियों 3 : 24; यूहन्ना 5 : 45; गलातियों 4 : 4-5; मत्ती 22 : 37-40.*

4. रोमन कत्तोलिक चर्च कहते हैं कि प्रभु यीशु मसीह केवल जन्म पाप से बचाया लेकिन एक मनुष बापतिस्मा लेने के बाद किये हुए अपनी कर्म पापों का दण्ड भोगना ही पड़ेगा। *इब्रानीयों 10 : 10-14; 1 पतरस 3 : 18; 1 यूहन्ना 2 : 1-2; रोमियों 5 : 10.*

5. रोमन कत्तोलिक चर्चस, प्रेसबैटेरियन्स, कांग्रिगेश्नल क्रिस्टियन्स, केलविनिस्टिक बेपटिस्टस, केलविनिस्टिक मेत्तोडिस्टस तथा वाल्डेन्सियन्स कहते हैं कि यीशु मसीह सिर्फ चुने हुए लोगों का पापों के प्रायश्चित के रूप में अपनी प्राण क्रूस पर दिया है, अन्य लोगों के लिए नहीं। *2 कुरिन्थियों 5 : 15, 18; यूहन्ना 1 : 29; 1 तीमुथियुस 2 : 5-6; रोमियों 8 : 32; इब्रानियों 2 : 9; तीतुस 2 : 11; 2 पतरस 2 : 1.*

6. आर्मीनियन्स कहना हैं कि यीशु मसीह की क्रूस पर मृत्यु हमारे पापों का प्रायश्चित के लिए नहीं है, परन्तु पिता परमेश्वर का विशेष अनुग्रह ही हमारे पापों के लिए प्रायश्चित है। *रोमियों 5 : 10; यूहन्ना 19 : 30; 1 पतरस 2 : 1.*

7. सेवन्त डे अडवन्टिस्टिस के लोगों का कहना हैं कि यीशु मसीह समस्त मानव जाति के लिए मारा गया। यह तो सही बात है, लेकिन पापों से छुट्कारा की योजना केवल विश्वासीयों के लिए है और यह योजना वर्ष 1844 से

ही शुरू हुआ था। *इब्रानी 1 : 3; रोमियों 8 : 34; 1 तीमुथियुस 4 : 10; तीतुस 2 : 11; 2 पतरस 2 : 1; 1 कुरिन्थियों 15 : 57; 1 यूहन्ना 1 : 7.*

8. यूनिटेरियन्स, यूनिवर्शलिष्टस, फ्री प्रोटेस्टन्टस, सेकर्स, स्प्रिटिस्टस, क्रिस्टियन साईन्टिस्टस एवं मार्डनिष्टस मानते हैं कि प्रभु यीशु मसीह का क्रूस पर मृत्यु हमारे पापों का प्रायश्चित के लिए नहीं। ऐसा प्रायश्चित का कोई जारूरत ही नहीं है। *भजन संहिता 49 : 8-9; प्रकाशित वाक्य 14 : 13 एवं 5 : 9; यशायाह 53 : 6; रोमियों 3 : 23-26; प्रेरितों के काम 4 : 12; मत्ती 20-28; 1 तीमुथियुस 2 : 6; रोमियों 8 : 32; 2 कुरिन्थियों 5 : 19-21.*

9. सालवेशन आर्मि एवं केलविनिस्टिक कहते हैं कि यीशु मसीह को मृत्यु हमारे पापों का प्रायश्चित नहीं है। परन्तु परमेश्वर के असीम प्रेम और अनुग्रह के द्वारा हमारे पापों से हमें क्षमा मिली है। *2 कुरिन्थियों 5 : 14-15; यूहन्ना 1 : 29; 1 यूहन्ना 3 : 8.*

10. रसल्लिटस कहते हैं कि यीशु मसीह अपनी दुख और ताडना तथा मृत्यु के द्वारा हमको छुड़ाया नहीं है; परन्तु हमारे स्वयं की आज्ञाकारीता के द्वारा ही हम अनन्त जीवन का अधिकारी बना है। *यशायाद 53 : 6; मत्ती 20 : 28; यूहन्ना 14 : 6; लूका 16 : 26; 1 यूहन्ना 1 : 7; 1 यूहन्ना 2 : 1-2.*

11. रोमन कत्तोलिक चर्च और ईस्टर्न आर्थोडाक्स चर्च का कहना हैं कि केवल यीशु मसीह ही परमेश्वर के पास हमारे मध्यस्थी नहीं, परन्तु साधुओं भी है विशेष करके मरीयम है जिसकी धार्मिकता परमेश्वर के पास ग्रहण के योग्य और बहुमूल्य है। *यूहन्ना 14 : 6; प्रेरितों के काम 4 : 12; 1 तीमुथियुस 2 : 5.*

12. मार्डनिष्टस और सेकर्स कहते हैं कि केवल यीशु मसीह ही उद्धार कर्त्ता नहीं है। *यशायाह 42 : 8, 43 : 11.*

13. केलविनिस्टिक चर्चस तथा स्वेन्कफेल्डियन्स कहते हैं कि यीशु मसीह के मानवीय स्वभाव में कुछ दिव्य स्वभाव भी मिला था और विशेष रूप से वह स्वर्ग में उठा लिए गये समय पूर्ण रूप से प्रगट हुआ था। *भजन संहिता 102 : 27; यूहन्ना 2 : 11; इब्रानीयों 1 : 12-13; इफिस्सियों 1 : 20-21.*

14. आर्मीनियन्स, ईवान्जलिकल कांग्रिगेशनल, केम्पबेल्लिट्टस, इर्विनजिट्टस एवं केलविनिस्टिक चर्चस इन जनरल का मानना है कि यीशु मसीह मानव के रूप में रहते समय उनके अन्तर दिव्य स्वभाव नहीं था। केवल

उनकी सर्गारोहण के बाद ही उनको दिव्य स्वभाव मिला था। *यूहन्ना 2 : 11, 1 : 14, 3 : 13, 11 : 40, 13 : 31, 18 : 6, 9 : 6-7.*

15. रोमन कत्तोलिक चर्च का कहना है कि यीशु मसीह के क्रूसीय मृत्यु के समय उनके प्राण और आत्मा नहीं, परन्तु केवल उनके शरीर में ही दुख, पिढ़ा और कष्ट का अनुभव किया। *मत्ती 27 : 46, 26 : 38; लूका 22 : 42; इब्रानियों 2 : 17-18, 5 : 7-8.*

16. यूनिटेरियन्स, आर्मीनियन्स, ईवान्जलिकल अशोसियोशन, यूनिवर्शलिष्टस, फ्री प्रोटेस्टन्टस तथा मार्डनिष्टस का विश्वास है कि प्रभु यीशु मसीह अपनी क्रूस की मृत्यु में परमेश्वरका क्रोध और नरक का कष्ठ का सहन नहीं किया। *गलातियों 3 : 13, 10; रोमियों 6 : 23; भजन संहिता 16 : 10.*

17. रोमन कत्तोलिक चर्चस तथा ईस्टर्न आर्थोडाक्स चर्च का कहना है कि यीशु जी की मृत्यु के बाद उनकी आत्मा पात्ताल में पुराना नियन के सन्तों की आत्माओं को बन्दी से छुड़ाने के लिए गया था। *1 पतरस 3 : 18, 19; कुलुस्सियों 2 : 15; 1 कुरिन्थियों 15 : 55; लूका 16 : 23.*

18. केलविनिस्टिक चर्चस, आर्मीनियन्स, यूनिटेरियन्स तथा ईवान्जलिकल कांग्रिगेशनल चर्च का मानना है कि यीशु मसीह सचमुच में पाताल में प्रवेश नहीं किया। *इफिसियों 4 : 9; 1 पतरस 3 : 18-19; कुलुस्सियों 2 : 14.*

19. रसल्लिटस तथा क्रिस्टियन साईन्टिस्टस विश्वास करते हैं कि। प्रभु यीशु मसीह शरीर में मृतकों में से जी उठा ही नहीं। *यूहन्ना 2 : 19; फिलिप्पियों 3 : 20-21; मत्ती 28 : 2; यूहन्ना 20 : 19, 26; मत्ती 17 : 1; भजन संहिता 16 : 9-11.*

20. यूनिटेरियन्स कहते हैं कि मसीह के स्वर्गारोहण के बाद उनका शरीर एक नया रूप में बदल गया था। *लूका 24 : 39; फिलिप्पियों 2 : 8-9; प्रेरितों के काम 7 : 55.*

21. केलविनिस्टिक चर्चस, एपिस्कोपालियन्स, कांग्रिगेश्नल क्रिस्टियन्स, बेपटिस्टस, मेत्तोडिस्टस, ईवान्जलिकल कांग्रिगेशनल, यूनिटेरियन्स और सेवन्त डे अडवन्टिस्टिस कहते हैं कि यीशु मसीह स्वर्ग में पिता के दाईने ओर बैठा है उसका मतलब यह नहीं है कि उनको असीमसामर्थ, अधिकार और प्रभुता है,

परन्तु उनका सामर्थ और शक्ति सीमित है और उनका मनुष्य स्वभाव के अनुसार उनको एक अच्छा स्थान मिला है। *भजन संहिता 110 : 1; इब्रानियों 1 : 3; इफिसियों 1 : 20-23; 1 पतरस 3 : 22.*

22. मर्मन्स का कहना है कि मसीह अब दुनिया में उपस्थित नहीं है परन्तु पवित्र आत्मा पृथ्वी में उनका प्रतिनिधित्व करता है। *मत्ती 28 : 20.*

XI. बचाया जाने के बारे में [OF CONVERSION]

हम निम्नलिखत शिक्षाओं का विश्वास करते है जो पवित्र शास्त्र के अनुसार है।

(A) हम विश्वास करते है कि मनुष्य उद्धार पाने के लिए ओर यीशु मसीह पर रखने वाला जो है विश्वास किसि भी मनुष्य का स्वभाव में नहीं है। इस विश्वास मनुष्यों में नहीं मिल सकता है, परन्तु इस विश्वास, पवित्र आत्मा के दान के रूप में हर मनुष्य को बिना मूल्य में दिया जाता है। (B) बचाव के काम जो है, संपूर्ण रूप से परमेश्वर के ही है; वह अपनी अपार प्रेम और अनग्रह के द्वारा मसीह के कारण सुसमा चार के द्वारा हर पापी मनुष्य को बचाता है। (C) जितने लोग सुसमाचार सुनते है वे सब के जीवन में पवित्र आत्मा बचाव के कार्य करता है; फिर भि सब लोग बचा नहीं पाते, इसका कारण परमेश्वर के अनुग्रह का कमि नहीं है, परन्तु उनका विरोध भाव अर्थात् उनका इंकार करना ही उसका मुख्य कारण है। (D) हम उन सब शिक्षाओं का विरोध और खण्डन करते है। जिस में कहा गया है मनुष्य परमेश्वर के अनुग्रह से नहीं परन्तु अपनी भले कामों से ही बचाया जाता है। (E) हम केलविनिस्टिक नामक स्थापन के लोगों का बात का भी इंकार और खण्डन करते है जिसमें कहा गया है कि परमेश्वर हर सुसमाचार सुननेवालों को नहीं परन्तु केवल कुछ लोगों का ही बचाता है, जो चुने हुए है।

*(a) **1 पतरस 1 : 3-4,** हमारे प्रभु यीशु मसीह के पिता परमेश्वर की स्तुति हो, जिसने यीशु मसीह को मृतकों में से जिला उठाने के द्वारा, अपनी अपार दया के अनुसार, एक जीवित आशा के लिए हमें नया जन्म दिया, कि उस उत्तराधिकार को प्राप्त करें जो अविनाशी, निष्कलक और अमिट है और तुम्हारे लिए स्वर्ग में सुरक्षित है। **यूहन्ना 3 : 5-6,** यीशु ने उत्तर दिया, "मैं तुझ से सच*

सच कहता हूँ कि जब तक कोई जल और आत्मा से न जन्मे, वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। जो शरीर से जन्मा है वह शरीर है, और जो आत्मा से जन्मा है वह आत्मा है। आश्चर्य न कर कि मैंने तुझ से कहा, 'अवश्य है कि तू नया जन्म ले।' ***इफिस्सियों 2 : 1,*** *तुम तो उन अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे। याकूब 1 : 18; भजन संहिता 103 : 3; यूहन्ना 8 : 21; भजन संहिता 51 : 7; भजन संहिता 51 : 12; यिर्मयाह 31 : 18; रोमियों 3 : 23; रोमियों 7 : 18.*

(b) ***1 कुरिन्थियों 2 : 14,*** *परन्तु शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातों को ग्रहण नहीं करता, क्योंकि वे उसके लिए मूर्खतापूर्ण हैं और वह उन्हें समझ नहीं सकता क्योंकि उनकी परख आत्मिक रीति से होती है।* ***इफिसियों 1 : 19-20,*** *और उसका सामर्थ्य हम विश्वास करने वालों के प्रति कितना महान् है। ये सब उसकी उस शक्ति के कार्य के अनुसार है, जिसे उसने मसीह में पूरा किया जब उसने उसे मरे हुओं में से जिलाकर अपनी दाहिनी ओर स्वर्गीय स्थानों में बैठाया।* ***रोमियों 10 : 17,*** *अतः विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन के द्वारा होता है।*

(c) ***मत्ती 23 : 37,*** *"हे यरूशलेम, हे यरूशलेम! तू नबियों को मार डालता है और जो तेरे पास भेजे जाते हैं, उनका पथराव करता है। मैंने कितनी बार चाहा कि जैसे मुर्गी बच्चों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठा करती है, वैसे ही मैं भी तेरे बच्चों को इकट्ठा करूं, परन्तु तुम ने न चाहा।* ***प्रेरितों के काम 7 : 51,*** *हे हठीला लोगो, तुम्हारे मन और कान ख़तनारहित हैं। तुम सदा पवित्र आत्मा का विरोध करते आए हो। तुम भी वैसा ही कर रहे हो जैसा तुम्हारे पूर्वज किया करते थे।*

(d) ***1 कुरिन्थियों 2 : 14,*** *परन्तु शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातों को ग्रहण नहीं करता, क्योंकि वे उसके लिए मूर्खतापूर्ण हैं और वह उन्हें समझ नहीं सकता क्योंकि उनकी परख आत्मिक रीति से होती है।* ***इफिसियों 4 : 18,*** *क्योंकि उस अज्ञानता के कारण जो उनमें है, और उनके मन की कठोरता के कारण, उनकी बुद्धि अन्धकारमय हो गई है, और वे परमेश्वर के जीवन से अलग हो गए हैं।* ***फिलिप्पियों 2 : 13,*** *क्योंकि स्वयं परमेश्वर अपनी सुइच्छा के लिए तुम्हारी इच्छा और कार्यों को प्रोत्साहित करने के लिए तुम में सक्रिय है।*

हम निम्नलिखित गलत शिक्षाओं का इनकार और खण्डन करते हैं जो पवित्र शास्त्र के अनुसार नहीं है।

1. केम्पबेल्लिट्टस, प्रेसबैटेरियन्स, क्वाकर्स, चर्चस आप द न्यू जेरुसलेम, सेकर्स, यूनिटेरियन्स, सिनर्जिस्टस, रोमन कत्तोलिक चर्चस, ईस्टर्न आर्थोडाक्स चर्चस, आर्मीनियन्स, मार्डनिष्टस, मेन्नोनिटस, फ्री विल बेपटिस्टस, मेत्तोडिस्टस, मर्मन्स, सेवन्त डे अडवन्टिस्टिस, ईवान्जलिकल अशोसियोशन तथा यूनिवर्शलिष्टस कहते हैं कि बचाया जाने में केवल परमेश्वर के अनुग्रह से ही नहीं, परन्तु मनुष्य का अच्छे कामों का भी उसमें अंश है।

2. यूनिटेरियन्स, केम्पबेल्लिट्टस तथा बेपटिस्टस का मानना है कि छोटे बच्चे बचाया, जा नहीं सकते है। *मरकुस 10 : 14; मत्ती 18 : 6, 10-11 यशायाह 28 : 9.*

3. केलविनिस्टिक चर्चस, केम्पबेल्लिट्टस, प्रेसबैटेरियन्स का कहना है कि जो चुने हुए है, वे एक बार बचाया जाने के बाद उनकी विश्वास का पतन नहीं हो सकता अर्थात् परमेश्वर का अनुग्रह हमेशा के लिए उनके लिए है। *गलातियों 4 : 19; लूका 8 : 13; उत्पत्ति 3.*

4. केलविनिस्टिक चर्चस, प्रेसबैटेरियन्स, कांग्रिगेशनल क्रिस्टियन्स तथा केलविनिस्टिक बेपटिस्टस कहते हैं कि जो चुने हुए नहीं है वे किस रीति से भी बचाया जा नहीं सकते। *मत्ती 11 : 28; मरकुस 16 : 15-16; प्रेरितों के काम 17 : 30; मत्ती 28 : 19-20; नीतिवचन 1 : 24; यशायाह 1 : 5, 18-20; यहेजकेल 33 : 11.*

5. क्वाकर्स कहते हैं कि पवित्र आत्मा बचाव के काम में पापि अनुष्य को विश्वास देकर मन किराने को प्रस्तुत करवाता है। ये विश्वास और पश्चताप के काम परमेश्वर के वचन से नहीं परन्तु पवित्र आत्मा अपनी ही अन्तर की प्रकाश के द्वारा करता है। *रोमियों 10 : 17; याकूब 1 : 18; 1 पतरस 2 : 2.*

6. यूनिटेरियन्स, केम्पबेल्लिट्टस, आर्मीनियन्स एवं कम्बरलेण्ड प्रसबैटेरियन्स कहना हैं कि विश्वास परमेश्वर का दान नहीं है और पवित्र आत्मा के द्वारा मनुष्य को नहीं दिया जाता है; परन्तु मनुष्य बिना पवित्र आत्मा के मदत से ही सुसमाचार सुनकर विश्वास करता है। *1 कुरिन्थियों 12 : 3; कुलुस्सियों 2 : 12; मत्ती 16 : 17; यूहन्ना 6 : 44-65.*

7. केलविनिस्टिक चर्चस, कांग्रिगेश्नल क्रिस्टियन्स, केलविनिस्टिक एवं बेपटिस्टस का विश्वास है कि बचाव के काम में परमेश्वर का अनुग्रह का कोई जरूरत नहीं है। *यशायाह 65 : 2; लूका 7 : 30; यूहन्ना 5 : 40; प्रेरितों के काम 7 : 51.*

XII. प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास के बारे में

[OF FAITH IN CHRIST]

हम निम्नलिखत शिक्षाओं का विश्वास करते है जो पवित्र शास्त्र के अनुसार है।

(A) हम विश्वास करते है कि, मसीह यीशु की अपने आपको क्रुस पर अर्पण के द्वार मानव समाज की पिता परमेश्वर के साथ मेल हो पाया और इस सम्मिलन के विषय सुसमाचार के द्वारा प्रचार किया जाता है कि अन्त में सब लोक परमेश्वर के अनुग्रह का संदेश को विश्वास कर सके। वह ऐ है कि उद्धार पाने के लिए केव्ल यीशु मसीह पर विश्वास करने के सिवाया और दूसरा कोई भी शास्ता नहीं है। मनुष्य केवल प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा ही अपनी पापों का क्षमा और छुट्कार अथवा उद्धार पाता है। (B) और यीशु पर विश्वास का मतलब है कि अपनी पापों से क्षमा प्राप्त करने के लिए दूसरा कुछ भी नहीं परन्तु संपूर्ण रीति से प्रभु यीशु मसीह पर हि भरोसा करना है।

*(a & b) **प्रेरितों के काम 10 : 43**, सब नबी उसकी साक्षी देते हैं कि प्रत्येक जो उस पर विश्वास करता है। **यूहन्ना 3 : 16-17**, क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, कि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। क्योंकि परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिए नहीं भेजा कि जगत को दोषी ठहराए, परन्तु इसलिए कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए। **यूहन्ना 3 : 36**, जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है, परन्तु वह जो पुत्र की नहीं मानता जीवन नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का प्रकोप उस पर बना रहता है।*

__इब्रानियों 11 : 1,__ विश्वास तो आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है। रोमियों 4 : 20-21.

हम निम्नलिखित गलत शिक्षाओं का इनकार और खण्डन करते हैं जो पवित्र शास्त्र के अनुसार नहीं है।

1. रोमन कत्तोलिक चर्च कहते है कि विश्वास का अर्थ सुसमाचार और उसके प्रतिज्ञाओं का उपर नहीं परन्तु सच्ची विश्वास वह है जो कलिसीयाओं की शिक्षाओं का उपर भरोसा करना है। *यूहन्ना 3 : 36; रोमियों 4 : 20-21, 2 तीमुथियुस 1 : 12; यूहन्ना 20 : 28.*

2. रोमन कत्तोलिक चर्च और यूनिवर्शलिष्टस का मानना है कि एक पापी मनुष्य उद्धार पाने के लिए और अपने पापों की क्षमा पाने के लिए यीशु मसीह के क्रूस के उपर बलिदान हुआ उस पर नहीं परन्तु सुसमाचार का उपर विश्वास करना है। *रोमियों 8 : 38-39; इब्रानियों 10 : 22; रोमियों 5 : 4; इब्रानियों 6 : 18, 38-39.*

3. यूनिटेरियन्स, चर्चस आप द न्यू जेरुसलेम, क्वाकर्स तथा मार्डनिष्टस का कहना है कि मनुष्य का विश्वास का आधार प्रभु यीशु मसीह का क्रूस पर मारा जाना और उसके धार्मिकता का उपर नहीं है। *प्रेरितों के काम 16 : 31; रोमियों 3 : 24-25, 8 : 34; गलातियों 2 : 20; 1 कुरिन्थियों 1 : 18.*

4. यूनिटेरियन्स, आर्मीनियन्स, रोमन कत्तोलिक चर्च, मेन्नोनिटस, चर्चस आप द न्यू जेरुसलेम तथा मार्डनिष्टस कहते हैं कि उद्धार पाने के लिए प्रेम और आज्ञाकारीता ही प्रमुख विषय है, परन्तु विश्वास की फल नहीं है। *गलातियों 5 : 4-6; इब्रानियों 11 : 1.*

5. रोमन कत्तोलिक चर्च तथा केलविनिस्टिक चर्चस का विश्वास यह कि चुने हुए लोगों का दिल में उद्धार का विश्वास उनके मरणसिल पापों के साथ हो सकता है। *1 यूहन्ना 2 : 3-4; 1 यूहन्ना 5 : 4; यूहन्ना 3 : 36; रोमियों 3 : 31; याकूब 2 : 14-26; इफिस्सियों 2 : 10.*

XIII. धर्मी ठहराया जाना के बारे में
[OF JUSTIFICATION]

हम निम्नलिखत शिक्षाओं का विश्वास करते है जो पवित्र शास्त्र के अनुसार है।

(A) परमेश्वर कोई भी मनुष्यों को उनका भले कामों के अनुसार ग्रहण

नहीं करता। (B) व्यवस्था का कामों के अनुसार नहीं परन्तु केवल उसका अनुग्रह के द्वारा और मसीह यीशु के कारण वे धर्मी ठहराया जाते हैं, जो प्रभु यीशु पर विश्वास करते है। परमेश्वर उनको मसीह यीशु के कारण और मसीह यीशु में ही धर्मी ठहराता है और उनको ग्रहण भी करता है, (C) इस शिद्धान्त के अनुसार यीशु मसीह के द्वारा ही हर पापी परमेश्वर के पाश आकर परमेश्वर का दया और अनुग्रह को पा सकता है। (D) मसीहि शिद्धान्त हमें यह शिखाते है कि हम अपनी भले कामों से नहीं परन्तु प्रभु यीशु पर विश्वास के कारण और केवल परमेश्वर का अनुग्रह के द्वारा पापों का क्षमा और उद्धार पाते है।

*(a) **भजन संहिता 130 : 3-4**, हे याह, यदि तू अधर्मों का लेखा लेता, तो हे प्रभु, कौन टिक पाता? परन्तु तू तो क्षमा करने वाला है, कि लोग तेरा भय मानें। **भजन संहिता 31 : 1**, हे यहोवा, मैं तेरी ही शरण में आया हूँ; मुझे कभी लज्जित न होने दे। **भजन संहिता 143 : 2**, अपने दास पर मुकदमा न चला, क्योंकि तेरी दृष्टि में कोई भी मनुष्य धर्मी नहीं।*

*(b) **रोमियों 3 : 28,** इसलिए हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि मनुष्य व्यवस्था केकामों से नहीं, वरन् विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराया जाता है। **रोमियों 3 : 22-24,** अर्थात् परमेश्वर की वह धार्मिकता जो यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा सब विश्वास करनेवालों के लिए है। कुछ भेद तो नहीं; इसलिए कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं, वे उसके अनुग्रह ही से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेंत मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं।*

__1 कुरिन्थियों 1 : 30,__ परन्तु उसी के कारण तुम मसीह यीशु में हो, जो हमारे लिए परमेश्वर की ओर से ज्ञान, धार्मिकता, पवित्रता और छुटकारा ठहरा। रोमियों 8 : 33-34 भी कृपया पढ़िए।

*(c) **1 तीमुथियुस 2 : 5**, क्योंकि परमेश्वर एक ही है और परमेश्वर तथा मनुष्यों के बीच एक ही मध्यस्थ भी है, अर्थात् मसीह यीशु, जो मनुष्य है। **रोमियों 8 : 38-39,** क्योंकि मुझे पूर्ण निश्चय है कि न मृत्यु न जीवन, न स्वर्गदूत न प्रधानताएँ, न वर्तमान न भविष्य, न शक्तियाँ, न ऊँचाई न गहराई, और न कोई सृजी हुई वस्तु हमें परमेश्वर के प्रेम से जो हमारे प्रभु यीशु मसीह में है, अलग कर सकेगी। **2 कुरिन्थियों 1 : 19-20**, क्योंकि परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह में, जिसका प्रचार तुम्हारे बीच हमने अर्थात् सिलवानुस, तीमुथियुस तथा मैंने किया,*

उस में कभी 'हां' कभी 'न' तो नहीं है, वरन् सदा 'हां' ही 'हां' है। क्योंकि परमेश्वर की जितनी भी प्रतिज्ञाएँ हैं यीशु में 'हां' ही 'हां' है। इसलिए उसके द्वारा हमारी आमीन भी परमेश्वर की महिमा के लिए होती है। रोमियों 3 : 22-25

(d) ***रोमियों 3 : 28,*** *इसलिए हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि मनुष्य व्यवस्था केकामों से नहीं, वरन् विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराया जाता है।* ***2 तीमुथियुस 1 : 9,*** *जिसने जिसने हमारा उद्धार किया, और पवित्र बुलाहट से बुलाया, हमारे कामों के अनुसार नहीं, परन्तु अपने ही उद्देश्य और अनुग्रह के अनुसार जो मसीह यीशु में अनन्तकाल से हम पर हुआ।* ***रोमियों 4 : 5,*** *परन्तु वह जी काम नहीं करता, वरन् उस पर विश्वास करता है जो भक्तिहीन को धर्मी ठहराता है, उसका विश्वास धार्मिकता गिना जाता है।* ***इफिसियों 2 : 8-9,*** *क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है– और यह तुम्हारी ओर से नहीं वरन् परमेश्वर का दान है, यह कार्यों के कारण नहीं जिससे के कोई घमण्ड करे।*

हम निम्नलिखित गलत शिक्षाओं का इनकार और खण्डन करते हैं जो पवित्र शास्त्र के अनुसार नहीं है।

1. रोमन कत्तोलिक चर्च, ईस्टर्न आर्थोडाक्स चर्च, मेन्नोनिटस, इर्विनजिट्टस, क्वाकर्स, चर्चस आप द न्यू जेरुसलेम, स्वेन्कफेल्डियन्स तथा सालवेशन आर्मि कहना हैं कि धर्मी ठहराया जाना परमेश्वर के अनुशासन के अनुसार नहीं तथा मसीह यीशु के माध्यम से भी नहीं है। वह तो पापी मनुष्य का मन किराब और भले कामों से ही प्राप्त कि जा सकता है। *रोमियों 3 : 24-25, 33-34,11 : 6.*

2. यूनिटेरियन्स, आर्मीनियन्स, मार्डनिष्टस तथा यूनिवर्शलिष्टस का कहना हैं कि पापी लोगों वास्तविक रूप से क्षमा किए गए है, लेकिन मसीह यीशु के कारण अथवा उनके धार्मिकता के कारण नहीं है। *इफिसियों 1 : 7; रोमियों 11 : 6; प्रेरितों के काम 10 : 43; 2 कुरिन्थियों 5 : 21; फिलीप्पों 3 : 9.*

3. सेवन्त डे अडवन्टिस्टिस कहते हैं कि धर्मी ठहराया जाने का मतलब सिर्फ वर्तमान कि पापों से क्षमा पाना नहीं है, परन्तु इसकी प्रतिज्ञा भविष्य के पापों की क्षमा पाना भी है। उसके लिए केवल जो पापों का स्विकार करते और उसे त्याग देते है। *रोमियों 3 : 24, 35; भजन संहिता 103 : 3.*

4. क्रिस्टियन साईन्टिस्टस का मानना है कि उनका पाप क्षमा नहीं किया गया है, परन्तु उसका प्रभाव अभि भी पड़ सकता है। *1 यूहन्ना 1 : 8-9.*

5. रोमन कत्तोलिक चर्च तथा यूनिवर्शलिष्टस का कहना हैं कि परमेश्वर तो माफ कर देता है; परन्तु हर प्रकार के पापों को नहीं। मनुष्य अपने आपको भले कामों के द्वारा परमेश्वर के दण्ड से बचाना है। *इफिसियों 2 : 4-5; 1 यूहन्ना 4 : 10; कुलिसियों 2 : 13; रोमियों 4 : 5, 10 : 4; इब्रानियों 10 : 14.*

6. ईस्टर्न कत्तोलिक चर्च, मेन्नोनिटस, चर्चस आप द न्यू जेरुसलेम, सेवन्त डे अडवन्टिस्टिस, मर्मन्स, इर्विनजिट्टस, आर्मीनियन्स, यूनिटेरियन्स, फ्री प्रोटेस्टन्टस तथा केम्पबेल्लिट्टस का कहना हैं कि मनुष्य बास्तव में विश्वास के द्वारा ही उद्धार पाता है लेकिन उस विश्वास यीशु मसीह पर नहीं, परन्तु परमेश्वर की वचन पर। विश्वास से वचनों का पालन करने के द्वारा ही उद्धार प्राप्त किया जा सकता है। *फिलिप्पियों 3 : 9; प्रेरितों के काम 10 : 43; इफिस्सियों 2 : 8-9; रोमियों 4 : 16, 10 : 1-4.*

7. केम्पबेल्लिट्टस, क्वाकर्स एवं क्रिस्टियन इसरेलिटस कहते हैं कि मनुष्य विश्वास के कामों के द्वारा ही धर्मी ठहराया जाता है। और उसकी उद्धार पाना उसकी भले कामों का ही नतीजा है। *रोमियों 3 : 22, 11 : 6.*

8. रोमन कत्तोलिक चर्च का कहना हैं कि एक मसीही विश्वासी को अपने पापों की क्षमा का निश्चित नहीं है। उसको हमेशा अपनी उद्धार के बारे में संदेह होता है। *रोमियों 5 : 1-2, 8 : 15-16.*

9. मेत्तोडिस्टस, मोरावियन्स, ईवान्जलिकल कांग्रिगेशनल, सालवेशन आर्मि तथा केलविनिस्टिक चर्चस का कहना हैं कि जिस मनुष्य परमेश्वर की अनुग्रह और करुणा का अपनी दिल में मालूम करता है केवल वह ही है जो आपनी पापों का क्षमा का निश्चित बोध कर सकता है। *यूहन्ना 20 : 29; 1 यहून्ना 3 : 20; रोमियों 4 : 18-22; याकूब 1 : 6; भजन संहिता 51 : 3, 8; भजन संहिता 51 : 10-12, 28 : 1.*

XIV. मन फिराव के बारे में
[OF REPENTANCE]

हम निम्नलिखत शिक्षाओं का विश्वास करते है जो पवित्र शास्त्र के अनुसार है।

(A) जब एक पापी मनुष्य व्यवस्था के द्वारा आपनी पापों को पहचान कर उसके लिए दुख और पश्चताप करके उन पापो को छोड़ कर यीशु मसीह पर विश्वास के द्वारा परमेश्वर के पास आता है तो उसको मन किराब कहा जाता है। (B) मन किराब का दो भागें हैः- पश्चताप और विश्वास। पश्चताप मतलब जो है व्यवस्था के अनुसार पापों को और धर्मी और न्यायी परमेश्वर की पापों के फल स्वरूप दण्ड को जानते हुए उन पापों को त्याग देना और विश्वास यीशु पर करना है, जिसने हमारे पापों के लिए क्रूस पर बली हुआ। सुसमाचार पर विश्वास करके पापों से क्षमा और यीशु मसीह पर विश्वास करके अनन्त जीवन का अधिकारी होना है। विश्वास मनुष्य के दिल में पवित्र आत्मा का काम है जिसके द्वारा पापी मनुष्य परमेश्वर की दया और अनुग्रह के माध्यम से अनन्त जीवन का अधिकारी वन जाता है।

*(a) **लूका 18 : 13,** परन्तु चुंगी लेने वाला कुछ दूर खड़ा था, उसने स्वर्ग की ओर अपनी आंखों उठाना भी न चाहा, परन्तु छाती पीटते हुए कहा, 'हे परमेश्वर, मुझ पापी पर दया कर।*

*(b & c) **भजन संहिता 51 : 17,** टूटा मन परमेश्वर के योग्य बलिदान है; हे परमेश्वर, तू टूटे और पिसे हुए ह्रदय को तुच्छ नहीं जानता।*

प्रेरितों के काम 16 : 30-31 *और उन्हें बाहर लाकर उसने कहा, "सज्जनों, उद्धार पाने के लिए मैं क्या करूँ?" उन्होंने कहा, "प्रभु यीशु पर विश्वास कर तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा।*

*(d) **2 तीमुथियुस 1 : 12,** और इसी कारण मैं ये सब दुख भी उठाता हूँ, फिर भी मैं लज्जित नहीं, क्योंकि मैं जानता हूँ कि मैंने किस पर विश्वास किया है, और मुझे पूर्ण निश्चय है कि वह मेरी धरोहर की रखवाली करने में उस दिन तक समर्थ है। **1 कुरिन्थियों 12 : 3,** इसलिए मैं तुम्हें बताए देता हूँ कि परमेश्वर के आत्मा के द्वारा कोई भी मनुष्य ऐसा नहीं कहता कि यीशु शापित है। और न पवित्र आत्मा के बिना कोई यह कह सकता है कि यीशु प्रभु है। हम इस गलत शिक्षाओं का इंकार और खण्डन करतेहै। जो पवित्र शास्त्र के अनुसार नहीं है।*

हम निम्नलिखित गलत शिक्षाओं का इनकार और खण्डन करते हैं जो पवित्र शास्त्र के अनुसार नहीं है।

1. मन फिराव अथवा पश्चताप नया नीयम के संस्कार है, जो वापतिस्मा लेने के बाद किए हुए पापों के लिए याजक के पास जाकर माफी मागना है तो है। पूरा मन से सब पापों के लिए याजक के पास जाकर माफी नगानों से क्षमा मिल जाता है और आधा कामों के द्वारा छटकारा पाने को विचार रखते है। इस रिक्षा को रोमन कत्तोलिक चर्च एवं ईस्टर्न आर्थोडाक्स चर्च कहते है। *प्रेरितों के काम 19 : 4; प्रकाशित्य 2 : 5; यशायाह 54 : 10, 66 : 2; होशे 14 : 2; लूका 24 : 46-47; इब्रानीयों 11 : 6; यिर्मयाह 31 : 19.*

2. केलविनिस्टिक चर्चस, मेत्तोडिस्टस, ईवान्जलिकल कांग्रिगेशनल चर्च, मोरावियन्स, सालवेशन आर्मि और फ्री विल बेपटिस्टस का मानना है कि मन किराब में विश्वास का अंश नहीं है अर्थात् मन किराब के लिए विश्वास का होना जरूरी नहीं है। *मत्ती 3 : 2, 5 : 6; यूहन्ना 3 : 16.*

3. रोमन कत्तोलिक चर्च, ईस्टर्न आर्थोडाक्स चर्च, मेन्नोनिटस, मर्मन्स, फ्री विल बेपटिस्टस, चर्चस आप द न्यू जेरुसलेम, यूनिटेरियन्स, यूनिवर्शलिष्टस, फ्री प्रोटेस्टन्टस, सेवन्त डे अडवन्टिस्टिस, केम्पबेल्लिट्टस, केलविनिस्टिक रिफार्म्ड चर्चस, मेत्तोडिस्टस, ईवान्जलिकल कांग्रिगेशनल तथा मोरावियन्स का विश्वास है कि मनफिराब का मतलब पाप का इंकार करना और दिल को नया करके शुद्ध बनाना है। *भजन संहिता 6 : 3-4; रोमियों 4 : 6; 1 राजा 8 : 47; यहेजकल 14 : 6; लूका 17 : 4; प्रेरितों के काम 26 : 20.*

XV. पवित्रकरण और भले कामों के बारे में [OF SANCTIFICATION AND GOOD WORKS]

हम निम्नलिखत शिक्षाओं का विश्वास करते है जो पवित्र शास्त्र के अनुसार है।

(A) भले कामों पवित्र आत्मा के द्वारा हमारे जीवन में सम्भव होता है। ये काम परमेश्वर के उपर हम रखा हुआ सच्चा विश्वास के अनुसार है। भले कामों का मतलब है परमेश्वर का वचनों का पालन करना है। (B) पवित्रीकरण अर्थात् शुद्धिकरण पवित्र आत्मा के बिना असम्भव है। लेकिन पवित्र आत्मा ही हमारे अन्तर इस भले कामों को करने के लिए हमारे मदत करता है। (C) हम हरेक को भले कामों का करना बहुत जरूरी है, पापों से छुट्कारा पाकर उन्नत जीवन का अधीकारी होने के लिए नहीं परन्तु परमेश्वर हमारे लिए किये हुए भलाई को याद

करके उनके लिए धन्यवाद देने के लिए और भी हमारे विश्वास का प्रकट करने के लिए। भले कामों का करना चाहिए।

हम निम्नलिखित शिक्षाओं का विश्वास करते है जो पवित्र शास्त्र के अनुसार है।

*(a) **मत्ती 15 : 9,** ये व्यर्थ में मेरी उपासना करते हैं, और मनुष्यों की शिक्षाओं को धर्म-सिद्धान्त करके सिखाते हैं।" **यूहन्ना : 15 : 5,** मैं दाखलता हूँ, तुम डालियाँ हो। जो मुझ में बना रहता है और मैं उसमें, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग हो कर तुम छुच भी नहीं कर सकते। **1 कुरिन्थियों 10 : 31,** अतः चाहे तुम खाओ या पीओ या जो कुछ भी करो, सब परमेश्वर की महिमा के लिए करो।*

*(b) **रोमियों 7 : 21-24,** तब मैं यह सिद्धान्त पाता हूँ कि यद्यपि मैं भलाई करना चाहता हूँ, बुराई मुझ में है। क्योंकि मैं भीतरी मनुष्यत्व में आनन्दपूर्वक परमेश्वर की व्यवस्था से सहमत रहता हूँ, परन्तु मुझे अपने अंगों में एक भिन्न व्यवस्था का बोध होता है, जो मेरे मन की व्यवस्था के विरुद्ध युद्ध करती रहती है, और पाप की व्यवस्था जो मेरे अंगों में है, उसका बन्दी बना देती है। मैं कैसा अभागा मनुष्य हूँ। मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ाएगा?*

***गलातियों 5 : 17,** क्योंकि शरीर तो पवित्र आत्मा के विरोध में और पवित्र आत्मा शरीर के विरोध में लालसा करता है। ये तो एक दूसरे के विरोधी है, कि जो तुम करना चाहते हो उसे न कर सको।*

*(c) **मत्ती 5 : 16,** तुम्हारा प्रकाश मनुष्यों के सम्मुख इस प्रकार चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देख कर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, महिमा करें।*

*[**इफिसियों 2 : 8,** क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है– और यह तुम्हारी ओर से नहीं वरन् परमेश्वर का दान है।]*

***इफिसियों 2 : 10,** क्योंकि हम उसके हाथ की कारीगरी हैं, जो मसीह यीशु में उन भले कार्यों के लिए सृजे गए हैं जिन्हें परमेश्वर ने प्रारम्भ ही से तैयार किया कि हम उन्हें करें। **याकूब 2 : 17, 18,** वैसे ही विश्वास भी, यदि उसके साथ कार्य न हो, तो अपने आप में मृतक है। परन्तु कोई कह सकता है, "तुम विश्वास करते हो और मैं कार्य करता हूँ। तुम मुझे अपना विश्वास बिना कार्य के दिखाओं, और मैं अपना विश्वास तुम्हें अपने कार्यों द्वारा दिखा ऊँगा।"*

हम निम्नलिखित गलत शिक्षाओं का इनकार और खण्डन करते हैं जो पवित्र शास्त्र के अनुसार नहीं है।

1. रोमन कत्तोलिक चर्च, आर्मीनियन्स, मेत्तोडिस्टस, ईवान्जलिकल युनैटड ब्रीत्रन, ईवान्जलिकल कांग्रिगेशनल, सालवेशन आर्मि, स्वेन्कफेल्डियन्स, यूनिटेरियन्स, मर्मन्स, सेकर्स तथा होलिनस चर्चस का मनना है कि पवित्रीकरण और भले कामों मनुष्य का जीवन में स्वभाविक है। *फिलीप्पियों 3 : 12; 1 थेसलेनिकियों 4 : 1; 2 कुरिन्थियों 4 : 16; इफिस्सियों 4 : 15; याकूब 3 : 2; यिर्मयाह 17 : 9; रोमियों 8 : 7.*

2. आर्मीनियन्स, केम्पबेल्लिट्टस, यूनिटेरियन्स, चर्चस आप द न्यू जेरुसलेम तथा क्वाकर्स का कहना है कि नया जन्म नहीं पाया हुआ एक पापी मनुष्य भी भले काम कर सकता है। *इफिसियों 2 : 10; रोमियों 14 : 23; मत्ती 7 : 16; यूहन्ना 15 : 5.*

3. रोमन कत्तोलिक चर्च एवं ईस्टर्न आर्थोडाक्स चर्च कहते हैं कि परमेश्वर के आज्ञा के बिना चर्च के कहने पर जो भले काम किया जाता है वह वास्तविक अच्छा काम कहा जाता है। *कुलुस्सियों 2 : 16-23; 1 तीमुथियूस 4 : 15.*

4. रोमन कत्तोलिक चर्च का कहना हैं कि एक धर्मी मनुष्य दूसरों की हितों के लिए भला काम करना उस के लिए असम्भव नहीं है। *यशायाह 64 : 6; लूका 17 : 10; भजन संहिता 49 : 7-8.*

5. क्वाकर्स कहते है कि मसिही लोगों की कामों हमेशा संपूर्ण भला और पवित्र होता है। *इब्रानीयों 12 : 1; रोमियों 7 : 8, 23; गलातियों 5 : 17; यशायाह 64 : 6.*

6. रोमन कत्तोलिक चर्च, ईस्टर्न आर्थोडाक्स चर्च, वाल्डेन्सियन्स, मेन्नोनिटस, केम्पबेल्लिट्टस, सेवन्त डे अडवन्टिस्टिस, क्वाकर्स, चर्चस आप द न्यू जेरुसलेम, मर्मन्स तथा क्रिस्टियन इसरेलिटस का कहना है कि भले कामों के द्वारा ही छुट्कारा पाया जाता है। *मत्ती 5 : 16; इफिसियों 2 : 9-10; यूहन्ना 3 : 16, 36.*

XVI. प्रार्थना के बारे में
[OF PRAYER]

हम निम्नलिखत शिक्षाओं का विश्वास करते है जो पवित्र शास्त्र के अनुसार है।

(A) मसीह विश्वासीओं आपने मघस्ती यीशु मसीह के द्वारा पिता परमेश्वर जो सच्चा और जीवित है, उससे बात करके आपनी जरूरतों को मांगते हैं और धन्यवाद की भेट चढाते है। इस आत्मीक सेवा को प्रार्थना कहा जाता है। (B) मसीही लोग आपने लिए और दूसरों के लिए भी प्रार्थना करते है। बिना रुकावट से विशेष करके विश्वासी भाइयों और बेहनों के लिए (C) परन्तु वे लोग मृतकों के लिए प्रार्थना नहीं करना चाहिए। (D) वे हमेशा और हर विषय के लिए प्रार्थना करते है। आपने लिए और सब लोगों के लिए यीशु मसीह पर विश्वास करके और परमेश्वर उनका प्रार्थना का उत्तर देगा करके विश्वास करते है। और विश्वास करते है कि परमेश्वर उनका इछाओं का पूरा करता है जो भी वे प्रार्थना में उनसे विनती करते है।

*(a) **भजन संहिता 10: 17,** हे यहोवा, तू ने नम्र लोगों के मन की पुकार सुनी है, तू उनके हृदयों को दृढ़ करेगा और उनकी ओर अपना कान लगाएगा। **फिलिप्पियों 4 : 6,** किसी भी बात की चिन्ता न करो, परन्तु प्रत्येक बात में प्रार्थना और निवेदन के द्वारा तुम्हारी विनती धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख प्रस्तुत की जाए।*

*(b) **1 तीमुथियुस 2 : 1-3,** अब सब से पहिले मेरा अनुरोध यह है कि विनतियां और प्रार्थनाएँ, निवेदन तथा धन्यवाद सब मनुष्यों के लिए अर्पित किए जाएँ। विशेष रूप से राजाओं और सब पदाधिकारियों के लिए, जिससे कि हम चैन और शान्ति सहित, पूर्ण भक्ति तथा गम्भीरता के साथ जीवन व्यतीत कर सकें। यह हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर की दृष्टि में भला और ग्रहणयोग्य है।*

*(c) **इब्रानियों 9 : 27,** और जैसे मनुष्यों के लिए एक ही बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त किया गया है।*

*(d) **1 तीमुथियुस 2 : 8,** मेरे सुसमाचार के अनुसार दाऊद के वंशज मृतकों में से जी उठे यीशु मसीह को स्मरण रख।*

हम निम्नलिखित गलत शिक्षाओं का इनकार और खण्डन करते हैं जो पवित्र शास्त्र के अनुसार नहीं है।

1. रोमन कत्तोलिक चर्च तथा ईस्टर्न आर्थोडाक्स चर्च कहते है कि स्वर्ग दुतो और मरे हुए साधुओं विशेष करके मरीयम जो कृपा की माता कहलाती है लोग मदत के लिए उनसे प्रार्थना करना चाहिए और उनकी स्वरूप को भी आदर

और पूजा करना चाहीए। *मत्ती 4 : 10; भजन संहिता 65 : 2; प्रकाशित वाक्य 19 : 10; यशायाह 63 : 16, 45 : 22; लूका 11 : 2-4.*

2. यूनिवर्शलिष्टस, यूनिटेरियन्स, मार्डनिष्टस, केलविनिस्टिक चर्चस एवं लाडजस का मनना है कि जब प्रार्थना की जाती है तो केवल पिता परमेश्वर की नाम से ही करना चाहिये, यीशु से और पवित्र आत्मा की नाम से नहीं। *यिर्मयाह 10 : 13-4; यूहन्ना 5 : 23; यशायाह 48 : 16-17; भजन संहिता 2 : 12.*

3. स्प्रिटिस्ट कहते है कि प्रार्थना में मरे हुए लोगों का आत्माओं को भी बुलाना चाहिए। *प्रकाशितवाक्य 19 : 10; यशायाह 63 : 16.*

4. रोमन कत्तोलिक चर्च और ईस्टर्न आर्थोडाक्स चर्च कहते हैं कि मसीही लोग मरेहुए लोगों के लिए भी प्रार्थना करना चाहिए। *व्यवस्था विवरण 4 : 2; 1 कुरिन्थियों 3 : 8; इब्रानीयों 2 : 27.*

XVII. अनुग्रह की आधार के बारे में
[OF THE MEANS OF GRACE]

हम निम्नलिखत शिक्षाओं का विश्वास करते है जो पवित्र शास्त्र के अनुसार है।

(A) पिता परमेश्वर कभी भी प्रभु यीशु मसीह के बिना मनुष्य को आत्मिक आशिष नहीं देता। इन आत्मिक आशिष जैसे की पापों की क्षमा और पवित्र आत्मा इत्यादि। वह प्रभु यीशु मसीह के द्वारा और उनका अनुग्रह के आधार पर ही यह देता है। (B) इस अनुग्रह के आधार है, सुसमाचार, पवित्र बापतिस्मा और पवित्र प्रभु भोज। (C) सुसमाचार के बारे में – प्रेरितों के काम 20 : 24, 32; रोमियों 10 : 17; पवित्र बापतिस्मा के बारे में, प्रेरितों के काम 2 : 38; तीतुस 3 : 5; पवित्र प्रभु भोज के बारे में – लूका 22 : 19-20; मत्ती 26 : 28. (D) परमेश्वर के द्वारा चुना हुआ अनुग्रह के आधार केवल सुसमाचार, बापतिस्मा और प्रभु भोज है। हमारे प्रभु यीशु मसीह कलीसिया को यह आज्ञा दी है कि समग्र जगत में जाकर सुसमाचार सुनाए और जो विश्वास करे उनको बापतिस्मा दे। मारकुस 16 : 15-16. (E) अतएव वह सब मनुष्य के लिए है, कलीसिया का मतलब मनुष्य के द्वारा बनाया भवन नहीं है। परन्तु जनता का संघठन अर्थात् विश्वासीयों का समाज है।

*(a) **1 कुरिन्थियों 1 : 21,** क्योंकि जब परमेश्वर के ज्ञान के अनुसार यह संसार अपने ज्ञान से परमेश्वर को न जान सकता, तो परमेश्वर को यह अच्छा लगा कि इस प्रचार की मूर्खता के द्वारा विश्वास करने वालों का उद्धार करें।*

***1 कुरिन्थियों 12 : 13,** क्योंकि हम सब ने, चाहे यहूदी हों या यूनानी, दास हों या स्वतन्त्र, एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिए बपतिस्मा पाया, और हमें एक ही आत्मा पिलाया गया।*

*(b & c) **प्रेरितों के काम 20 : 24, 32,** मैं अपने प्राण को किसी प्रकार भी अपने लिए प्रिय नहीं समझता, यदि समझता हूँ तो केवल इसलिए कि अपनी दौड़ को और उस सेवा को जो मुझे प्रभु यीशु से मिली है पूर्ण करूँ, अर्थात् मैं परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार की गम्भीरता-पूर्वक साक्षी दूँ। और अब मैं तुम्हें परमेश्वर और उसके अनुग्रह के वचन के हाथ सौंपता हूँ, जो तुम्हारी उन्नति कर सकता है और सब पवित्र किए गए लोगों के साथ मीरास दे सकता है।*

***रोमियों 10 : 17,** अतः विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन के द्वारा होता है। **प्रेरितों के काम 2 : 38,** पतरस ने उनसे कहा, "मन फिराओ और यीशु मसीह के नाम से तुम में से प्रत्येक बपतिस्मा ले कि तुम्हारे पापों की क्षमा हो, और तुम पवित्र आत्मा का वरदान पाओगे। **मत्ती 26 : 28,** क्योंकि यह वाचा का मेरा वह लहू है जो बहुत लोगों के निमित्त पापों की क्षमा के लिए बहाया जाने को है। **मरकुस 16 : 15, 16,** और उसने उनसे कहा, "तुम सम्पूर्ण जगत में जाओ और सारी सृष्टि को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले वह उद्धार पाएगा, परन्तु जो विश्वास न करे वह दोषी ठहराया जाएगा।*

*(e) **1 कुरिन्थियों 3 : 11,** क्योंकि उस नींव को छोड़ जो पड़ी है– और वह यीशु मसीह है– कोई दूसरी नींव नहीं डाल सकता।*

*[**यूहन्ना 6 : 63(b)** आत्मा ही है जो जीवन देता है, शरीर से कुछ लाभ नहीं। जो बातें मैंने तुमसे कही हैं, वे आत्मा और जीवन हैं।]*

हम निम्नलिखित गलत शिक्षाओं का इनकार और खण्डन करते हैं जो पवित्र शास्त्र के अनुसार नहीं है।

1. रोमन कत्तोलिक चच तथा ईस्टर्न आर्थोडाक्स चर्च कहते हैं कि अनुग्रह के आधार के जैसे ओर भी साथ आधारें हैं। *मत्ती 28 : 19, 26 : 26-28.*

2. केलविनिस्टिक चर्चस, प्रेसबैटेरियन्स, कांग्रिगेश्नल क्रिस्टियन्स, बेपटिस्टस, मेन्नोनिटस, मेत्तोडिस्टस, ईवान्जलिकल यूनाईटड ब्रीत्रन और ईवान्जलिकल कांग्रिगेशनल चर्चस का मानना है कि पवित्र बपतिसमा और पवित्र प्रभु भोज परमेश्वर के अनुग्रह के आधार नहीं है। जिसके द्वारा परमेश्वर अपना कृपा और पवित्र आत्मा देता है।

3. केलविनिस्टिक चर्चस, मेत्तोडिस्टस, बेपटिस्टस, प्रेसबैटेरियन्स और सालवेशन आर्मि मानते हैं कि परमेश्वर अपनी अनुग्रह का आधार पर केवल प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमेशा आत्मिक आशिषें परन्तु कभी कभी यूशु मसीह के तथा अनुग्रह के आधार के बिना भी अचानक अपनी मर्जी से देता है। *यशायाह 55 : 10-11; यूहन्ना 6 : 68; प्रेरितों के काम 13 : 26; 4 : 12; 1 कुरिन्थियों 6 : 11; गलातियों 3 : 26-27; इफिसियों 5 : 25-26; लूका 7 : 30.*

XVIII. व्यवस्था और सुसमाचार के बारे में [OF THE LAW AND GOSPEL]

हम निम्नलिखत शिक्षाओं का विश्वास करते है जो पवित्र शास्त्र के अनुसार है।

(A) परमेश्वर का वचन को सही तरीका से प्रचार करने के लिए व्यवस्था और सुसमाचार के बिच एक सही फरक् का पता लगाना बहुत जरूरी है। (B) व्यवस्था सब से पहले पाप को प्रकट करता है। और परमेश्वर का क्रोध को भी। जो लोक परमेश्वर का आज्ञाओं का पालन नहीं करते उन पर दण्ड का निश्चय करता है और व्यवस्था यह भी बताता है कि मनुष्य सही तरीका से परमेश्वर की आज्ञाओं के अनुसार जीना है। व्यवस्था हर भले कामोंका अर्थात् परमेश्वर का आज्ञाओं का पूरा होना दावा करता है। ता कि कोई भी मनुष्य कामों के द्वारा उद्धार पा न सके। (C) लेकिन सुसमाचार का अर्थ बिलकुल अलग है। सुसमाचार परमेश्वर का अनुग्रह से उद्धार का संदेश है। प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास के द्वारा पाया जा सकता है, जो विश्वास पवित्र आत्मा के द्वारा बिना मूल्य में मनुष्यों का दिल में दि जाति है। और उनका उद्धार हो जाता है। यह पवित्र बाइबल के वचन के द्वारा उद्धार कर्ता प्रभु यीशु मसीह पर विश्वासक के द्वारा पवित्र आत्मा का दान के रूप में दिया गया विश्वास है। व्यवस्था संपूर्ण अधिकार के साथ प्रचार की जाना चाहिए और उससे बढ़कर सुसमाचार का शुभ संदेश की सुगंध को भी फेलाना चाहिए।

(a & b) ***रोमियों 4 : 15***, *क्योंकि व्यवस्था क्रोध उत्पन्न करती है, परन्तु जहाँ व्यवस्था नहीं, वहाँ उसका उल्लंघन भी नहीं।* ***गलातियों 3 : 21,*** *तो क्या व्यवस्था परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के विरुद्ध है? कदापि नहीं। यदि ऐसी व्यवस्था दी गई होती जो जीवन प्रदान कर सकती थी तो वास्तव में धार्मिकता व्यवस्था-पालन पर निर्भर होती। (रोमियों 3 : 27 और इफिसियों 2 : 8-9)* ***व्यवस्थाविवरण 27 : 26***, *'शापित हो वह जो इस व्यवस्था के वचनों को मानकर उनको पूरा न करे। तब सब लोग कहें, 'आमीन। (रोमियों 3 : 20 और भजन संहिता 143 : 2 भी पढ़िएँ)*

(c) ***1 तीमुथियुस 1 : 15***, *यह एक विश्वासनीय और हर प्रकार से ग्रहणयोग्य बात है कि मसीह यीशु संसार में पापियों का उद्धार करने आया-जिनमें सब से बड़ा मैं हूँ।* ***यूहन्ना 3 : 16***, *क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, कि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।* ***लूका 2 : 10***, *तब स्वर्गदूत ने उनसे कहा, "डरो मत, क्योंकि देखो, मैं तुम्हें बड़े आनन्द का सुसमाचार सुनता हूँ जो सब लोगों के लिए होगा।*

(d) ***गलातियों 3 : 10***, *परन्तु जो लोग व्यवस्था के कामों पर निर्भर हैं, वे शाप के अधीन हैं, क्योंकि लिखा है, "जो कोई व्यवस्था की पुस्तक में लिखी सभी बातों का पालन नहीं करता, वह शापित है।"* ***रोमियों 1 : 17***, *क्योंकि इसमें परमेश्वर की धार्मिकता विश्वास से और विश्वास के लिए प्रकट होती है; जैसा कि लिखा है,* ***"परन्तु धर्मी मनुष्य विश्वास से जीवित रहेगा।"***

हम निम्नलिखित गलत शिक्षाओं का इनकार और खण्डन करते हैं जो पवित्र शास्त्र के अनुसार नहीं है।

1. रोमन कत्तोलिक चर्च, आर्मीनियन्स, मेत्तोडिस्टस, ईवान्जलिकल यूनाईटड ब्रीत्रन तथा ईवान्जलिकल कांग्रिगेशनल का कहना है कि सुसमाचार भले कामों का सिद्धान्त है। *1 तीमुथियुस 1 : 15; यूहन्ना 1 : 17, 3 : 16; [रोमियों 10 : 15; गलातियों 1 : 6-9; इफिसियों 6 : 15; 2 थिस्सलुनीकियों 2 : 14; 2 तीमुथियूस 1 : 10]*

2. क्वाकर्स का विश्वास है कि, सुसमाचार जो है परमेश्वर के द्वारा मनुष्य को पवित्रात्मा के बरदान के रूप में दिया गया दिव्य प्रकाशन है जो मनुष्य के अन्दर होता है। *लूका 4 : 18-19; इफिसियों 1 : 13, 2 : 17; रोमियों 10 : 17.*

3. रोमन कत्तोलिक चर्च का मानना है कि सुसमाचार की प्रतिज्ञाएँ कुछ नियमों के अनुसार है; जो परमेश्वर के द्वारा केवल उन लोगों को दिया गया है जिन्होंने परमेश्वर का आज्ञाओं का पालन करते है। *रोमियों 10 : 5-8, 11 : 6, 4 : 16; प्रेरितों के काम 16 : 31.*

4. मेत्तोडिस्टस और रोमन कत्तोलिक चर्च के लोग विश्वास करते है कि एक मनुष्य व्यवस्थाओं का पालन करने के द्वारा मसीही बन जाता है। गलातियों 3 : 2, 5, 3 : 21, 22; 2 कुरिन्तियों 3 : 6.

5. रोमन कत्तोलिक चर्च, ईस्टर्न आर्थोडाक्स चर्च, प्रेसबैटेरियन्स, कांग्रिगेश्नल क्रिस्टियन्स, फ्री विल बेपटिस्टस, बेपटिस्टस, मेन्नोनिटस, मेत्तोडिस्टस, ईवान्जलिकल यूनाईटड ब्रीत्रन, ईवान्जलिकल कांग्रिगेशनल चर्च, मोरावियन्स, क्वाकर्स, मर्मन्स और सेवन्त डे अडवन्टिस्टिस का विश्वास है कि नया नियम के मसीही विस्वासी भी व्यवस्था के अधीन में है। *इब्रानियों 10 : 1; कुलुसियों 2 : 16; गलातियों 5 : 12-13; प्रेरितों के काम 15 : 10, 28-29; रोमियों 14 : 5-6; गलातियों 4 : 10-11; मरकुस 2 : 27; गलातियों 5 : 3, 2 : 3-5.*

XIX. पवित्र संस्कारों के बारे में [OF THE SACRAMENTS]

हम निम्नलिखत शिक्षाओं का विश्वास करते है जो पवित्र शास्त्र के अनुसार है।

(A) हम विश्वास करते है कि इन संस्कारों परमेश्वर के द्वारा ठहराया गया नियम है। इस पवित्र विधियों परमेश्वर का अनुग्रह के उपर आधारित है। इस अनुग्रह उनका पवित्र और सामर्थी वचन से जुडा हुआ है। प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर आपना अनन्त अनुग्रह देता है जिसे प्रभु यीशु मसीह आपना क्रूस की पीड़ा और मृत्यु के द्वारा अधीकार किया है। (B) प्रभु यीशु मसीह हमें विशेष करके दो पवित्र संस्कारों का शिक्षा दिया है, वे है पवित्र बपतिस्मा और पवित्र प्रभुभोज।

*(a) **युहन्ना 3 : 5**, यीशु ने उत्तर दिया, "मैं तुझ से सच सच कहता हूँ कि जब तक कोई जल और आत्मा से न जन्मे, वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। **तीतुस 3 : 5**, तो उसने हमारा उद्धार किया, यह हमारे द्वारा किए गए धर्म के कामों से आधार पर नहीं, परन्तु उसने अपनी दया के अनुसार अर्थात् पवित्र आत्मा द्वारा नए जन्म और नए बनाए जाने के स्नान से किया।*

*(b) **मत्ती 28 : 18-20**; तब यीशु ने उनके पास आकर कहा, "स्वर्ग और पृथ्वी का अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिए जाओ और सब जातियों के लोगों को चेले बनाओ तथा उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और जो जो आज्ञाएँ मैंने तुम्हें दी हैं उनका पालन करना सिखाओ। और देखो, मैं युग के अन्त तक सदैव तुम्हारे साथ हूँ।" **मरकुस 16 : 15-16**, और उसने उनसे कहा, "तुम सम्पूर्ण जगत में जाओ और सारी सृष्टि को सुसमाचार प्रचार करों। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले वह उद्धार पाएगा, परन्तु जो विश्वास न करे वह दोषी ठहराया जाएगा। **लूका 22 : 19-20**, फिर रोटी लेकर जब उसने धन्यवाद दिया तो उसे तोड़कर उनको दिया और कहा, "यह मेरी देह है जो तुम्हारे लिए दी जाती है; मेरी स्मृति में ऐसा ही किया करो।" जब वे खा चुके तो उसी प्रकार उसने प्याला लेकर कहा, "यह प्याला जो तुम्हारे लिए उण्डेला गया है मेरे लहू में एक नई वाचा है।*

हम निम्नलिखित गलत शिक्षाओं का इनकार और खण्डन करते हैं जो पवित्र शास्त्र के अनुसार नहीं है।

1. रोमन कत्तोलिक चर्च और ईस्टर्न आर्थोडाक्स चर्च का मानना है कि प्रभु यीशु मसीही न केवल बपतिस्मा और प्रभु भोज इन दोनों संस्कारों का प्रचार और स्थापन किया परन्तु और अन्य पाँच संस्कारों का भी उन्होंने स्थापन किया था।

2. मेन्नोनिटस, इर्विनजिट्टस, मर्मन्स और सिक्स प्रिन्सिपल बेपटिस्टस का मानना है कि पवित्र बपतिस्मा और पवित्र प्रभु भोज के जैसे अन्य संस्कारों और भी है; वे है पोडोसियों का पेर धोना, शिर पर हाथ रखकर प्रार्थना करना और विमारियों को तेल लगा कर अभीषेक करना इत्यादि।

3. केलविनिस्टिक चर्चस, एपिस्कोपालियन्स, प्रेसबैटेरियन्स, कांग्रिगेशनल क्रिस्टियन्स, बेपटिस्टस, मेन्नोनिटस, आर्मीनियन्स, मेत्तोडिस्टस, ईवान्जलिकल यूनाईटड ब्रीत्रन, ईवान्जलिकल कांग्रिगेशनल चर्च तथा फ्री प्रोटेस्टन्टस कहना हैं कि इन संस्कारों अनुग्रह का आधार तो नहीं है परन्तु अनुग्रह का लक्षण और चिन्ह है। *इफिसियों 5 : 25-27; लूका 7 : 30; 1 पतरस 3 : 21.*

4. क्वाकर्स और यूनिटेरियन्स का कहना हैं कि इन संस्कारों का हर एक कलीसियाओं के द्वारा पालन नहीं किया जाता और इन सरकारों वास्तविक

अनुग्रह का आधार नहीं है। *लूका 7 : 30; मत्ती 26 : 27; 1 कुरिन्थियों 11 : 26; 1 पतरस 3 : 21.*

XX. पवित्र बपतिस्मा के बारे में
[OF HOLY BAPTISM]

हम निम्नलिखत शिक्षाओं का विश्वास करते है जो पवित्र शास्त्र के अनुसार है।

(A) पवित्र बपतिस्मा में जल साधारण जल नहीं है परन्तु परमेश्वर की आज्ञा ओर उनका वचन से जुड़ा हुआ है। (B) जैसे परमेश्वर का वचन कहता है ऐसे ही पवित्र बपतिस्मा विश्वास करनेवालों की पापों से क्षमा, देती है; मृत्यु और शैतान से छुट्कारा देती है तथा अनन्त जीवन परमेश्वर का प्रतीझा के अनुसार प्रदान करती है। (C) पवित्र बपतिस्मा में केवल जल उपर में लिखा गया आशिषों का प्रदान नही कर सकती लेकिन जल में परमेश्वर का वचन सामर्थ और बपतिस्मा लेनेवालों का विश्वास जो परमेंश्वर का वचन पर है इन आशिर्वाद का प्रदान करता है। कारण परमेश्वर का वचन के बिना जल साधारण है और कोई बपतिस्मा नहीं परन्तु जब परमेश्वर का वचन जल से मिल जाता है तब जल बपतिस्मा का अनुग्रह की और जीवन की जल में बदल जाता है और पवित्रात्मा के द्वारा नया जीवन का प्रदान करता है। (D) बपतिस्मा दर्शाता है कि हमारे अन्तर पुराना आदम अर्थात् हर प्रकार कि पापों का और शारीरिक लालसाओं का हमारे पश्चताप के द्वारा मृत्यु हो जाता है और एक नया आत्मिक मनुष्य हर दिन हमारे अन्दर उठ खाडा हो जाता है। जिस आत्मिक मनुष्य परमेश्वर के लिए धार्मिकता के साथ अनन्त काल के लिए जीने को तयार हो जाता है।

(a) ***मत्ती 28 : 19-20,*** *इसलिए जाओ और सब जातियों के लोगों को चेले बनाओ तथा उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो और जो आज्ञाएँ मैंने तुम्हें दी हैं उनका पालन करना सिखाओ। और देखो, मैं युग के अन्त तक सदैव तुम्हारे साथ हूँ।* ***मरकुस 16 : 15-16,*** *और उसने उनसे कहा, "तुम सम्पूर्ण जगत में जाओ और सारी सृष्टि को सुसमाचार प्रचार करों। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले वह उद्धार पाएगा, परन्तु जो विश्वास न करे वह दोषी ठहराया जाएगा।*

(b) ***प्रेरितों के काम 2 : 38,*** *पतरस ने उनसे कहा, "मन फिराओ और यीशु मसीह के नाम से तुम में से प्रत्येक बपतिस्मा लो कि तुम्हारे पापों की क्षमा हो, और तुम पवित्र आत्मा का वरदान पाओगे।* ***यूहन्ना 3 : 5,*** *यीशु ने उत्तर दिया, "मैं तुझ से सच सच कहता हूँ कि जब तक कोई जल और आत्मा से न जन्मे, वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।* ***गलातियों 3 : 26-27,*** *क्योंकि तुम सब उस विश्वास के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो। तुम में से जितनों ने मसही में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है। तीतुस 3 : 5; 7 इफिसियों 5 : 25-27; मरकुस 1 : 4.*

(c) ***मरकुस 16 : 16,*** *जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले वह उद्धार पाएगा, परन्तु जो विश्वास न करे वह दोषी ठहराया जाएगा।* ***तीतुस 3 : 5, 7,*** *तो उसने हमारा उद्धार किया, यह हमारे द्वारा किए गए धर्म के कामों की आधार पर नहीं, परन्तु उसने अपनी दया के अनुसार अर्थात् पवित्र आत्मा द्वारा नए जन्म और नए बनाए जाने के स्नान से किया, कि उसके अनुग्रह के द्वारा हम धर्मी ठहराए जाकर अनन्त जीवन की आशा के उत्तराधिकारी बनें।* ***इफिसियों 5 : 26,*** *कि उसका वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध करके पवित्र बनाए।*

(d) ***1 कुरिन्थियों 12 : 13,*** *क्योंकि हम सब ने, चाहे यहूदी हों या यूनानी, दास हों या स्वतन्त्र, एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिए बपतिस्मा पाया, और हमें एक ही आत्मा से पिलाया गया।*

हम निम्नलिखित गलत शिक्षाओं का इनकार और खण्डन करते हैं जो पवित्र शास्त्र के अनुसार नहीं है।

1. यूनिटेरियन्स, क्वाकर्स, सालवेशन आर्मि, सेकर्स और मार्डनिष्टस का विश्वास है कि बपतिस्मा का पालन और स्थापना प्राचीन कलीसिया के द्वारा किया जाता था परन्तु अब बपतिस्मा का सामर्थ नहीं है। *मत्ती 28 : 19; यूहन्ना 3 : 5-6.*

2. केलविनिस्टिक चर्चस, एपिस्कोपालियन्स, प्रेसबैटेरियन्स, कांग्रिगेश्नल क्रिस्टियन्स, बेपटिस्टस तथा मर्मन्स का कहना है कि केवल अभीषेक पाया हुआ और चुना हुआ सेवक ही बपतिस्मा दे सकता है। *(यूहन्ना 3 : 5)*

3. ईस्टर्न आर्थोडाक्स चर्च, बेपटिस्टस, केम्पबेल्लिट्टस, सेवन्त डे अडवन्टिस्टिस एवं मर्मन्स कहना है कि बपतिस्मा देने के लिए सिरिफ डुब्की का

तरीका ही सही तरीका है। *मरकस 7 : 4; लूका 11 : 38; प्रेरितों के काम 1 : 5; प्रेरितों के काम 2 : 16-17; इब्रानियों 10 : 22, 11 : 29; प्रेरितों के काम 22 : 16.*

4. रोमन कत्तोलिक चर्च और ईस्टर्न आर्थोडाक्स चर्च का मानना है कि बपतिस्मा एक मसीही विस्वासी का संपूर्ण जीवन के लिए लाभ दायक नहीं है परन्तु उसका बपतिस्मा लेने से पहले किया हुआ जन्म पापों को मिटाता है। *1 कुरिन्थियों 6 : 11; गलातियों 2 : 27, 5 : 27; रोमियों 7 : 18-21; 1 तीमुथियुस 1 : 15.*

5. केलविनिस्टिक चर्चस, एपिस्कोपालियन्स, प्रेसबैटेरियन्स, कांग्रिगेश्नल क्रिस्टियन्स, बेपटिस्टस, मेन्नोनिटस, मेत्तोडिस्टस, ईवान्जलिकल यूनाईटड ब्रीत्रन, मोरावियन्स चर्चस आप द न्यू जेरुसलेम तथा अडवन्टिस्टस का कहना है कि बपतिस्मा पापों का क्षमा दे नहीं सकता है परन्तु यह तो एक चिन्ह है और पापों की क्षमा का एक छवि है। *मरकुस 1 : 4; रोमियों 6 : 3; तितुस 3 : 5.*

6. केम्पबेल्लिट्टस तथा मर्मन्स कहते हैं कि आज्ञाकारीता और विश्वास के काम के रूप में बपतिस्मा पाप क्षमा का काम करता है। *मरकुस 16 : 16; तितुस 3 : 5; गलातियों 3 : 26-27; 1 कुरिन्थियों 6 : 11.*

7. सेवन्त डे अडवन्टिस्टिस के लोगों का मानना है कि बपतिस्मा इस समय के लिए पाप क्षमा का काम नहीं कर सकता है, परन्तु आनेवाला दिनों में मसीह का एक हजार वर्ष कि साशन काल के समय में पापों का क्षमा के लिए काम करेगा। *(1 पतरस 3 : 21)*

8. यूनिटेरियन्स, फ्री प्रोटेस्टन्टस एवं केलविनिस्टिक चर्चस कहती हैं कि बपतिस्मा नया जन्म का प्राख्यालन नहीं है, परन्तु कलीसिया में सामिल होने के लिए एक नियम है।

9. क्वाकर्स और सालवेशन आर्मि कहते हैं कि पानी की बपतिस्मा नहीं परन्तु पवित्र आत्मा की बपतिस्मा ही उद्धार का काम करता है। *तितुस 3 : 5.*

10. मेन्नोनिटस, केम्पबेल्लिट्टस तथा बेपटिस्टस कहते हैं कि जो लोग बचपन में बपतिस्मा लिये है वे जब बड़ा हो जाते है तब फिर से बपतिस्मा देना चाहिए। *2 तीमुथियुस 2 : 13; रोमियों 3 : 3-4 और 11 : 29 [1 पतरस 3 : 21; कुलुस्सियों 2 : 11-12; इफिसियों 5 : 25-27]*

11. मर्मन्स कहते हैं कि मृतकों की लाभ के लिए भी जीवितों के द्वारा बपतिस्मा लिया जा सकता है। *प्रेरितों के काम 2 : 38; इब्रानियों 2 : 4, 29 : 27.*

12. केलविनिस्टिक चर्चस, प्रेसबैटेरियन्स तथा मेन्नोनिटस का विश्वास करते हैं कि मसीह परिवार के बच्चें बपतिस्मा के बिना ही परमेश्वर के नजर में पवित्र है। *यूहन्ना 3 : 5-6; इफिसियों 2 : 3; भजन संहिता 51 : 7; यूहन्ना 1 : 13.*

13. मार्डनिष्टस, मर्मन्स एवं सेक्टेरियन चर्चस का मानना है कि हर एक बच्चे जन्म से निर्दोष और पवित्र है।

14. मेन्नोनिटस, बेपटिस्टस, केम्पबेल्लिट्टस, मर्मन्स तथा सेवन्त डे अडवन्टिस्टिस कहते हैं कि छोटे बच्चों को बपतिस्मा देना कोई जरूरी नहीं है। *मत्ती 28 : 20; यूहन्ना 3 : 5-6; मरकुस 16 : 15 और 10 : 13-16.*

15. यूनिटेरियन्स, सालवेशन आर्मि, क्वाकर्स तथा ईवान्जलिकल यूनाईटड ब्रीत्रन कहते हैं कि छोटे बच्चों का बपतिस्मा देना कलीसिया की ऐसा एक काम है जो किया जा सकता है और नहीं भी, परन्तु इस बात कलीसिया का उपर निर्भर करता है। *मरकुस 10 : 14; मत्ती 18 : 10-11.*

16. रोमन कत्तोलिक चर्च, ईस्टर्न आर्थोडाक्स चर्च, केलविनिस्टिक चर्चस इन जनरल, एपिस्कोपालियन्स, आर्मीनियन्स, मेत्तोडिस्टस, ईवान्जलिकल यूनाईटड ब्रीत्रन, ईवान्जलिकल कांग्रिगेशनल, मेन्नोनिटस, केम्पबेल्लिट्टस, सेवन्त डे अडवन्टिस्टिस और मार्डनिष्टस मानते हैं कि छोटे बच्चें विश्वास नहीं कर सकते है। *मरकुस 18 : 10-11; मत्ती 18 : 1-6; मरकुस 10 : 15.*

XXI. पवित्र प्रभु भोज के बारे में [OF THE SACRAMENT OF THE ALTAR OR THE LORD'S SUPPER]

हम निम्नलिखत शिक्षाओं का विश्वास करते है जो पवित्र शास्त्र के अनुसार है।

(A) हम विश्वास करते है कि प्रभु भोज में रोटि और दाख रस सचमुच मसीह का देह और लहू है जिसे हम खाते और पीते है। इस विधि का हमारे प्रभु यीशु मसीह स्वयं स्थापना किया है और इसे कलीसिया में पालन करने का आज्ञा दी है। (B) प्रभु भोज में खाने का और पीने का लाभ निम्नलिखित वचन के द्वारा हमें दिखाया गया है। "तुम्हारा पापों की क्षमा के लिए बलीदान के रूप में दिया गया शरीर और बुहाया गया लहु यहीं है।" विशेष करके प्रभु भोज में इस वचन

के द्वारा पापों की क्षमा और अनन्त जीवन विस्वास करनेवालों को दिया गया है। क्योंकि जहाँ पापों की क्षमा है वहाँ उद्धार और अनन्त जीवन भी है। प्रभु भोज में (C) सारीरिक भोजन उन अशिषों को नहीं लाता है परन्तु इस में अंगिकार किए हुए वचन है जो आशिषों को लाता है। लिखा हुआ वचन को विश्वास के साथ कहा जाता है– "तुमहारा पापों की क्षमा के लिए दिए गया शरीर और बुहाये गया लहु है।" इस वचन ही प्रभु भोज में मुख्य विषय है। इस वचन के अनुसार जो विश्वास के साथ ग्रहण करते है वे पापों से क्षमा प्राप्त करते है। (D) उपवास और शारीरिक तैयारी का यहाँ जरूरी है परन्तु वास्तविक इसके लिए दिल की विश्वास ही मुख्य रूप से चाहिए। लेकिन जो विश्वास नहीं करते परन्तु संदेह करते है वे प्रभु भोज के लिए यग्य नहीं है। वे उस आशिष को प्राप्त नहीं कर सकते है; जो विश्वास करने वालों के लिए है।

*(a) **लूका 22 : 19-20**, फिर रोटी लेकर जब उसने धन्यवाद दिया तो उसे तोड़कर उनको दिया और कहा, "यह मेरी देह है जो तुम्हारे लिए दी जाती है; मेरी स्मृति में ऐसा ही किया करो।" जब वे खा चुके तो उसी प्रकार उसने प्याला लेकर कहा, "यह प्याला जो तुम्हारे लिए उण्डेला गया है। मेरे लहू में एक नई वाचा है। **मत्ती 26 : 26-28**, जब वे भोजन कर रहे थे, यीशु ने रोटी ली और आशिष मांगकर तोड़ी और चेलों के देकर कहा, "लो, खाओ; यह मेरी देह है।" फिर उसने प्याला लेकर धन्यवाद दिया और उन्हें देते हुए कहा, "तुम सब इसमें से पियो। क्योंकि यह वाचा का मेरा वह लहू है जो बहुत लोगों के निमित्त पापों की क्षमा के लिए बहाया जाने को है। **गलातियों 3 : 15**, भाइयो, मैं मानवीय सम्बन्धों की रीति पर कहता हूँ: मनुष्य का वसीयतनामा भी जब एक बार निश्चित हो जाता है तो उसे कोई रद्द नहीं करता और न उसमें कुछ जोड़ता है। 1 किरिन्थियों 11, 24-26; मरकुस 14 : 22-24 भी पढिएः-*

*(b) **मत्ती 11 : 28**, हे सब थके और बोझ से दबे लोगों, मेरे पास आओ : मैं तुम्हें विश्राम दूँगा। **1 कुरिन्थियों 11 : 28, 29**, अतः मनुष्य अपने आप को परखे तब इस रोटी को खाए और इस कटोरे में से पीए। क्योंकि जो खाता और पीता है, यदि उचित रीति से प्रभु की देह को पहिचाने बिना खाता पीता है तो अपने ऊपर दण्ड लाने के लिए ही ऐसा करता है।*

*(c) **मरकुस 9 : 24**, बालक के पिता ने तुरन्त चिल्लाकर कहा, "मैं विश्वास करता हूँ, मेरे अविश्वास का उपचार कर।*

(d) ***भजन संहिता 22 : 26**, दीन लोग भोजन कर के तृप्त होंगे; जो यहोवा के खोजी हैं वे उसकी स्तुति करेंगे– तुम्हारे प्राण सर्वदा जीवित रहें!*

हम निम्नलिखित गलत शिक्षाओं का इनकार और खण्डन करते हैं जो पवित्र शास्त्र के अनुसार नहीं है।

1. क्वाकर्स, सेकर्स और सालवेशन आर्मि कहते हैं कि प्रभु यीशु मसीह प्रभु भोज की संस्कार को हमेशा के लिए स्थापित नहीं किया है। इसे चाहित तो पालन किया जा सकता या नहीं। नहीं करने से भी कोई नुकसान नहीं है। *मरकुस 14 : 24; 1 किरिन्थियों 11 : 240-25; गलातियों 3 : 15.*

2. केलविनिस्टिक चर्चस, कांग्रिगेश्नल क्रिस्टियन्स, बेपटिस्टस, मेत्तोडिस्टस, आर्मीनियन्स, प्रेसबैटेरियन्स, मेन्नोनिटस, यूनिटेरियन्स, ईवान्जलिकल कांग्रिगेशनल चर्च और मोरावियन्स कहते हैं कि प्रभु भोज में कहजाने वाली वचनों का गम्भीरता से लिया जाना चाहिए। इसे सिर्फ साधारण रूप से मुख की पातों से नहीं परन्तु संपूर्ण दिल से लिया जाना चाहिए। *गलातियों 3 : 15; 1 कुरिन्थियों 10 : 16 और 11 : 26-28.*

3. रोमन कत्तोलिक चर्च कहते हैं कि प्रभु भोज में केवल रोटि ही दिया जाना चाहिए। *मरकुस 14 : 23; गलातियों 3 : 15.*

4. मर्मन्स कहते हैं कि प्रभु भोज में प्रभु यीशु मसीह के द्वारा इस्तेमाल किया गया रोटी ओर दाख रस से भिन्न अन्य उपकरणें का भी इस्तमाल किया जा सकता है। *मत्ती 26 : 26-29; लूका 22 : 18; गलातियों 3 : 15.*

5. केलविनिस्टिक चर्चस, प्रेसबैटेरियन्स, कांग्रिगेश्नल क्रिस्टियन्स, बेपटिस्टस, आर्मीनियन्स, मेन्नोनिटस, केम्पबेल्लिट्टस, यूनिटेरियन्स तथा क्वाकर्स कहते हैं कि जैसे क्रूस पर प्रभु यीशु मसीह का शरीर का तोड़ा गया था ऐसे ही प्रभु भोज में रोटि का तोड़ा जाना चाहिए। (*यूहन्ना 19 : 33.)*

6. केलविनिस्टिक चर्चस, एपिस्कोपालियन्स, प्रेसबैटेरियन्स, कांग्रिगेश्नल क्रिस्टियन्स, बेपटिस्टस, आर्मीनियन्स, मेत्तोडिस्टस, ईवान्जलिकल यूनाईटड ब्रीत्रन, यूनिटेरियन्स, मेन्नोनिटस, सेवन्त डे अडवन्टिस्टिस, यूनिवर्शलिष्टस, केम्पबेल्लिट्टस और मर्मन्स मानते हैं कि प्रभु भोज में दिया जानेवाला रोटि और दाख रस वास्तविक यीशु की मांस और लहु नहीं है। *मत्ती 26 : 26-28; 1 कुरिन्थियों 10 : 16; भजन संहिता 33 : 4; लूका 1 : 37.*

7. केलविनिस्टिक चर्चस, ईवान्जलिकल कांग्रिगेशनल चर्च, एपिस्कोपालियन्स, प्रेसबैटेरियन्स, कांग्रिगेश्नल क्रिस्टियन्स, बेपटिस्टस, आर्मीनियन्स, मोरावियन्स, मेत्तोडिस्टस, सालवेशन आर्मि और ईवान्जलिकल यूनाईटड ब्रीत्रन विश्वास करते हैं कि प्रभु भोज में विश्वास के साथ आत्मिक रीति से रोटी और दाख रस लिया जाता है परन्तु वह वास्तविक यीशु कि मांस और लहू नहीं है। *1 कुरिन्थियों 10 : 16; और 11 : 27; मत्ती 26 : 26-28.*

8. रोमन कत्तोलिक चर्च कहते हैं कि रोटि और दाख रस प्रभु भोज में यीशु की मांस और लहु में बदल जाता है। *1 कुरिन्थियों 10 : 16.*

9. रोमन कत्तोलिक चर्च कहते हैं कि जैसे प्रभु यीशु मसीह का आराधना किया जाता है ऐसे ही उनका शरीर का भी किया जाना चाहिए। *मत्ती 26 : 26-27.*

10. केलविनिस्टिक चर्चस, कांग्रिगेश्नल क्रिस्टियन्स, प्रेसबैटेरियन्स, बेपटिस्टस, मेत्तोडिस्टस, ईवान्जलिकल यूनाईटड ब्रीत्रन, ईवान्जलिकल कांग्रिगेशनल चर्च, मेन्नोनिटस, फ्री विल बेपटिस्टस, केम्पबेल्लिट्टस, मर्मन्स, स्वीडनबोर्जियन्स, यूनिटेरियन्स और यूनिवर्शलिष्टस मानते हैं कि प्रभु भोज वास्तव में पापों का क्षमा नहीं है, परन्तु व तो प्रभु यीशु का स्मरण में किया जाता है। *लूका 22 : 19-20; मत्ती 26 : 26-28.*

11. केलविनिस्टिक चर्चस, एपिस्कोपालियन्स, कांग्रिगेश्नल क्रिस्टियन्स, बेपटिस्टस, मेत्तोडिस्टस तथा ईवान्जलिकल कांग्रिगेशनल कहते हैं कि जो अयोग्यता से प्रभु भोज लेते है वै सचमुच मसीह का मांस और लहु का भागी नहीं बन सकते और पाप की क्षमा नहीं पा सकते वरन् दण्ड की योग्य बन जातें हैं। *1 कुरिन्थियों 11 : 27-29.*

12. रोमन कत्तोलिक चर्च और ईस्टर्न आर्थोडाक्स चर्च कहते हैं कि प्रभु भोज छोटे बच्चों को भी दिया जाना चाहिए। *1 कुरिन्थियों 11 : 28-29.*

13. रोमन कत्तोलिक चर्च और ईस्टर्न आर्थोडाक्स चर्च कहते हैं कि पवित्र सेवकों और याजकों प्रभु भोज में, प्रभु यीशु मसीह का शरीर लहु के बिना ही जीन्दों और मृतोकों की पापों के लिए देना चाहिए। *मत्ती 26 : 26-27; 1 कुरिन्थियों 11 : 26; इब्रानियों 10 : 18 और 9 : 22; 1 पतरस 3 : 18.*

XXII. कलीसिया के बारे में
[OF THE CHURCH]

हम निम्नलिखत शिक्षाओं का विश्वास करते है जो पवित्र शास्त्र के अनुसार है।

(A) हम विश्वास करते है कि संसार में केवल एक ही पवित्र कलीसिया है; जो मसीह के द्वारा उनके वचन के अनुसार एकत्रीत, संगठित, सुरक्षित और अनुसाक्षित है। (B) इस सच्ची कलीसिया की सदस्य वे है जिन्होंने प्रभु यीशु मसीह को अपना जीवन की सच्चा उद्धार कर्त्ता के रूप में विस्वास करते हैं तथा मानते है। (C) इस एक मात्र पवित्र कलीसिया जो कि समस्त विश्वासीयों का समूह एवं सहमागिता में हैं वह अदृश्य है इस अदृश्य कलीसिया दृश्य कलीसिया के अन्तर में है, जो कि समस्त मसीहो शिद्धान्तों का शिक्षा देती है और समस्त संस्कारों का भी पालन करवाती है। (D) सच्ची मसीह कलीसिया के शिवाय और भी कुछ कलीसियाएँ है जो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार तथा उनके वचन के अनुसार नहीं है। उनका विश्वास मनुष्यों की परमेपराएँ और विधियों का उपर आधारित है। (E) परमेश्वर चाहता है कि कलीसिया उनके इच्छा के अनुसार और वचन के उपर आधारित हो तथा उसके सब के सब विश्वासी का संगठन एक हो। (F) हर प्रकार कि गलत और झुठी शिक्षाओं का माननेवाली कलीसियाओं के कारण प्रभू यीशु मसीह का सही शिक्षाओं का अस्वीकार किया जाता है और फल स्वरूप अनेक विभाजन उत्पन्न हो जाता है और सत्य मार्ग का निन्हा होती है। (G) हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा कलीसिया को दिया गया हर एक अध्यात्मिक आशिषें और अधिकार सिर्फ पोप, बिशपों, पास्टटरों और प्रेरितों जैसे कुछ व्यक्तियों को ही नहीं परन्तु हर विश्वासी को भी इसमें भागी किया जाना चाहिए और समानता में अधिकार दिया जाना चाहिए। (H) सच्ची कलीसिया में हर विश्वासी का अधिकार और कर्तव्य भी है कि वे कलीसिया की न्याय और सिद्धांतों का विचार करे। (I) कलीसिया की हर अनुशासन और कानून वचन के अनुसार ही आधारित और निर्यात्रित होना चाहिए।

(a) ***इफिसियों 2 : 19-22****, अतः तुम अब विदेशी और अजनबी न रहे, परन्तु पवित्र लोगों के संगी स्वदेशी और परमेश्वर के कुटुम्ब के बन गए हो। और प्रेरितों तथा भविष्यद्वक्ताओं की नींव पर, जिसके कोने का पत्थर मसीह यीशु स्वयं है, बनाए गए हो। जिसमें सम्पूर्ण रचना एक साथ मिलकर प्रभु, में एक*

पवित्र मन्दिर बनती जाती है, जिसमें तुम भी आत्मा के द्वारा परमेश्वर का निवासस्थान होने के लिए एक साथ बनाए जाते हो। ***रोमियों 12 : 5,*** *वैसे ही हम भी जो अनेक हैं, मसीह में एक देह हैं, और एक दूसरे के अंग हैं।* ***1 कुरिन्थियों 12 : 27,*** *इसी प्रकार तुम मसीह की देह हो और एक एक करके उसके अंग हो।*

(b) ***मत्ती 16 : 18,*** *मैं तुझ से यह भी कहता हूँ कि तू पतरस है और इसी चट्टान पर मैं अपनी कलीसिया बनाऊँगा, और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।* ***यूहन्ना 11 : 51-52,*** *परन्तु यह उसने अपने आप नहीं कहा पर उस वर्ष का महायाजक होते हुए भविष्यद्वाणी की, कि यीशु अपनी जाति के लिए मरेगा, न केवल जाति के लिए वलन् इसलिए भी कि परमेश्वर की तितर-बितर सन्तानों को एक कर दे।* ***प्रेरितों के काम 16 : 31,*** *उन्होंने कहा, "प्रभु यीशु पर विश्वास कर तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा।*

(c) ***मत्ती 28 : 19-20,*** *इसलिए जाओ और सब जातियों के लोगों को चेले बनाओ तथा उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बहपतिस्मा दो, और जो जो आज्ञाएँ मैंने तुम्हें दी हैं उनका पालन करना सिखाओ। और देखो, मैं युग के अन्त तक सदैव तुम्हारे साथ हूँ।"* ***मरकुस 16 : 15-16,*** *और उसने उनसे कहा, "तुम सम्पूर्ण जगत में जाओ और सारी सृष्टि को सुसमाचार प्रचार करों। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले वह उद्धार पाएगा, परन्तु जो विश्वास न करे वह दोषी ठहराया जाएगा।* ***1 पतरस 4 : 11,*** *जो भी उपदेश दे, वह ऐसे दे मानो परमेश्वर ही का वचन देता हो। जो सेवा करे, उस सामर्थ्य से करे जो परमेश्वर देता है, जिस से सब बातों में यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर की महिमा हो। महिमा और अधिकार युगानुयुग उसी का है। आमीन।*

(d) ***मत्ती 7 : 15,*** *झूठे नबियों से सावधान रहो जो भेड़ों के वेश में तुम्हारे पास आते हैं, परन्तु भीतर से वे भूखे, फाड़-खाने वाले भेड़िए हैं।* ***2 यूहन्ना 10 : 11,*** *यदि कोई तुम्हारे पास आए और यही शिक्षा न दे, तो न उसे अपने पर में आने दो और न नमस्कार करो; क्योंकि जो ऐसे मनुष्य को नमस्कार करता है, वह उसके कुकर्मों में सहभागी होता है।* ***1 यूहन्ना 4 : 1,*** *प्रियो, प्रत्येक आत्मा की प्रतीति न करो, परन्तु आत्माओं को परखो कि वे परमेश्वर की ओर से हैं या नहीं; क्योंकि संसार में अनेक झूठे नबी निकल पड़े हैं। भजन संहिता 26 : 5-6; मत्ती 10 : 32, 33; गलतियों 5; 9 भी पढिए:-*

*(e) **गलातियों 5 : 9**, थोड़ा सा ख़मीर गूंधे हुए पूरे आटे को ख़मीरा कर देता है। **2 तीमुथियुस 2 : 17**, और उनकी बातें संड़े घाव की तरह फैलेंगी। हुमिनयुस और फिलेतुस उन्हीं में से हैं। **रोमियों 16 : 17-18**, अब हे भाइयो मैं तुमसे बिनती करता हूँ कि उस शिक्षा के विपरीत जो तुमने पाई है, उसमें जो लोग फूट और रुकावट डालते हैं, उन्हें ताड़ लिया करो और उनसे दूर रहो। क्योंकि ये मनुष्य हमारे प्रभु यीशु मसीह के नहीं, परन्तु अपने पेट के दास हैं; और अपनी चिकनी-चुपड़ी बातों से सीधे-सादे लोगों को बहका देते हैं। 1 कुरिन्थियों 10 : 21 भी पढिए:-*

*(f) **1 राजा 18 : 21**, और एलिय्याह ने सब लोगों के समीप आकर कहा, "तुम कब तक दो विचारों में लटके रहोगे? यदि यहोवा ही परमेश्वर हो तो उसके पिछे हो लो, और यदि बाल हो तो उसके पीछे हो लो।" परन्तु लोगों ने उसके उत्तर में एक भी बात न कही। **इफिसियों 4 : 3-5**, और यत्न करो कि मेल के बन्धन में आत्मा की एकता सुरक्षित रहे। एक ही देह है और आत्मा भी एक है : ठीक उसी प्रकार अपनी बुलाहट की एक आशा में तुम भी बुलाए गए थे। एक ही प्रभु, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा। **2 कुरिन्थियों 6 : 14-18**, अविश्वासियों के साथ असमान जुए में न जुतो, क्योंकि धार्मिकता का अधर्म से क्या मेल? या ज्योति की अन्धकार से क्या संगति? और मसीह का बलियाल से क्या लगाव? या विश्वासी का अविश्वासी से क्या सम्बन्ध? या मूर्तियों से परमेश्वर के मन्दिर का क्या समझौता? क्योंकि हम तो जीवित परमेश्वर के मन्दिर हैं, जैसा कि परमेश्वर ने कहा, **"मैं उन में निवास करूँगा और उनमें चला फिरा करूँगा और मैं उनका परमेश्वर होऊँगा और वे मेरे लोग होंग।"** इसलिए प्रभु कहता है, **"उनमें से निकलो और अलग हो जाओ, और जो कुछ अशुद्ध है उसे न छुओ तो मैं तुम्हें ग्रहण करूँगा; और मैं तुम्हारा पिता होऊँगा और तुम मरे बेटे और बेटियाँ होगे।" सर्वशक्तिमान प्रभु यह कहता है।***

*(g) **1 कुरिन्थियों 3 : 21**, इसलिए मनुष्यों पर कोई घमण्ड न करे, क्योंकि सब कुछ तुम्हारा है। **मत्ती 16 : 15-19**, उसने उनसे कहा, "पर तुम क्या कहते हो? मैं कौन हूँ?" शमौन पतरस ने उत्तर दिया, "तू जीवित परमेश्वर का पुत्र मसीह है।" यीशु ने उस से कहा, "हे शमौन, योना के पुत्र, तू धन्य है, क्योंकि मांस और लहू ने इसे तुझ पर प्रकट नहीं किया, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है। मैं तुझ से यह भी कहता हूँ कि तू पतरस है और इसी चट्टान पर मैं अपनी कलीसिया बनाऊँगा, और*

अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे। मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियां दूंगा, और जो कुछ तू पृथ्वी पर बांधेगा वह स्वर्ग में बंधेगा, और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा वह स्वर्ग में खुलेगा। ***मत्ती 18 : 17-20,*** *यदि वह उनकी भी न सुने तो कलीसिया से कह। यदि वह कलीसिया की भी न सुने तो वह तेरे लिए अन्यजाति और कर वसूल करने वाले के समान ठहरें। मैं तुम से कहता हूँ, जो कुछ तुम पृथ्वी पर बांधोगे, वह स्वर्ग में बंधेगा। और जो कुछ तुम पृथ्वी पर खोलोगे, वह स्वर्ग में खुलेगा। मैं तुम से फिर कहता हूँ, यदि तुम में से दो जन पृथ्वी पर किसी विनती के लिए एकमत हों, तो वह मेरे स्वर्गीय पिता की ओर से उनके लिए पूरी हो जाएगी। क्योंकि जहाँ दो या तीन मेरे नाम में एकत्रित होते हैं, वहाँ मैं उनके बीच में हूँ।"*

(h) ***1 कुरिन्थियों 10 : 15,*** *मैं तुम्हे बुद्धिमान समझकर कहता हूँ : जो कुछ मैं तुमसे कहता हूँ उसे परखो।* ***1 पतरस 4 : 11,*** *जो भी उपदेश दे, वह ऐसे दे मानो परमेश्वर ही का वचन देता हो। जो सेवा करे, उस सामर्थ्य से करे जो परमेश्वर देता है, जिस से सब बातों में यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर की महिमा हो। महिमा और अधिकार युगानुयुग उसी का है। आमीन।* ***रोमियों 16 : 17-18,*** *अब हे भाइयो मैं तुमसे बिनती करता हूँ कि उस शिक्षा के विपरीत जो तुमने पाई है, उसमें जो लोग फूट और रुकावट डालते हैं, उन्हें ताड़ लिया करो और उनसे दूर रहो। क्योंकि ये मनुष्य हमारे प्रभु यीशु मसीह के नहीं, परन्तु अपने पेट के दास हैं; और अपनी चिकनी-चुपड़ी बातों से सीधे-सादे लोगों को बहका देते हैं।*

(i) ***कुलुस्सियों 4 : 17,*** *अर्खिप्पुस से कहना, "जो सेवा प्रभु में तुझे सौंपी गई है उसे सावधानी से पूरी कर।"* ***मत्ती 18 : 17-20,*** *यदि वह उनकी भी न सुने तो कलीसिया से कह। यदि वह कलीसिया की भी न सुने तो वह तेरे लिए अन्यजाति और कर वसूल करने वाले के समान ठहरें। मैं तुम से कहता हूँ, जो कुछ तुम पृथ्वी पर बांधोगे, वह स्वर्ग में बंधेगा। और जो कुछ तुम पृथ्वी पर खोलोगे, वह स्वर्ग में खुलेगा। मैं तुम से फिर कहता हूँ, यदि तुम में से दो जन पृथ्वी पर किसी विनती के लिए एकमत हों, तो वह मेरे स्वर्गीय पिता की ओर से उनके लिए पूरी हो जाएगी। क्योंकि जहाँ दो या तीन मेरे नाम में एकत्रित होते हैं, वहाँ मैं उनके बीच में हूँ।";* ***1 यूहन्ना 4 : 1,*** *प्रियो, प्रत्येक आत्मा की प्रतीति न करो, परन्तु आत्माओं को परखो कि वे परमेश्वर की ओर से हैं या नहीं; क्योंकि संसार में अनेक झूठे नबी निकल पड़े हैं।*

हम निम्नलिखित गलत शिक्षाओं का इनकार और खण्डन करते हैं जो पवित्र शास्त्र के अनुसार नहीं है।

1. रोमन कत्तोलिक चर्च के लोग कहते हैं कि उनकी कलीसीया ही सच्ची है। दूसरों कलीसियाएँ नहीं है। इस सच्ची कलीसिया पोप के अधिन में है। इस कलीसिया में ही उद्धार है। भले और बुरे लोगों जो अपने आपको पोप के अधिन कर देते हैं उनको ही अनन्त जीवन मिलता है। *2 थेसलोनिकियो 2 : 8-10; रोमियों 12 : 5; 1 कुरिन्थियों 12 : 27; इब्रानियों 3 : 6; इफिस्सियों 2 : 19-22; 1 पतरस 2 : 5; मत्ती 23 : 8.*

2. क्वाकर्स कहते है कि दिव्य प्रकाशन के द्वारा संगठित लोगों का समूह ही कलीसिया कहलाता है। वे कोई भी क्यों ना हो। *भजन संहिता 147 : 20; प्रेरितों के काम 5 : 12; यूहन्ना 14 : 6; 1 कुरिन्थियों 12 : 3.*

3. मर्मन्स मानते हैं कि सिर्फ उनकि कलीसिया ही अन्त का दिन का प्रभु यीशु मसीह की सही कलीसिया है। जो कोई भी इस कलीसिया सामिल नहीं है। वे सब के सब अन्य-जाति के है। *प्रकाशितवाक्य 2 : 9 [गलातियों 6 : 16]*

4. रोमन कत्तोलिक चर्च, एपिस्कोपालियन्स चर्च, ईस्टर्न आर्थोडाक्स चर्च तथा कत्तोलिक्स अप्पोस्टोलिक चर्च मानते हैं कि प्रेरितों के बिना कलीसिया गठन नहीं कर सक्ते हैं। *2 तीमुथियुस 2 : 19; 1 कुरिन्थियों 10 : 17; 1 पतरस 2 : 5; मत्ती 23 : 8.*

5. केलविनिस्टिक चर्चस, मेन्नोनिटस, मेत्तोडिस्टस और आर्मीनियन्स इन सब कलिसियाओं के लोगों का कहना है कि परमेश्वर का वचन और पवित्र संस्कारों ही सही कलीसिया का निशान और चिन्ह नहीं है। *मत्ती 28 : 19-20; 1 कुरिन्थियों 10 : 17; मरकुस 16 : 15-16; यशायाह 55 : 10-11.*

6. मेन्नोनिटस, मेत्तोडिस्टस एवं ईवान्जलिकल यूनाईटड ब्रेत्रन के विश्वास है कि दृश्य कलीसिया में कोई कुट-कपट और बुराईयाँ नहीं है। *मत्ती 25 : 1-2 और 13 : 24-26; मत्ती 13 : 47-48 और 2 : 10-14; प्रेरितों के काम 20 : 29-30.*

7. रोमन कत्तोलिक चर्च लोग कहते हैं कि उनका कलीसिया कभी भी गलत नहीं हो सकती। *2 तिमुथियूस 2 : 19, यूहन्ना 8 : 31-32.*

8. सेकर्स कहते हैं कि सच्चा कलीसिया अब दुनिया में नहीं है उसकी विनाश हो चूका है। *भजन संहिता 46 : 5-6; मत्ती 28 : 19-20, 16 : 18, 24 : 14; लूका 21 : 24.*

9. इर्विनजिट्टस, मर्मन्स, सेवन्त डे अडवन्टिस्टिस, क्रिस्टियन्स रोमन कत्तोलिक चर्च कहते हैं कि पवित्र आत्मा का अद्‌भुत्‌ बरदान आखिर दिनों के लिए सुरक्षित रखा गया है। होलीनस चर्चस, [पेन्टगोस्टलस एवं क्रिस्टमेटिक मूव्मेंट] इन सब कलीसियाएँ भी ऐसे ही कहते हैं। *व्यवस्थाविवरण 13 : 13; मत्ती 24 : 24; 2 कुरिन्थियों 2 : 12.*

10. केलविनिस्टिक चर्चस, बेपटिस्टस, मेत्तोडिस्टस, प्रेसबैटेरियन्स, कांग्रिगेश्नल क्रिस्टियन्स, आर्मीनियन्स, मोरावियन्स, ईवान्जलिकल कांग्रिगेशनल, केम्पबेल्लिट्टस, यूनिटेरियन्स तथा क्रिस्टियन्स रोमन कत्तोलिक चर्च के लोग मानते हैं कि हर एक कलीसियाएँ एक संगति में आ सकते है, परन्तु उनका शिक्षाओं और सिद्धांतों में फरक्‌ होने के कारण उन सब कलीसियाओं में समानता लाना सम्भव नहीं है। *इफिसियों 4 : 3-5; गलातियों 5 : 9; रोमियों 16 : 17; तीतुस 3 : 10-11; 2 यूहन्ना 1 : 10-11; 1 किरिन्थियों 10 : 21; 1 राजा 18 : 21; 1 यूहन्ना 4 : 1.*

XXIII. सेवकाई के बारे में
[OF THE MINISTRY]

हम निम्नलिखत शिक्षाओं का विश्वास करते है जो पवित्र शास्त्र के अनुसार है।

(A) हम विश्वास करते है कि सेवकाई का पद एक दैविक पदाभिषेक है वह यह है कि मसीही लोग जो एक निर्धिष्ट जगा में निवाश करते है वे सब मिलझुल कर प्रभु परमेश्वर का संदेश का प्रचार करते है। केवल व्यक्तिगत रीति से सिर्फ परिवारों में ही नहीं, परन्तु सामुहिक रीति से गावों में और सहरों भी। उसके बाद वे हमारे प्रभु यीशु मसीह के आज्ञा के अनुसार पवित्र संस्कारों का स्थापन करते है। (B) सेवकाई का पद का अधिकार अन्य कुछ विषय पर नहीं परन्तु केवल परमेश्वर के वचन अर्थात्‌ पवित्र शास्त्र बाइबल के उपर ही आधारित है। जब कोई भी सेवक सच्चा परमेश्वर का वचन का प्रचार करता है, तो उसका हर मसीही विश्वासी सुने, माने और आज्ञाकारी बने। वे हर जगा और हर समय परमेश्वर का वचन का आदर करें। लेकिन दूसरी पक्ष में यदि कोई भी सेवक परमेश्वर का वचन के विपरित कुछ भी कहे या प्रचार करे तो हर मसीही उसका सुनना नहीं और आज्ञाकरी बनना नहीं चाहिए। वे हमेशा हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु का आज्ञाकारी बने रहना उचित है।

*(a) **प्रेरितों के काम 14 : 23**, फिर उन्होंने प्रत्येक कलीसिया में प्राचीन नियुक्त कर के उपवास सहित प्रार्थना की, और उन्हें प्रभु के हाथों में सौंप दिया जिस पर उन्होंने विश्वास किया था। **2 तीमुथियुस 2 : 2**, और जो बातें तू ने बहुत से गवाहों के समक्ष मुझ से सुनी हैं, उन्हें ऐसे विश्वासयोग्य मनुष्यों को सौंप दे जो दूसरों को भी सिखाने के योग्य हों। **इफिसियों 4 : 11**, उसने कुछ को प्रेरित, कुछ को भविष्यद्वक्ता, कुछ को सुसमाचार-प्रचारक, कुछ को पास्टर और कुछ को शिक्षक नियुक्त करके दे दिया।*

*(b) **1 पतरस 4 : 11**, जो भी उपदेश दे, वह ऐसे दे मानो परमेश्वर ही का वचन देता हो। जो सेवा करे, उस सामर्थ्य से करे जो परमेश्वर देता है, जिस से सब बातों में यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर की महिमा हो। महिमा और अधिकार युगानुयुग उसी का है। आमीन। **तीतुस 1 : 14**, और यहूदियों की कल्पित-कथाओं तथा उन लोगों के आदेशों पर ध्यान न दें जो सत्य से भटक जाते हैं। **इब्रानियों 13 : 17**, अपने अगुवों की आज्ञा मानों और उनके अधीन रहो, क्योंकि वे तुम्हारे प्राणों की यह जानकर चौकसी करते हैं, कि उन्हें उसका लेखा देना है। उन्हें यह कार्य आनन्द के साथ करने दो न कि आहें भरते हुए, क्योंकि इस से तुम्हें कोई लाभ न होगा। लूका 10 : 16; मत्ती 18 : 17-20; युहन्ना 20 : 22-23.*

हम निम्नलिखित गलत शिक्षाओं का इनकार और खण्डन करते हैं जो पवित्र शास्त्र के अनुसार नहीं है।

1. क्वाकर्स मानते हैं कि सेवकाई के पद का स्थापना परमेश्वर ने नहीं की है। *इफिसियों 4 : 11; प्रेरितों के काम 20 : 28; 1 कुरिन्थियों 4 : 1 और तीतुस 1 : 5.*

2. रोमन क्तोलिक चर्च, ईस्टर्न आर्थोडाक्स चर्च तथा एपिस्कोपालियन्स कहते हैं कि प्रभु यीशु मसीह सेवकाई का पद कलीसिया को सामुहिक रूप से नहीं दी है परन्तु प्रेरीतों और बिशपों जैसे कुछ लोगों को व्यक्तिगत रीति दी है। *मत्ती 18 : 17-20, 16 : 15-19, 28 : 19-20; यूहन्ना 20 : 22-23; 1 पतरस 2 : 5-9.*

3. केलविनिस्टिक चर्चस, प्रेसबैटेरियन्स, मेत्तोडिस्टस, ईवान्जलिकल यूनाईटड ब्रीत्रन एंव ईवान्जलिकल कांग्रिगेशनल इर्विनजिट्टस कहते हैं कि सेवकाई के पद को संपूर्ण कलीसिया को सामुहिक रूप से नहीं दिया गया है, परन्तु कुछ व्यक्तिओं को ही व्यक्तिगत रूप से दिया गया है। *1 कुरिन्थियों 3 : 21-23; 2 कुरिन्थियों 4 : 5; भजन संहिता 68 : 11; 1 कुरिन्थियों 4 : 1; 1 पतरस 2 : 9, 5 : 20.*

4. क्वाकर्स, यूनिटेरियन्स, स्प्रिटिस्टस, सम केलविनिस्टिक चर्चस, मेत्तोडिस्टस, ईवान्जलिकल यूनाईटड ब्रीत्रन और ईवान्जलिकल कांग्रिगेशनल इर्विनजिट्टस कहते हैं कि कोई भी व्यक्ति साधारण रूप से कलीसिया में शिक्षा दे सकता है, चाहे उसको कोई भी बुलाए नहीं तो भी। *याकूब 3 : 1; यिर्मयाह 23 : 21; रोमियों 10 : 15; 1 कुरिन्थियों 12 : 29; इब्रानियों 5 : 4.*

5. इर्विनजिट्टस, क्वाकर्स और मेत्तोडिस्टस कहते हैं कि कलीसिया के बिना सुझाब से भी परमेश्वर अपना सेवक् को अचानक कभी भी सेवकाई के लिए बुला सकता है। *1 तीमुथियुस 3 : 2; 2 तीमुथियुस 2 : 2; तीतुस 1 : 5.*

6. रोमन कत्तोलिक चर्च, ईस्टर्न आर्थोडाक्स चर्च, मेत्तोडिस्टस, ईवान्जलिकल यूनाईटड ब्रीत्रन, ईवान्जलिकल कांग्रिगेशनल चर्च एवं मोरावियन्स का विश्वास करते हैं कि सेवक पद के लिए बुलाहट एक अच्छा मौका है लेकिन सामुहिक रूप से कलीसिया के लिए नहीं, परन्तु केवल उन आत्मिक आगुओं के लिए है जो कलीसिया की आगवाई करते है। बिशपों, प्रेरितों तथा प्राचीनों इस श्रेणी के लोग है। *मत्ती 18 : 17-20; यूहन्ना 20 : 22-23; 1 कुरिन्थियों 3 : 21-23; 2 कुरिन्थियों 4 : 5; 1 पतरस 2 : 9, 5 : 2-3.*

7. रोमन कत्तोलिक चर्च और ईस्टर्न आर्थोडाक्स चर्च के लोग कहते हैं कि याजक (फादर) का पदाभिषेक प्रभु यीशु के द्वारा और पवित्र आत्मा की सामर्थ से स्थापना किया गया है। इस पदाभिषेक एक पवित्र संस्कार के रूप से गिना जाता है जो प्रभु की अनुग्रह से स्थापन किया गया है।

8. रोमन कत्तोलिक चर्च, ईस्टर्न आर्थोडाक्स चर्च तथा एपिस्कोपालियन्स कहते हैं कि विशप के द्वारा अभिषेक किया जानेवाले सेवकों ही सचमुच और सच्चा सेवकों है। इर्विनजिट्टस नामक कलीसिया के लोग कहते है कि भबिषयद्वक्ताओं के द्वारा और प्रेरीतों के द्वारा अभिषेक किया गया सेवकों ही सच्चा सेवकों कहलाया जाते हैं। मर्मन्स नामक कलीसिया के लोग कहते है कि प्राचीनों के द्वारा अभिषेक करके चुना गया सेवकों ही सच्चा और बुलाए हुआ सेवकों है। *मत्ती 18 : 17-20; प्रेरितों के काम 1 : 15-26, 6 : 1-6.*

9. क्वाकर्स, ईवान्जलिकल यूनाईटड ब्रीत्रन, सालवेशन आर्मि और केलविनिस्टिक चर्चस विश्वास करते हैं कि महीलाएँ भी कलीसियाओं में सेविकाओं रूप में प्रचार कर सकती है और शिक्षा भी दे सकती है। *1 किरिन्थियों 14 : 34; 1 तीमुथियुस 2 : 11-12.*

10. रोमन कत्तोलिक चर्च, ईस्टर्न आर्थोडाक्स चर्च, एपिस्कोपालियन्स, प्रेसबैटेरियन्स तथा इर्विनजिट्टस का कहते हैं कि कलीसियाओं में भिन्न-भिन्न पदों का और अधिकारों का स्थापना मनुष्य के द्वारा नहीं परन्तु स्वयं परमेश्वर के द्वारा ही किया गया है। *1 पतरस 5 : 1; 1 किरिन्थियों 3 : 5; यूहन्ना 13 : 13-14; मत्ती 23 : 8-10;* (सुसमाचार की सेवापद ही कलीसिया की प्रधान पद है जीस से सारे अन्य पदों का आना हुआ है। प्रभु यीशु ने पदों का बड़ा और छोटा का रूप नहीं दी है परन्तु सारे पदों का स्वामी वह ही है। कलीसिया की सब पदों और अधिकारों आपश में भाई भाई के जैसे होना चाहिए। *मत्ती 23 : 8-10.*

11. रोमन कत्तोलिक चर्च, ईस्टर्न आर्थोडाक्स चर्च, इर्विनजिट्टस और मर्मन्स कहते हैं कि कलीसिया की समस्त विश्वासीयों नहीं परन्तु अभिषेक किया गया लोग ही वास्तव में याजकों और सेवकों है। *1 पतरस 2 : 9; प्रकाशितवाक्य 1 : 5-6, 5-10; 1 किरिन्थियों 3 : 5. (बाइबल के शिक्षा के अनुसार हर विश्वासी सेवक है। अर्थात् राजकीय याजक वर्ग इब्रानियों 7 : 17-18; 1 तीमुथियुस 2 : 5; इब्रानियों 4 : 16; 1 पतरस 2 : 9.*

12. रोमन कत्तोलिक चर्च और ईस्टर्न आर्थोडाक्स चर्च कहते हैं कि केवल याजक ही लोगों का पापों का क्षमा कर सकता है। क्योंकि इस अधिकार मसीह श्वयं उसको दिया है।

13. केलविनिस्टिक चर्चस, एपिस्कोपालियन्स, इर्विनजिट्टस, यूनिटेरियन्स एवं फ्री प्रोटेस्टन्टस कहते हैं कि वचन के सेवकों वास्तविक और सचमुच में पापों का क्षमा नहीं कर सकते हैं लेकिन पापोमोचन अंगीकार दे सकते है। *मरकुस 2 : 7-10; मत्ती 9 : 8; यूहन्ना 20 : 22-23; 1 कुरिन्थियों 3 : 21-23; 2 कुरिन्थियों 4 : 5.*

14. रोमन कत्तोलिक चर्च और ईस्टर्न आर्थोडाक्स चर्च कहते हैं कि व्यक्तिगत गुप्त पाप स्वीकार करना (याजक के सामने) परमेश्वर का आज्ञा है और इस काम पवित्र संस्कार पश्चताभ का एक अंश है। *यूहन्ना 20 : 22-23; मत्ती 9 : 2; 2 शामुएल 12 : 13; (बाइबल के अनुसार व्यक्तिगत गुप्त पाप स्वीकार परमेश्वर का आदेश नहीं है केवल मनुष्य के द्वारा स्थापन किया गया विधि है।)*

15. केलविनिस्टिक चर्चस कहते हैं कि याजक के शामने व्यक्तिगत और गुप्त रूप से पाप स्वीकार करने का विधि को खण्डन और इनकार करना उचित है। *2 शामुयेल 12 : 13; याकूब 5 : 16.*

16. रोमन कत्तोलिक चर्च कहते हैं कि व्यक्तिगत रूप में पापों का अंगिकार करते समय पापी अपने किए हुए सारे पापों को क्रम से एक के वाद एक करके याजक से बोलना चाहिए, ताकि याजक जो यहाँ न्यायाधिश का काम करता है, वह निर्णय कर सके कि कौन-कौन सी पाप किस प्रकार कि है। *(भजन संहिता 19 : 12; मत्ती 6 : 12; प्रकाशित वाक्य 1 : 5-6; 1 तीमुथियुस 2 : 5)* (चूने हुए और अभिषेक किए हुए वचन की सेवकों का काम शिर्फ वचन को सच्चाई से प्रचार करना है। और परमेश्वर के आज्ञा के अनुसार पवित्र संस्कारों का पालन करवाना है। एक सेवक कभी भी एक न्यायाधीश बन नहीं सकता कि एक पापी का पाप क्षमा कर सके। पापी लोग अपने भले कामों से बचाया जा नहीं सकते, परन्तु वे केवल अनुग्रह के द्वारा तथा प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने से बचाया जाते है।)

17. रोमन कत्तोलिक चर्च, ईस्टर्न आर्थोडाक्स चर्च, एपिस्कोपालियन्स, प्रेसबैटेरियन्स, मेत्तोडिस्टस, ईवान्जलिकल यूनाईटड ब्रीत्रन तथा ईवान्जलिकल कांग्रिगेशनल मानते हैं कि कलीसिया का अधिकार सामुहिक रीति से समस्त मण्डली को नहीं दिया गया है, परन्तु जो लोक कलीसिया का आत्मिक अगवाई करते है उनको ही दिया गया है। *मत्ती 18 : 15-20; 1 तीमुथियूस 5 : 20; 1 कुरिन्थियों 5 : 11-13; 2 कुरिन्थियों 2 : 6-8.*

18. पास्टर एक नौकर है करके रोमन कत्तोलिक चर्च और केलविनिस्टिक चर्चस कहते है। *तीतुस 2 : 15; इब्रानियों 13 : 7, 17.*

XXIV. मसीह-विरोधी के बारे में [OF THE ANTICHRIST]

हम निम्नलिखत शिक्षाओं का विश्वास करते है जो पवित्र शास्त्र के अनुसार है।

(A) हम विश्वास करते है कि मुख्य खिष्टारी याजक पोप की अनुसासन में होगा क्योंकि मुख्य खिष्टारी के अनुसासन के बारे में हम पवित्र शास्त्र में जब अध्ययन करते है तो विशेष करके (2 थेसलेनिकियों 2 अध्याय से) तब पोप याजक की अनुसासन से मिलता है। कारण हम देखते है कि पोप याजक आज कि संसार में जमीन पर प्रभु यीशु मसीह का नाम से उनका प्रतिनिधि के रूप में उभार रहा है। लेकिन वह शैतान की गलत शिक्षाओं का जाल में फसकर लोगों को (बड़ी भीडक को) परमेश्वर का पवित्र शास्त्र की वचन से और हमारे प्रभु यीशु मसीह की शिक्षा से दूरसदूस लेते चाल जा रहा है।

और धीरे धीरे प्रभु यीशु का नाम उच्चा उठाने के बजाय वह अपना नाम को उठाता है। तथा अपना ही नाम का स्थापन में लगा हुआ है। परमेश्वर का सत्य वचन का शिक्षा देने कि बजाय वह आपना ही वचन के अनुसार और मनुष्य अपना भले और अच्छे कामों से उद्धार पाता है, करके शिक्षा देता है, जो वचन के विरुध है। इस प्रकार वह संसार का बहुत बड़ी झुण्ड की रूप में बहुत सारे लोगों को विनाश कि मार्ग कि और ले चाला जाता है। कलीसिया को अपने वश में करके हर प्रकार का कार्यक्रम चलाता है। पवित्र संस्कारों का पालन करवा कर गलत तरीका से झुटी सामर्थ, चिन्हों और चमत्कारों का दाबा करता है। (B) जब हम ध्यान से बाइबल का अध्ययन करते तो मालुम पड़ता है, पवित्र शास्त्र में मुख्य बड़ा मसीह विरोधि ख्रिष्टारी का लक्षण धीरे-धीरे पोप याजक और उनका संगठन में पूरा होता हुआ मालूम होता है।

(a & b) ***2 थिस्सलुनीकियों 2,*** *हे भाइयो, अब हम तुमसे अपने यीशु मसीह के आगमन और उसके पास अपने एकत्र होने के सम्बन्ध में निवेदन करते हैं, कि तुम किसी आत्मा, वचन या ऐसे पत्र के द्वारा जो मानो हमारी ओर से यह प्रकट करता हो कि प्रभु का दिन आ गया है, अपने मन में विचलित न होना, और न घबराना। कोई तुम्हें किसी भी तरह धोखा न देने पाए, क्योंकि वह दिन उस समय तक न आएगा जब तक कि पहिले धर्म का परित्याग ने हो और पाप-पुरुष अर्थात् विनाश का पुत्र प्रकट न हो जाए, जो तथाकथित ईश्वर या पूज्य कहलाने वाली प्रयेक वस्तु का विरोध करता और अपने आप को उन सब से ऊँचा ठहराता है, यहाँ तक कि वह परमेश्वर के मन्दिर में बैठकर स्वयं को ईश्वर प्रदर्शित करता है। क्या तुम्हें स्मरण नहीं कि जब मैं तुम्हारे साथ था, तब ये बातें तुम्हें बताया करता था? तुम तो जानते हो कि अपने ही समय में प्रकट होने के लिए अभी उसे क्या रोके हुए है। क्योंकि अधर्म का रहस्य अभी भी कार्यशील है, और जब तक रोकने वाला हटा न दिया जाए तब तक वह उसे रोके रहेगा। तब वह अधर्मी प्रकट किया जाएगा जिसे प्रभु अपने मुंह की फूंक से मार डालेगा और अपने आगमन के तेज से भस्म कर देगा। उस अधर्मी का आना नाश होने वालों के लिए, शैतान की गतिविधि के अनुसार सम्पूर्ण सामर्थ्य, चिह्नों, झूठे आश्चर्यकर्मों और दुष्टता के हर धोखे के साथ होगा, क्योंकि उन्होंने सत्य के प्रेम को ग्रहण नहीं किया कि उनका उद्धार हो। इसी कारण परमेश्वर उन पर भरमाने वाले सामर्थ्य को भेजेगा कि वे झुठ की प्रतीति करें, जिससे कि वे सब जिन्होंने सत्य की प्रतीति नहीं की परन्तु दुष्टता में मग्न रहे,*

*दण्ड पाएँ। **1 तीमुथियुस 4 : 2-3,** ऐसा उन झूठे लोगों के पाखण्ड के कारण होगा जिनका विवेक मानो जलते लोहे से दागा गया हो, जो विवाह न करने और भोजन की कुछ वस्तुओं से परे रहने की शिक्षा देंगे, जिन्हें परमेश्वर ने इसलिए बनाया है कि विश्वासी और सत्य को पहिचानने वाले धन्यवाद के साथ खाएँ। **2 पतरस 2 : 19-21,** ये उन्हें स्वतन्त्र करने का वचन देते हैं जबकि स्वयं भ्रष्टता के दास हैं, क्योंकि मनुष्य जिस से हार जाता है, उसी का दास बन जाता है। यदि ये हमारे उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह की पहिचान द्वारा संसार की अशुद्धताओं से बच निकलने के बाद फिर उन में फस कर हार गए, तो उनके लिए पिछली दशा पहिले से भी बुरी हो गई है। उनके लिए उस पवित्र आज्ञा को जानकर जो उन्हें दी गई थी, फिर जाने की अपेक्षा भला होता कि वे धार्मिकता के मार्ग को न जानते। दानियेल 11 अध्याय; प्रकाशित वाक्य 17 : 9-18; प्रकाशित वाक्य 13 : 13; यहूदा 8.*

हम निम्नलिखित गलत शिक्षाओं का इनकार और खण्डन करते हैं जो पवित्र शास्त्र के अनुसार नहीं है।

1. रोमन कत्तोलिक चर्च कहते हैं कि पोप याजक दृश्य कलीसिया की मुख्य है। प्रभु यीशु मसीह का प्रतिनिधि है और सच्चा शिक्षक है। वह कलीसिया की साशक भी है। *इफिसियों 1 : 22-23; कुलुस्सियों 1 : 18; लूका 22 : 25-26; मत्ती 20 : 25-28; 1 पतरस 5 : 2-3; मत्ती 23 : 7-11.*

2. ईस्टर्न आर्थोडाक्स चर्च, एपिस्कोपालियन्स, मेत्तोडिस्टस, ईवान्जलिकल यूनाईटड ब्रीत्रन, मर्मन्स और इर्विनजिट्टस कहते हैं कि कलीसिया की साशन का भार प्रभु यीशु मसीह ने पूरे कलीसिया को नहीं दी है वरन् कुछ व्यक्तियों का हाथ में दी है, जो कलीसिया की आगवाई करते है। *2 कुरिन्थियों 1 : 24; याकुब 4 : 12; प्रेरितों के काम 6 : 6, 15 : 22-23, 21 : 22; 3 यूहन्ना 9.*

3. रोमन कत्तोलिक चर्च कहते हैं कि हर कोई मसीह उनके ही कलीसिया में सामिल निश्चित रूप से होना है, कियोंकि उनकी कलीसिया ही सब कलीसियों की मातृ कलीसिया है जो समस्त विश्वासीयों को शिक्षा देनेवाली भी है। *1 कुरिन्थियों 7 : 23; यूहन्ना 3 : 29-30; 1 पतरस 5 : 2-3; मत्ती 23 : 7-11.*

4. रोमन कत्तोलिक चर्च, ईस्टर्न आर्थोडाक्स चर्च, मेत्तोडिस्टस, ईवान्जलिकल यूनाईटड ब्रीत्रन, ईवान्जलिकल कांग्रिगेशनल चर्च, यूनैटड ब्रीद्रन

इन क्रिस्त चर्चस आप द न्यू जेरुसलेम और सालवेशन आर्मि विश्वास करते हैं कि परमेश्वर का वचन से बाहर भी नया नया कानून बनाने के लिए कलीसिया को संपूर्ण अधिकार है। *2 थिस्सलुनीकियों 2 : 3-4; 1 कुरिन्थियों 7 : 23; याकूब 4 : 12; मत्ती 28 : 19-20; 1 पतरस 5 : 2-3; कुलुस्सियों 1 : 18; यशायाह 8 : 19-20; कुलुस्सियों 2 : 8; गलातियों 1 : 8; मत्ती 15 : 3-9; योहसू 23 : 6; व्यवस्था विवरण 4 : 2.*

5. रोमन कत्तोलिक चर्च, ईस्टर्न आर्थोडाक्स चर्च, एपिस्कोपालियन्स, प्रेसबैटेरियन्स, मेत्तोडिस्टस, ईवान्जलिकल यूनाईटड ब्रीत्रन, ईवान्जलिकल कांग्रिगेशनल, यूनैटड ब्रीद्रन इन क्रिस्त और सालवेशन आर्मि विश्वास करते हैं कि कलीसिया की हर कार्य परमेश्वर का वचन के अनुसार किया जाना चाहिए, जरूरत पड़े तो वचन के बिना भी कीया जा सकता है। *1 कुरिन्थियों 7 : 35; रोमियों 12 : 1; कुलुस्सियों 2 : 16.*

6. रोमन कत्तोलिक चर्च कहते हैं कि केवल पदाभिषेक पाया हुआ सेवक लोग ही कलीसिया की सिद्धान्तों के बारे में आलोचना कर सकते हैं, अपना मत्त व्यक्त कर सकते है और कलीसिया की साशन और अनुसाशन में भाग ले सकते है। साधारण विश्वासीयों नहीं। *1 कुरिन्थियों 2 : 15, 10 : 15; 1 यूहन्ना 4 : 1; मत्ती 7 : 15; प्रेरितों के काम 15 : 22, 21 : 22,17 : 11; रोमियों 14 : 12.*

XXV. कलीसिया तथा राष्ट्र के बारे में [OF THE CHURCH AND STATE]

हम निम्नलिखत शिक्षाओं का विश्वास करते है जो पवित्र शास्त्र के अनुसार है।

(A) हम विश्वास करते है कि कलीसियाको और राष्ट्र को भी परमेश्वर ने ही स्थापना की है। यत्यपि कलीसिया और राष्ट्र को परमेश्वर ने बनाई है, फिर भी वे दोनों मिलकर चला नहीं जा सकते, क्योंकि वे दोनों का लक्ष एक दूसरे से संपूर्ण अलग है। (B) कलीसिया के द्वारा परमेश्वर मनुष्य को पापों से बचाना चाहता है परन्तु राष्ट्र के द्वारा वह चाहता है कि मनुष्य अन्य कामों को प्रेम से करे और शान्ति से रहे। (C) कलीसिया और राष्ट्र का कार्य भी एक दूसरे से संपूर्ण भिन्न है। (D) कलीसिया का मुख्य काम सुसमाचार का प्रचार करना और स्वर्ग राज्य का पृथ्वी पर स्थापना करना है। इस के शिवाय दूसरा कोई भी सामाजिक काम कलीसिया को नहीं करना चाहिए। परन्तु राष्ट्र का काम है राष्ट्र के हित के लिए सामाजिक कानूनों बनाना और उन

कानूनों को अनुसाशन में लागू करना है। राष्ट्र का शान्ति स्थापन करना और दोषि को दण्ड भी देना है।

(a & b) ***मत्ती 22 : 21,*** *उन्होंने उस से कहा, "कैसर के।" तब उसने उनसे कहा, "जो कैसर का है वह कैसर को दो, और जो परमेश्वर का है वह परमेश्वर को दो।* ***1 तीमुथियुस 2 : 2****, विशेष रूप से राजाओं और सब पदाधिकारियों के लिए, जिससे कि हम चैन और शान्ति सहित, पूर्ण भक्ति तथा गम्भीरता के साथ जीवन व्यतीत कर सकें।*

(c & d) ***यूहन्ना 18 : 11*** *और* ***36****, तब यीशु ने पतरस से कहा, "तलवार मियान में रख! जो प्याला पिता ने मुझे दिया, क्या मैं उसे न पीऊँ?" यीशु ने उत्तर दिया, "मेरा राज्य इस संसार का नहीं। यदि मेरा राज्य इस संसार का होता तो मेरे राज-कर्मचारी युद्ध करते कि मैं यहूदियों के हाथ न सौंपा जाता। बात यह है कि मेरा राज्य इस संसार का नहीं।"* ***रोमियों 13 : 4****, क्योंकि वह तेरी भलाई के लिए परमेश्वर का सेवक है। परन्तु यदि तू वह करे जो बुरा है, तो डर, क्योंकि वह तलवार व्यर्थ ही नहीं धारण करता। वह परमेश्वर का सेवक है, जो परमेश्वर के प्रकोप के अनुसार बुराई करने वाले को दण्ड देने वाला है।*

हम निम्नलिखित गलत शिक्षाओं का इनकार और खण्डन करते हैं जो पवित्र शास्त्र के अनुसार नहीं है।

1. रोमन कत्तोलिक चर्च और केलविनिस्टिक चर्चस कहते हैं कि राष्ट्र का अधिकार और सामर्थ कलीसिया की हित्त के लिए होना है और राष्ट्र को परमेश्वर का वचन के अनुसार चलाने के लिए कलीसिया राष्ट्र का साथ देना चाहिए। राष्ट्र और कलीसियों मिलकर शासन करना चाहिए। *रोमियों 13 : 1; 1 तीमुथियुस 2 : 1-3; 1 पतरस 2 : 13-15; मत्ती 17 : 27, 22 : 21.*

2. क्वाकर्स, मेन्नोनिटस, सेकर्स व डंकार्ड कहते हैं कि कोई भी मसीह विश्वासी राष्ट्र के लिए काम करना उचित नहीं है। *मत्ती 22 : 21; रोम. 13 : 1-2.*

3. रिफार्मड्डु प्रेसबैटेरियन्स कहते हैं कि जब राष्ट्र के सम्मिधान (Constitution) पवित्र शास्त्र बाइबल के अनुसार है तो एक मसीही राष्ट्र के लिए सामाजिक काम कर सकता है। *मत्ती 22 : 21; 1 तीमुथियुस 2 : 1-3.*

4. मेन्नोनिटस और क्वाकर्स कहते हैं कि राष्ट्र के सरकार कलीसिया के मदत के बिना युद्ध का घोषण और अन्य लोगों को दण्ड नहीं देना चाहिए क्योंकि

ऐसा करने का राष्ट्र को अधिकार नहीं है। परमेश्वर है ही सब अधिकारों का स्वामी है। इस अधिकार को परमेश्वर ने कलीसिया को दिया है। *रोमियों 13 : 4; उत्पत्ति 9 : 6; मत्ती 26 : 52.*

5. मेन्नोनिटस, सेकर्स, क्वाकर्स, डंकार्ड, चर्चस आप द न्यू जेरुसलेम तथा जेगोवास विटनसस कहते हैं कि मसीह लोक सौनिक के रूप में सरकार का सेवा नहीं करना है। *लूका 3 : 14; मत्ती 8 : 5-7; प्रेरितों के काम 10 : 28.*

6. मेन्नोनिटस, डंकार्डस एवं क्वाकर्स मानते हैं कि एक मसीह कभी भी एक सरकारी शपथ ग्रहण नहीं करना चाहिए। *इब्रानियों 6 : 16; उत्पत्ति 14 : 22-23; यूहन्न 14 : 9; 2 शामुयेल 21 : 7; 2 कुरिन्थियों 1 : 23; फिलिप्पियों 1 : 8.*

XXVI. विवाह के बारे में [OF MARRIAGE]

हम निम्नलिखत शिक्षाओं का विश्वास करते है जो पवित्र शास्त्र के अनुसार है।

(A) हम विश्वास करते है कि विवाह परमेश्वर के द्वार स्थापन किया गया एक पवित्र विधि है जो एक पुरुष के साथ एक स्त्री की जीवन मिला हुआ है। (B) उनका जिन्तगी की विकास और वृधि के लिए सन्तानों का उत्पन्न करें और आनंद से शुखसान्ति से जीवन व्यतीत करें इस उद्धेश्य से परमेश्वर ने विवाह का स्थापना किया है। (D) परमेश्वर ने जिसे जोड़ा उसे दूसरा कोई भी अलग न करें यह परमेश्वर की आज्ञा है। इसलिए मनुष्य शिर्फ व्यभिचार के बिना दूसरा कोई भी कारण से अपना पत्नी का तलक नहीं ले सकता है। (E) तलाक के लिए जब दोनों पक्ष के समत्ति हो तब ही तलाक दी या ली जा सकता है। (F) विवाह की स्थापना जरूर सही रीति और विधियों से होना चाहिए और उसमें पिता-माता तथा बड़ों का आशिषों का होना जरूरी है। (G) विवाह किस के लिए भी मना किया जाना नहीं चाहिए, विशेष करके सेवकों के लिए जो प्रभु यीशु मसीह का सेवा करते है। (H) मसीह लोग विवाह का आधार और सन्मान करना चाहिए कि यह उनके जीवन के लिए लाभदायक हो और परमेश्वर का महिमा का प्रगट हो एवं दूसरों का भी आशिषमय हो।

*(a) **रोमियों 7 : 2,** क्योंकि विवाहिता स्त्री, अपने पति के जीवित रहते, व्यवस्था से बंधी हुई है; परन्तु यदि उसके पति की मृत्यु हो जाए तो वह उस*

*पति से सम्बन्धित व्यवस्था से मुक्त हो जाती है। **उत्पत्ति : 2 : 24,** इस कारण पुरुष अपने माता-पिता को छोड़ कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे एक ही तन बने रहेंगे। **मत्ती 19 : 4-6,** उसने उत्तर दिया, "क्या तुमने नहीं पढ़ा कि सृष्टिकर्ता ने आरम्भ ही से उन्हें नर और नारी बनाया, और कहा, 'इस कारण पुरुष अपने माता पिता से अलग होकर अपनी पत्नी के प्रति आसक्त होगा और वे दोनों एक तन होंगे?' फलतः अब वे दो नहीं, परन्तु एक तन हैं। इसलिए जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे कोई मनुष्य अलग न करे।"*

*(b) **उत्पत्ति 24 : 58**, इस पर उन्होंने रिबका को बुलाकर उस से पूछा, "क्या तू इस पुरुष के साथ जाएगी?" और उसने कहा, "हाँ, मैं जाऊंगी।" **उत्पत्ति 1 : 28,** परमेश्वर ने उन्हें आशिष दी, और उनसे कहा, "फूलो-फलो और पृथ्वी में भर जाओ और उसे अपने वंश में कर लो, और समुद्र की मछलियों तथा आकाश के पक्षियों और पृथ्वी पर चलने-फिरने वाले प्रत्येक जीव-जन्तु पर अधिकार रखो।" **इफिसियों 5 : 33**, अतः तुम में से प्रत्येक अपनी पत्नी से अपने समान प्रेम करे, और पत्नी भी अपने पति का भय माने। **1 कुरिन्थियों 7 : 2-5**, परन्तु व्यभिचार से बचने के लिए प्रत्येक पुरुष की अपनी पत्नी और प्रत्येक स्त्री का अपना पति हो। पति अपनी पत्नी के प्रति और इसी प्रकार पत्नी अपने पति के प्रति कर्तव्य निभाए। पत्नी को अपनी देह पर अधिकार नहीं, पर उसके पति को है; इसी प्रकार पति को अपनी देह पर अधिकार नहीं, पर उसकी पत्नी को है। एक दूसरे को इस अधिकार से वंचित न करो, पर केवल आपसी सहमति से कुछ समय तक के लिए अलग रहो कि प्रार्थना हेतु अवसर मिले, और फिर एक साथ हो जाओ, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे असंयम के कारण शैतान तुम्हारी परीक्षा करे।*

*(c) **मत्ती 5 : 32,** परन्तु मैं तुमसे कहता हूँ कि प्रत्येक जो व्यभिचार को छोड़ अन्य किसी कारण से अपनी पत्नी को तलाक देता है, तो वह उस से व्यभिचार करवाता है। और जो कोई किसी तलाक दी हुई से विवाह करता है, वह व्यभिचार करता है। **मत्ती 19 : 3-6**, फिर कुछ फरीसी उसकी परीक्षा करने के लिए उसके पास आए और कहने लगे, "क्या पुरुष के लिए अपनी पत्नी को किसी भी कारण से तलाक देना उचित है?" उसने उत्तर दिया, "क्या तुमने नहीं पढ़ा कि सृष्टिकर्ता ने आरम्भ ही से उन्हें नर और नारी बनाया, और कहा, 'इस कारण पुरुष अपने माता पिता से अलग होकर अपनी पत्नी के प्रति आसक्त होगा*

*और वे दोनों एक तन होंगे?' फलतः अब वे दो नहीं, परन्तु एक तन हैं। इसलिए जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे कोई मनुष्य अलग न करे।' **रोमियों 7 : 2,** क्योंकि विवाहिता स्त्री, अपने पति के जीवित रहते, व्यवस्था से बंधी हुई है; परन्तु यदि उसके पति की मृत्यु हो जाए तो वह उस पति से सम्बन्धित व्यवस्था से मुक्त हो जाती है।*

(d) ***1 कुरिन्थियों 7 : 15**, यदि अविश्वासी अलग होता है तो उसे अलग होने दो। ऐसी परिस्थिति में कोई भाई या बहु बन्धन में नहीं है, परन्तु परमेश्वर ने हमें मेल-मिलाप के लिए बुलाया है।*

(e) ***उत्पत्ति 24 : 58**, इस पर उन्होंने रिबका को बुलाकर उस से पूछा, "क्या तू इस पुरुष के साथ जाएगी?" और उसने कहा, "हाँ, मैं जाऊंगी।" **इफिसियों 6 : 2-3**, अपने माता-पिता का आदर कर – यह पहली आज्ञा है जिसके साथ प्रतिज्ञा भी है– जिससे कि तेरा भला हो और तू पृथ्वी पर बहुत दिन जीवित रहे।*

(f) ***1 कुरिन्थियों 9 : 5**, क्या हमें यह भी अधिकार नहीं कि एक विश्वासिनी पत्नी को अपने साथ लिए फिरें जैसे कि शेष प्रेरित, प्रभु के भाई और कैसा किया करते हैं?*

(g) ***रोमियों 13 : 13**, हम सीधी चाल चलें जैसे दिन में, न कि रंगरेलियों, पियक्कड़पन, संभोग, कामुकता, झगड़े और ईर्ष्या में। **इफिसियों 5 : 3-4**, जैसा पवित्र लोगों के लिए उचित है, तुम्हारे मध्य न तो व्यभिचार, न किसी प्रकार के असुद्ध काम, न लोभ का नाम तक लिया जाए, और न तो घृणित कार्य, न मूर्खतापूर्ण बातें, न ठट्ठे की बातें जो शोभा नहीं देती हैं पाई जाएँ, वरन् धन्यवाद ही दिया जाए। **फिलिप्पियों 4 : 8**, अतः हे भाइयो, जो जो बातें सत्य हैं, जो जो बातें आदरणीय हैं, जो जो बातें न्यायसंगत हैं, जो जो बातें पवित्र हैं, जो जो बातें मनोहर हैं, जो जो बातें मन भावनी हैं, अर्थात् जो जो उत्तम तथा प्रशंसनीय गुण हैं, उन्हीं का ध्यान किया करो।*

हम निम्नलिखित गलत शिक्षाओं का इनकार और खण्डन करते हैं जो पवित्र शास्त्र के अनुसार नहीं है।

1. रोमन कत्तोलिक चर्च कहते हैं कि विवाह प्रभु यीशु मसीह के द्वारा स्थापित एक संस्कार है और उनका अनुग्रह के द्वारा एक आशिष है। फिर भी

परमेश्वर का सेवाकों को विवाह नहीं करना है क्योंकि ऐसे करने से वे सही तरीका से प्रमुका सेवा नहीं कर सकते। *उत्पत्ति 2 : 18; मत्ती 19 :4; यूहन्ना 2 : 1-11; भजन संहिता 128 अध्याय, 1 तीमुथियुस 5 : 14* (बाइबल के अनुसार विवाह एक संस्कार नहीं है, प्रभु की सेवा करनेवाला सेवक लोगों का विवाह नहीं करना है करके रोमन कैथलिक कलीसिया की साशक पोप ने एक कानून बना कर खिष्टारी का काम कर रहा है। कियोंकि पवित्र शास्त्र में बलाई गई है कि सिर्फ खिष्टारी ही विवाह का विरोध करेगा) *मत्ती 19 : 10-21; 1 तीमुथियुस 4 : 1-5.*

2. मर्मन्स कहते हैं कि विवाह धर्म का एक भाग है, इसलिए इसके बिना पूर्ण उद्धार प्राप्त करना असम्भव है। *1 कुरिन्थियों 7 : 7; 9, 25 और 40.*

3. सेकर्स कहते हैं कि मसीही लोग पुनरुत्थान के संतान होने के कारण वे विवाह नहीं करना चाहिए। *इब्रानियों 13 : 14; इफिसियों 5 : 3-5; 1 कुरिन्थियों 6 : 9-10 और 7 : 2 एवं 9 : 5.*

4. रोमन कत्तोलिक चर्च कहते हैं कि प्रभु का अभिषिक्त सेवकों का निश्चय विवाह नहीं करना चाहिए। *1 तीमुथियुस 3 : 2-4; इब्रानियों 13 : 4; 1 तीमुथियुस 4 : 3; 1 कुरिन्थियों 9 : 5; मत्ती 4 : 7.*

5. मर्मन्स कहते हैं कि पवित्रशास्त्र में विवाह का मना तो नहीं किया गया है, परन्तु बाद में आज्ञा दी गई है। *मत्ती 19 : 4-6.*

6. रोमन कत्तोलिक चर्च कहते हैं कि कानून कि हिसाब से विवाह में पिता-माता का सुझाब का कोई जरूरत नहीं है। *निर्गमन 20 : 12; कुलुसियों 3 : 20; निर्गमन 22 : 16; गिनती 30 : 4-6.*

7. रोमन कत्तोलिक चर्च कहते हैं कि पवित्रशास्त्र की विवाह के बारे में आज्ञाओं को बदल ने के लिए और सुधार के लिए कलीसिया की अधिकार है। *याकुब 4 : 12; 1 कुरिन्तियों 7 : 23; मत्ती 22 : 13, 5 : 3-9; व्यवस्थाविवरण 4 : 2; योहशु 23 : 6.*

8. रोमन कत्तोलिक चर्च कहते हैं कि कोई भी कारण से तलाक दिया नहीं जा सकता और दूसरा विवाह करना बहुत बड़ा पाप है। मत्ती 5 : 32; 1 कुरिन्थियों 7 : 10, 11 और 15.

XXVII. मृतोकों की पुनरुत्थान के बारे में [OF THE RESURRECTION OF THE DEAD]

हम निम्नलिखत शिक्षाओं का विश्वास करते है जो पवित्र शास्त्र के अनुसार है।

(A) हम विश्वास करते है कि अन्त का दिन में मरेहुएँ सब के सब फिर से जी उठेंगे। मरेहुए लोगों की आत्माएँ अपना अपना देह फिर से धारण करने का समय आ राहा है।

__दानिय्येल 12 : 2,__ और जो मिट्टी में मिल गए हैं, उन में से बहुतेरे जाग उठेंगे, कुछ तो सनातनकाल के जीवन के लिए, और कुछ सदा तक अपमानित और घृणित ठहराए जाने के लिए। __अय्यूब 19 : 25-27__, मुझे तो निश्चय है कि मेरा छुड़ाने वाला जीवित है, और वह अन्त में पृथ्वी पर खड़ा होगा। और अपनी खाल के इस प्रकार नाश हो जाने के बाद भी, मैं उस शरीर में होकर परमेश्वर का दर्शन पाऊँगा। जिसे मैं स्वयं देखूंगा, जिसे मैं अपनी आंखों से देखूंगा, दूसरा ,कोई और नहीं। मेरा हृदय भीतर ही भीतर व्याकुल हो रहा है। __यूहन्ना 11 : 24 एवं 25__, मार्था ने उस से कहा, "मैं जानती हूँ कि अन्तिम दिन में पुनरुत्थान के समय वह जी उठेगा।" यीशु ने उस से कहा, "पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूँ। जो मुझ पर विश्वास करता है यदि मर भी जाए फिर भी जिएगा।

हम निम्नलिखित गलत शिक्षाओं का इनकार और खण्डन करते हैं जो पवित्र शास्त्र के अनुसार नहीं है।

1. रोमन कत्तोलिक चर्च और ग्रीख कत्तोलिक चर्च विश्वास करते हैं कि जीवितों जब मरेहुएँ लोगों के लिए प्रार्थना करते है तो मृतकों को अनन्त विनाश से छुट्कारा मिलजाता है। *लूका 23 : 43, 16 : 22-23; यूहन्ना 3 : 36, 5 : 24; फिलिप्पियों 1 : 23; गलातियों 6 : 8-10; इब्रानियों 9 : 27.*

2. ईस्टर्न आर्थोडाक्स चर्च विश्वास करते हैं कि उद्धार पाए हुए मरे हुए लोगों की आत्माएँ अन्तिम दिन की न्याय से पहले संपूर्ण उद्धार का अनुभव नहीं कर सकते हैं ऐसे ही जो उद्धार नहीं पाया हुएँ मरलेवालों की आत्माएँ अन्तिम दिन कि न्याय से पहले अनन्त विनाश का दण्ड अर्थात् नरक की दण्ड का अनुभव नहीं करेंगे। जीवितों की विनतीओं के द्वारा, दान धर्म के भले कार्य के द्वारा और बिना लहू के चड़ाई गई वलियों के द्वारा मरे हुए लोगों की आत्माओं

को अनन्त नरक की दण्ड से छुट्कारा दिला जा सकता है। *लूका 23 : 43, 2 : 29; उपदेशक 11 : 3; मत्ती 7 : 13-14; नितीवचन 11 : 7.*

3. सेकर्स, स्प्रिटिस्टस और मर्मन्स कहते हैं कि अनन्त विनाश से पहले मृतकों का आत्माओं को बचा जा सकता है। *यूहन्ना 9 : 14; उपदेशक 11 : 3; नितीवचन 11 : 7.*

4. यूनिटेरियन्स कहते हैं कि मृतकों न तो स्वर्ग न नरक जाते है। *इब्रानियों 9 : 27; लूका 16 : 19-31; लूका 23 : 43.*

5. सेवन्त डे अडवन्टिस्टिस मानते हैं कि आत्माएँ हमेशा के लिए अमर रहते है, परन्तु वे न तो स्वर्ग न नरक जा पाते है; वे सब स्मसान घाट में हीं रहते है। *उत्पत्ति 25 : 8; यूहन्ना 17 : 24; प्रकाशित वाक्य 6 : 11; लूका 16 : 19-31; 2 कुरिन्थियों 5 : 6-8.*

6. यूनिवर्शलिष्टस, स्प्रिटिस्टस, क्रिस्टियन साईन्टिस्टस और मार्डनिष्टस मानते हैं कि सब लोग मरने के बाद एक बेहतर संसार के अन्तर प्रवेश करते है। *लूका 16 : 19-31; मत्ती 22 : 31-32, 10 : 28, 25 : 41.*

7. यूनिटेरियन्स, क्वाकर्स, सेकर्स, चर्चस आप द न्यू जेरुसलेम, यूनिवर्शलिष्टस, रसल्लिटस, क्रिस्टियन साईन्टिस्टस और मार्डनिष्टस मानते हैं कि मृतकों का पुनरुत्थान नहीं है। *दानियेल 12 : 2; यूहन्ना 11 : 24-25; मत्ती 22 : 31-32; 1 कुरिन्थियों 15 : 12.*

8. इर्विनजिट्टस, अडवन्टिस्टस, मर्मन्स, रसल्लिटस तथा प्रीमिलीनेरियन्स इन जनरल मानते हैं कि अन्तिम न्याय से पहले एक हजार साल का साशन काल होगी। प्रभु यीशु मसीह के साथ धार्मिक लोग संसार पर एकं हजार साल राज करेंगे। *यूहन्ना 5 : 28-29; 2 थिस्सलुनीकियों 1 : 7; प्रेरितों के काम 17 : 13; प्रकाशित वाक्या 20 : 4.*

XXVIII. न्याय के बारे में [OF THE JUDGMENT]

हम निम्नलिखत शिक्षाओं का विश्वास करते है जो पवित्र शास्त्र के अनुसार है।

(A) हम विश्वास करते हैं कि अंत के दिन में प्रभु यीशु मसीह राजाओं का राजा बनकर प्रत्यक्ष रूप में जीवितों और मृतकों का न्याय करने जमिन पर

आएगा। (B) उन पर विश्वास करनेवालों को वह अनन्त महिमा में प्रवेश कराएगा। (C) उन सब को वह नरक की झील में भेजेगा जो उनका इनकार किये थे और आपना उद्धार कर्त्ता के रूप में उन्हों ग्रहण नहीं किये थे।

*(a) **प्रेरितों के काम 1 : 11,** और कहने लगे, "गलीली पुरुषो, तुम खड़े-खड़े आकाश की ओर क्यों देख रहे हो? यही यीशु जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, वैसे ही फिर आएगा जैसे तुमने उसे स्वर्ग में जाते देखा है।" **प्रेरितों के काम 17 : 31,** क्योंकि उसने एक दिन निश्चित किया है जिसमें, एक मनुष्य के द्वारा जिसको उसने नियुक्त किया है, वह धार्मिकता से संसार का न्याय करेगा; और उसने मृतकों में से उसे जिलाकर इस बात को सब मनुष्यों पर प्रमाणित कर दिया है। **रोमियों 14 : 10,** पर तू अपने भाई को क्यों दोष लगाता है? या तु फिर अपने भाई को क्यों तुच्छ जानता है? क्योंकि हम सब परमेश्वर के न्यायासन के सामने खड़े होंगे।*

*(b & c) **2 कुरिन्थियों 5 : 10,** क्योंकि हम सब को मसीह के न्याय-आसन के समक्ष उपस्थित होना अवश्य है कि प्रत्येक को अपने भले या बुरे कामों का बदला मिले जो उसने देह के द्वारा किए। **मत्ती 25 : 31-46,** "पर जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आएगा और सब स्वर्गदूत उसके साथ आएँगे, तो वह अपने महिमामय सिंहासन पर विराजमान होगा। और सब जातियां उसके सम्मुख एकत्रित की जाएंगी; और वह उन्हें एक दूसरे से अलग करेगा, जैसे चरवाहा भेड़ों को बकरियों से अलग करता है। वह भेड़ों को अपनी दाहिनी ओर, तथा बकरियों को बाईं ओर करेगा। तब राजा अपने दाहिने हाथ वालों से कहेगा, 'हे मेरे पिता के धन्य लोगों, आओ, उस राज्य के अधिकारी बनो जो जगत की उत्पत्ति से पहले तुम्हारे लिए तैयार किया गया है। क्योंकि मैं भूखा था और तुमने मुझे खाने को दिया। मैं प्यासा था और तुम ने मुझे पानी पिलाया। मैं परदेशी था, और तुम ने मुझे अपने घर में ठहराया। मैं नंगाथा, तुम ने मुझे कपड़े पहिनाए; बीमार था, तुम ने मेरी सुधि ली; बन्दीगृह में था, तुम मुझ से मिलने आए।' तब धर्मी उसे उत्तर देंगे, 'प्रभु, हमने तुझे कब भूखा देखा और भोजन कराया, या प्यासा देखा और पानी पिलाया? और हम ने कब तुझे परदेशी देखा और अपने घर में ठहराया या नंगा देखा और कपड़े पहिनाए? हम ने कब तुझे बीमार या बन्दीगृह में देखा और तुझ से मिलने आए?' इस पर राजा उन्हें उत्तर देगा, 'मैं तुमसे सच कहता हूँ कि जो कुछ तुमने मेरे इन छोटे से छोटे भाइयों में से किसी*

भी एक के साथ किया, वह मेरे साथ किया।' "तब वह बाईं ओर वालों से कहेगा, 'हे शापित लोगो, मुझ से दूर होकर उस अनन्त अग्नि में जा पड़ो जो शैतान और उसके दूतों के लिए तैयार की गई है। मैं भूखा था, तुमने मुझे कुछ खाने के नहींदिया; प्यासा था, तुमने मुझे पानी नहीं पिलाया; परदेशी था, तुमने मुझे अपने घर में नहीं ठहराया; नंगा था, तुमने मुझे कपड़े नहीं पहिनाए; बीमार और बन्दीगृह में था, तुम मेरी सधि लेने नहीं आए।' 'इस पर वे उस से पूछेंगे, 'प्रभु, हम ने कब तुझे भूखा या प्यासा, या परदेशी, या नंगा, या बीमार, या बन्दीगृह में देखा, और तेरी सेवा न की?' "तब वह उन्हें उत्तर देगा, 'मैं तुमसे सच कहता हूँ कि जो तुमने इन छोटे से छोटों में से किसी एक के साथ नहीं किया, वह मेरे साथ भी नहीं किया।' ये लोग अनन्त दण्ड भोगेंगे, परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे।'

हम निम्नलिखित गलत शिक्षाओं का इनकार और खण्डन करते हैं जो पवित्र शास्त्र के अनुसार नहीं है।

1. चर्चस आप द न्यू जेरुसलेम, सेकर्स, यूनिटेरियन्स, यूनिवर्शलिष्टस, क्रिस्टियन साईन्टिस्टस और मार्डनिष्टस मानते हैं कि प्रभु यीशु मसीह जीवितों को और मृतकों का न्याय करने को फिर से नहीं आएगा। *1 थिस्सलुनीकियों 5 : 1-3; मत्ती 25 : 31-46.*

2. सेवन्त डे अडवन्टिस्टिस कहते हैं कि सब लोग मसीह का न्याय सिंहाशन के सामने उपस्थित नहीं होंगे। *2 कुरिन्थियों 5 : 10; रोमियों 14 : 10.*

3. अडवन्टिस्टस और रसल्लिटस कहते हैं कि मसीह अपना दुबारा आने का समय पहले से निर्णय कर चुका है। *मत्ती 24 : 36; लूका 21, 34-36; मरकुस 13 : 32; पतरस 3 : 10.*

4. कांग्रिगेश्नल क्रिस्टियन्स, इर्विनजिट्टस, मर्मन्स, अडवन्टिस्टस, रसल्लिटस और फ्रीमिलीनेरियन्स कहते हैं कि अंतिम न्याय की दिन से पहले यीशु मसीह संसार में एक हजार साल की सासन का स्थापन करेगा।

XXIX. अनन्त जीवन और अनन्त विनाश के बारे में [OF ETERNAL LIFE AND ETERNAL DAMNATION]

हम निम्नलिखत शिक्षाओं का विश्वास करते है जो पवित्र शास्त्र के अनुसार है।

(A) हम विश्वास करते हैं कि जब धार्मियों का जीवन स्वर्ग में अनन्तकाल के लिए अशिषमय और सुखमय होगा, ऐसे ही पापीयों का जीवन अनन्त काल के लिए नरक में दुखमय होगा।

*(a) **1 थिस्सलुनीकियों 4 : 16-17**, क्योंकि प्रभु स्वयं ललकार और प्रधान स्वर्गदूत की पुकार और परमेश्वर की तुरही की आवाज़ के साथ स्वर्ग से उतरेगा, और जो मसीह में मर गए हैं, वे पहिले जी उठेंगे। तब हम जो जीवित हैं और बचे रहेंगे उनके साथ हवा में प्रभु से मिलने के लिए बादलों पर उठा लिए जाएंगे। इस प्रकार हम सदैव प्रभु के साथ रहेंगे। प्रकाशित वाक्य 2 : 10; यूहन्ना 14 : 2.*

*(b) **2 थिस्सलुनीकियों 1 : 7-10**, और तुम क्लेश पाने वालों को हमारे साथ उस समय विश्राम दे जब प्रभु यीशु अपने सामर्थी दुतों के साथ, स्वर्ग से धधकती आग में प्रकट होगा, और जो परमेश्वर को नहीं जानते तथा जो हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते, उन्हें वह दण्ड दे। ऐसे लोग उस दिन प्रभु की उपस्थिति तथा उसकी शक्ति के प्रताप से दूर होकर अनन्त विनाश का दण्ड पाएँगे, जब वह अपने पवित्र लोगों में महिमा पाने और उन सब में जिन्होंने विश्वास किया है, आश्चर्य का कारण होने के लिए आएगा–और तुम में भी, क्योंकि तुमने हमारी गवाही पर विश्वास किया।*

हम निम्नलिखित गलत शिक्षाओं का इनकार और खण्डन करते हैं जो पवित्र शास्त्र के अनुसार नहीं है।

1. यूनिटेरियन्स और मार्डनिष्टस मानते हैं कि हर एक मनुष्य स्वर्ग में अनन्त जीवन का अधिकारी होगा। *इब्रानियों 4 : 3, 9 और 11; मरकुस 16 : 16; यूहन्ना 3 : 18 और 36.*

2. यूनिवर्शलिष्टस, यूनिटेरियन्स, सेकर्स, मर्मन्स, स्प्रिटिस्टस, रेश्नलिस्टस, रसल्लिटस, सेवन्त डे अडवन्टिस्टिस और मार्डनिष्टस मानते हैं कि दुष्ट लोग भी अनन्त विनाश का अनुभव नहीं करेंगे। *2 थिस्सलुनीकियों 2 : 7-10; यशायाह 16 : 24; दानियेल 12 : 2; मत्ती 25 : 10, 25 : 41, 5 : 26.*

3. सेवन्त डे अडवन्टिस्टिस कहते हैं कि दुष्ट जन संपूर्ण रूप से विनाश किए जाएँगे। *प्रकाशित वाक्य 14 : 11, 21 : 8; मत्ती 25 : 41; मरकुस 9 : 43-48.*